वर्ष-28 अंक-5 मई-2005 मुल्य-15/-

भोजपुरी माटी

पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद् क मासिक मुख पत्र

मई-दिवस (मजदूर दिवस)

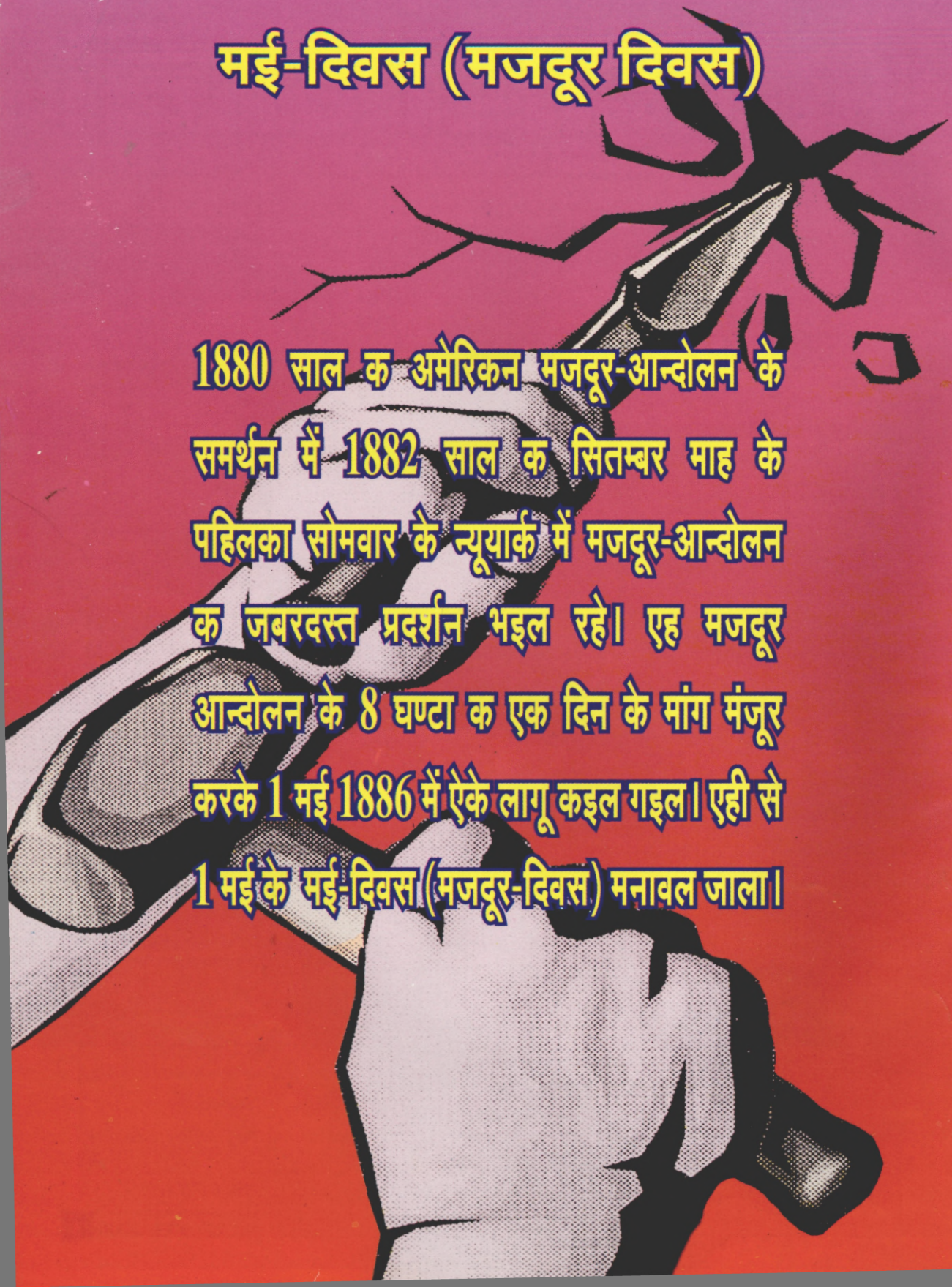

1880 साल क अमेरिकन मजदूर-आन्दोलन के समर्थन में 1882 साल क सितम्बर माह के पहिलका सोमवार के न्यूयार्क में मजदूर-आन्दोलन क जबरदस्त प्रदर्शन भइल रहे। एह मजदूर आन्दोलन के 8 घण्टा क एक दिन के मांग मंजूर करके 1 मई 1886 में ऐके लागू कइल गइल। एही से 1 मई के मई-दिवस (मजदूर-दिवस) मनावल जाला।

वर्ष 28 ❑ अंक 5 ❑ मई 2005

प्रधान सम्पादक :
वीरेन्द्र पाण्डेय

सम्पादक
अनिल ओझा नीरद

प्रबन्ध सम्पादक :
सभाजीत मिश्र

सम्पादकीय एवं व्यवस्थापकीय सम्पर्क :
भोजपुरी माटी
द्वारा पश्चिम वंग भोजपुरी परिषद्
24सी, रवीन्द्र सरणी,
कोलकाता - 700 073
E-mail : bhojpurimati@sify.com
bhojpurimati@epatra.com

देश में

प्रति कापी	: 15 रुपये
वार्षिक शुल्क	: 150 रुपये
त्रय वार्षिक	: 360 रुपये
पंच वार्षिक	: 500 रुपये
आजीवन शुल्क	: 1100 रुपये

विदेश में

प्रति कापी	: US $ 5 (डालर)
वार्षिक शुल्क	: US $ 25 (डालर)
त्रय वार्षिक शुल्क	: US $ 70 (डालर)
पंच वार्षिक शुल्क	: US $ 100 (डालर)
आजीवन	: US $ 500 (डालर)

मुद्रक :
मिश्रा आर्ट प्रेस
24सी रवीन्द्र सरणी,
कोलकाता-73
दूरभाष - (033) 2225-1801
(Mob) 9339747126

भोजपुरी माटी

सामाजिक, साहित्यिक आ सांस्कृतिक जागरण के मासिक पत्र

ई अंक में

1.	राउर चिट्ठी	:	4
2.	सम्पादकीय	:	6
3.	सुख (ललित निबंध)	: आचार्य गणेश दत्त किरण	9
4.	पशुधन के रक्षा आपन रक्षा (आलेख)	: कृष्ण कुमार	12
5.	दू गो गजल	: पाण्डेय कपिल	14
6.	कलंक (कहानी)	: चंद्रवर्ती दूबे	15
7.	भोजपुरी नीर (गीत)	: कृष्ण देव चतुर्वेदी	19
8.	सलाह (गीत)	: गोरख प्रसाद मस्ताना	19
9.	बेटी भइला के दरद (कहानी)	: उपेन्द्र श्रीवास्तव अजनबी	20
10.	धत् तेरी की जय (गीत)	: बावला	23
11.	गीत	: डॉ. राम नारायण तिवारी	24
12.	जोत ना बुताई (गीत)	: भगवती प्रसाद द्विवेदी	24
13.	रेस क घोड़ा (कहानी)	: गिरिजा शंकर राय गिरिजेश	25
14.	कुण्डलिया	: हरिद्वार प्रसाद किसलय	27
15.	अनोखा बदला (लघु कथा)	: जय बहादुर सिंह	28
16.	छपला के उमंग (लघु कथा)	: डॉ.दिनेश प्रसाद शर्मा दिनेश	28
17.	स्वामीहंता जोग (कहानी)	: अंजन जी	29
18.	हर सिंगार हो गइल (गीत)	: गौरी शंकर मिश्र मुक्त	30
19.	कहानी महाभारत क (कथा-पुराण-5)	: वीरेन्द्र पाण्डेय	31
20.	जमीदार समाज के मर्मस्पर्शी कथा (समीक्षा)	: प्रो. रामदेव शुक्ल	38
21.	हो जाला प्यार से (गजल)	: पप्पू मिश्र पुष्प	39
22.	खरबूजा (सेहत-सलाह)	: अर्चना ओझा	39
23.	भिखारी ठाकुर ग्रंथावली के गीत तालछंद	: महेन्द्र सिंह प्रभाकर	40
24.	हमार माई (गीत)	: निर्मला सिंह	42
25.	वास्तुशास्त्र आ फेंगसुई के नौ गो सुनहरा नियम	: संकलित	43
26.	आदमी के (गजल)	: मुफलिस	44
27.	भारत में चाहे भोजपुरी के कौनो स्थान....	: दिमलाला मोहित	45
28.	मेहरारु के बात (व्यंग्य)	: परमानंद गोस्वामी	46
29.	**भोजपुरी हलचल**- १. भास्कर लोक रामायण के लोकार्पण		47
	२. साहित्य साधना संस्थान, दिघार, बलिया		47
30.	तनी हंस लीं (चुटकुला)		48
31.	गइल भंइसिया पानी में (व्यंग्य)	: आलोक मिश्र कपूत	49

राउर चिट्ठी

'भोजपुरी माटी' क हम पाठक हई। अपने बोली में किताब पढ़के बहुते अच्छा लगेला। इहां विलायत में आपन माटी-पानी क परम्परा अउर संस्कृति के पढ़ के देह के रोआं गनगना उठेला। इहवां कहां आपन मतारी बोली सुने के मिली। हम विलायत (लंदन) में करीब 40 साल से ऊपर हो गइल अपने परिवार के साथ रहत हई। 'भोजपुरी माटी' पढ़ के आपन बचपन के इयाद आवे लगेला। अपने देश (हिन्दुस्तान में बनारस) हर दू-तीन साल पर एक महीना बदे हम जरूरे जाइला। आपन मातृभाषा अउर मातृभूमि के केहू के भुलाये के ना चाहीं। घर-दुआर भाई परिवार कुल्हि लोग अबहीं बनारसे शहर अउर गांव में रहत हउअन। गांव में खेतन में जाके ककरी-टमाटर तोड़ के खइले क, छिम्मी (मटर) तोड़ले क, होरहा भूज के खइले क, ऊख तोड़ के चुहले क, कड़हा में क गरम गुड़ अउर खुरचनी क स्वाद, आम भूज के पन्ना पियले क स्वाद इहां कहां मिली। सरसो तेल देहीं में पोत के कुआं पर से गगरा पानी खींच के नहइले क सुख अब कहां भेंटाई। फगुआ में घरे-घरे जाके जोगीरा गाके होली खेले क मस्ती अउर गांव क आपसी प्रेम-व्यवहार अब कहां देखे के मिलत बा। इहां विलायत में हमहन क जिनगी मशीन अस हो गयल बा। पइसा कमाये क हाय-धुन में लोग गांव-देश, आपन परम्परा अउर संस्कृति के भुलात चलल जात बा। पर आप लोग के भगवान बनवलें रहें कि आपन माटी-बोली से पहिचान अउर यादगार एह पत्रिका के जरिए हम सबके करा देत हई। एह माटी में जनम भइले के नाते अपने आप लगाव हो जाला अपना बोली से। हम लंदन में 'भोजपुरी माटी' क अउरो ग्राहक बनावे क बचन देत हई। इहां हमहन के तरफ क जे केहू मिलेला हमेशा इहे कोशिस रहेला कि अपना बोली-भाषा में बतियाईं जा। पत्रिका क कुल्ह रचना बढ़िया लगेला। सी.भी. दूबे जी क संस्मरण त ढेर पसन्द आवऽला। मतारी बोली, परम्परा अउर संस्कृति के बचावे बदे अउर एकरे प्रचार-प्रसार बदे आप लोगन क योगदान बहुते सराहनीय बा। हमार तन-मन-धन से हर तरह के सहयोग आप लोगन के मिलत रही। ई चिट्ठी अपने बोली में लिखे क हमार पहिला प्रयास हव।

– सुरेश कुमार श्रीवास्तव
85 HARBERTON ROAD
LONDON N19 3 JT U.K.

'भोजपुरी माटी' पत्रिका का दिसम्बर अंक (चार-पांच महीना पहले) देखने-पढ़ने को मिला। पत्रिका अच्छी लगी और मैं इसका नियमित पाठक बन गया। पत्रिका का गेट-अप और भीतर की रचनाएं अच्छी लगीं। भविष्य में ऐसी ही पत्रिका छपती रहे इसी कामना के साथ 5400/ रु. का एक ड्राफ्ट (पत्रिका के नये ग्राहकों का पते के साथ) हैदराबाद से बनवाकर भेज रहा हूं। नये ग्राहकों को उनके दिये पते पर पत्रिका भेजने की कृपा करेंगे। भविष्य में हमारा प्रयास जारी रहेगा।

– सी.एन. मिश्र
आर.एस. रोडलाइन्स
14-2-334/2 दारू सलाम
पान मण्डी, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

'भोजपुरी माटी' के अंक लगातार मिल रहल बा, जनवरी छोड़ के। गेट-अप रंगीन भइला के कारण पत्रिका आकर्षक लागत बा। भोजपुरी आ भोजपुरी से अलगा ज्वलन्त विषयं पर सम्पादकीय चिंतनपूर्ण त रहते बा, चिन्ता से भी पूर्ण बा। एने कई अंक में श्री चन्द्रवर्ती दूबे जी के संस्मरण पढ़े के मिलल ह, अच्छा लागल ह। विभिन्न देश के चाल-चलन, एहवार-व्यवहार के पता चलत बा। दूबे जी (सी. भी. दूबे) त आजो सक्रिय बानी, पता चलल। कपिल जी, भावुक जी, कृष्णानंद जी, सुरेश कांटक जी के रचना पढ़े के लगातार मिलला से पत्रिका–रूचि बनल रहत बा। कुछ स्थायी स्तम्भ देके पत्रिका के रूप में निखार आ रहल बा।

– ब्रजभूषण मिश्र
D-3/4, कांटी थर्मल पावर
मुजफ्फरपुर– 843130

मार्च 2005 के 'भोजपुरी माटी' के अंक हमरा हाथ में बा। पढ़लीं, आ अघा गइलीं। काहे कि माई जवना भाषा में अपना लइका-लइकी से बतिआवेले, ओही भाषा के मातृभाषा कहल जाला। एही से जहां केहू के जनम होला, ओह माटी के मातृभूमि कहल जाला। मातृभाषा आ मातृभूमि, संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान पाणिनी, जवन कि लगभग चार से पांच हजार साल पहिले के विद्वान हवे, के समय प्रचलन में रहे। आ ओह घरी पिता का नाम से कम, माता का नाम से ही ज्यादे लोग जानल जात रहे।

राउर पत्रिका, हमरा के अपना माटी से जोड़े के काम करतिया। ओह माटी के हम शत् शत् प्रणाम करतानी, जवना के वजह से हम एकरा काबिल भइनीं कि रउरा के भोजपुरी में अपना जिन्दगी के पहिला पत्र लिखतानी। हम राउर पत्रिका आ श्री पद्म देव ओझा जी के आभारी बानी कि हम एह उमर में अपना माटी से, संस्कार से मातृभाषा से, रीति रिवाज से, समाज से धीरे-धीरे जुड़ रहल बानी, आ जुड़ा रहल बानी। श्री ओझा जी दुर्गापुर इस्पात संयंत्र में जेनेरल मैनेजर के पद के सुशोभित करतानी। उहें का हमार प्रेरणास्रोत हईं।

चूंकि हमनी के पढ़ाई-लिखाई, बातचीत, पत्राचार इत्यादि भोजपुरी में नइखे भइल, एह से भोजपुरी में पढ़ल आ लिखल तनी कठिन काम लागता। शुरू-शुरू में आ अबहियों पढ़े का बेरा, उच्चारण करे में दिक्कत होता। काहे कि हम कभी कवनो पत्र-पत्रिका भोजपुरी में नइखी पढ़ले। आ ना कबहीं भोजपुरी में एको अक्षर लिखले बानी। राउर पत्रिका के प्रेरणा से ही हम आज एह काबिल हो गइल बानी कि कवनो पत्रा बिना पढ़ले ना रहीं। अब ई हाल बा कि जब तक 'भोजपुरी माटी' ना आवेला, त लागेला कि हमार कुछ भुला गइल बा।

मार्च 2005 के 'भोजपुरी माटी' के अंक के 'कोहबर' पर डा. आद्या प्रसाद द्विवेदी के लेख सारगर्भित बा, निमन लागल। श्री अजय कुमार ओझा जी के 'होली' पढ़ि के हमार जवानी याद आ गइल (हमार उम्र पचपन साल हो गइल बा)। शिक्षा के कमी के ऊपर एगो झापड़ बा श्री कृष्णानन्द कृष्ण के 'सुख" कहानी। श्री कनक वर्मा के व्यंग 'सास पतोह के करकरहट' पढ़ के लागत रहे कि ई त 'घर-घर के कहानी' ह। कल-कारखाना के कालोनी में कैसे रहे के चाहीं, एह पर श्री जय बहादुर सिंह के 'पड़ोसी धर्म' लघुकथा से हमनी का शिक्षा लेवे के चाहीं। जब हम श्री चन्द्रवर्ती दूबे के संस्मरण 'ताईवान में जन्मदिन' पढ़त रहीं, त कई बार पढ़ि के निकालल चाहत रहीं कि नग्न लड़की के वक्ष पर हाथ जब उहां का रखनी त ओकरा बाद का भइल। हमरा के कुछ ना मिलल। लागत बा कहीं बात के छुपावल गइल बा, कि मर्यादा के उल्लंघन ना हो। बहुते अच्छा लागल।

समस्त सम्पादक वृन्द के साधुवाद कि अतना सुन्दर, स्वच्छ, सुघर, स्वतंत्र आ सटीक पत्रिका नियमित निकालऽतानी। सम्भव हो सके त, एगो हमार निहोरा बा कि रउरा पत्रिका में स्वास्थ्य, शिक्षा, उद्योग, आई.टी., पर्यटन पर कुछ लेख या विशेषांक प्रकाशित करे पर विचार करब। सामयिक विषय पर लिखला से शायद कुछ अउर पाठकगण आकर्षित होइहें, ई हमार विचार बा। भोजपुरी के इतिहास पर आ कवनो ग्रंथ पर भी लिखे के विचार करब सभे।

– श्याम कुमार सिंह
6/7, जे.एम. सेनगुप्ता रोड
दुर्गापुर – 713205 (प. बंगाल)।

एने अपना एगो पड़ोसी दोस्त से राउर 'भोजपुरी माटी' देखे-पढ़े के मिलल। पढ़ला के बाद मन में उछाह भइल त पाती लिख रहल बानी। ई अंक पूरा पढ़ला के बाद रावां के बधाई देवे से मन के ना रोक सकलीं कि 'भोजपुरी माटी' के भोजपुरी के आउर पत्रिकन से अलग पहचान चिन्हित हो रहल बा। मुख्य धारा से पत्रिका के ले चलतानी – इहे समय के जरूरत बा। रचना से पत्रिका के स्तरीयता के पहचान मिलता।

– मधुकर सिंह
धरहरा, आरा– 802301 (बिहार)

फेर आइल भोजपुरी सिनेमा के बहार, का बा आसार?

बिचार कइल तनी जरूरी बुझाइल ह, आखिर का रंग-ढंग बुझाता, जब एने फेर से भोजपुरी सिनेमा के बाढ़ि आवत लउकि रहल बा। एकर कुछु बिकास होई कि फेर ओसहीं टांय टांय फिस हो जाई, जइसे नाजिर हुसैन साहेब के जमाना के बाद भइल रहे। नाजिर साहेब के समय के भोजपुरी सिनेमा के, अगर स्वर्ण-युग कहल जाय त एह में कवनो अतिसयोक्ति ना कहाई। 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो', 'लागी नाहीं छूटे राम' बगैरह से भोजपुरी सिनेमा के जइसन बिस्फोटक शुरूआत कइले रहले, हमरा बुझाला कि ओह हिसाब से उनुका संगे भा बाद में आवे वाला प्रोड्यूसर, डाइरेक्टर लोग ओह वजन के बरकरार ना रखि पवले आ दिन पर दिन ओकरा स्तर में गिरावट आवत चलि गइल जवना के नतीजा भइल कि भोजपुरी सिनेमा बने के काम एक दम से ठप हो गइल।

एह में दू राय नइखे कि कवनो भाषा के बिकास भा ओकरा प्रचार-प्रसार में, ओह भाषा के जनसम्पर्क के माध्यम वाला ओकर रूप– जइसे नाटक, सिनेमा, गीत, गवनई बड़ा सहायक होला। बाकी ओने जब एकरा एगो सशक्त स्वरूप– सिनेमा- वाली कड़ी टूटि गइल त एमे कवनो दू राय ना कहाई कि कुछ दिन खातिर भारतीय स्तर पर एकर चर्चा नरम पड़ गइल। हालांकि एकर गीत-गवनई वाला स्वरूप बदस्तूर जारी रहे। कुछु दिन बाद तनी एकरो चलन कम भइल। गीत त ना बाकी गवनई जवना का चलते कलकत्ता जइसन महानगर में त हमरा बुझाता कि तकरीबन रोजे एकर चर्चा रहे। कभी फगुवा, कभी चइता, त कभी रामायण के नाम पर गवनई भइल करे आ कभी कभी त दू-गोला तक होखे, जवना के चलते ई भाषा इहां रोजे चर्चा में रहे। फेर इहो ढंग मंदा पड़ल शुरू भइल आ अब तक लगभग बंद हो चलल बा एकर चलन। बाकी तले फेर एकर एगो दोसरका चलन जोर पकड़ि लेले बा। यानी 'गीत' वाला चलन। जब से 'टी सीरीज' एह मैदान में कूदल बा तब से त हर भाषा के गीतन खातिर ई बरदान सिद्ध भइल बा, बाकी हमरा बुझाता कि भोजपुरी एह क्षेत्र में कुल्हिनी ले बीस साबित भइल बिया। एकरा बराबरी में अगर दोसर कवनो भाषा अपना गीतन का संगे होड़ लेत लउकत बा त ऊ पंजाबिये बा अउर कवनो ना। ई अलग बात बा कि कहीं कहीं ऊ अपना नंगई में भोजपुरी से बाजी मारि ले जात बा।

नंगई भोजपुरियो गीतन में कम नइखे आइल, कभी कभी त अइसन अइसन गीत सुने के मिल जाला जवना के रउआ आजु काल्हु के हिन्दी सिनेमा लेखा पूरा परिवार के संगे बइठ के ना सुन सकीं। एह में कवनो दू राय नइखे कि एह गीतन का चलते भोजपुरी बदनाम भइल बिया। लोगन का एह में ओछापन नजर आइल बा। एकरा के लोग गंवारू आ फूहड़ भाषा तक कहे से नइखन चूकल। बाकी एहू में कवनो दू राय नइखे कि एकरो चलते एकरा प्रचारे मिलल बा। तनी गलत मिलल बा ई अलग बात बा। हमरो बुझाता कि अइसन ना होखे के चाहीं, बाकी हो रहल बा, अब का कइल जा सकेला, लोगन के समझावले नू जा सकेला। ना मनला पर फांसी त दीहल नइखे जा सकत, जादा से जादा ओह गीतन के सामाजिक बहिस्कार कइल जा सकेला, बाकी एह गीतन के गावे वाला से कम दोषी एकरा के बहुत चाव से सुने वाला लोग नइखन बाड़े। चलीं इहो मानत बानी कि ऊहे लोग बेसी बा, बाकी जइसे कवनो सिक्का के दूगो पहलू होला ओइसे एकरो दू गो पहलू बा, जहां एक गंदगी के पाले वाला लोगन के बहुतायत बा उहां बढ़िया, सामाजिक, साहित्यिक आ सांस्कृतिक स्वरूपो के गढ़े वाला लोगन के कमी नइखे। इहो सांच बा कि गीत-गायकी के एह दौर में खराब के संगे कुछु नीमनो कैसेट आइल बाड़े स, जवना के चलते भोजपुरी के नाम आ समृद्धि में चार-चांद लागल बा। आ एह में सबसे बेसी स्थान बा– भोजपुरी भजन के कैसेटन के, जवना में आजुकाल्हु पंजाबी आ हिन्दी भजन गायक लोगन के तर्ज पर भोजपुरियो में माता-बैष्णो देवी, बिन्ध्यबासिनी देबी, मइहर वाली मइया, छठि मइया, कामाख्या मइया वगैरह देवी लोगन के गीत बाजार में आइल शुरू भइल, आ शहर

में बिलुप्त होत भोजपुरी संस्कारन के, लोगन के मन में फेर से सुगबुगावे में मददगार साबित भइल, जवना में दूगो नांव बेसी उभर के आइल– मनोज तिवारी आ भरत शर्मा व्यास के। भाई हमरा त एह लोगन के गावल कुछ खास देबी गीतन पर नाज बा, कि भोजपुरी में अतना बढ़िया भजन, बिना कवनो फिल्मी गीतन के धुन के सहारा लिहले, भा दोसरा भाषा के गीतन के नकल कइले, अपना संस्कार गीतन के माध्यम से हमनी का बीच उपस्थित हो पावल बा। लेकिन ई त भइल खाली देबी गीत-भा पचरा के युग, बाकी इहो लोग अभी ले भोजपुरी के साहित्यिक, सांस्कृतिक भा सामाजिक गीतन के गावे के जोखिम नइखे उठवले। कारण एकदम स्पष्ट बा, कैसेट बाजार में बिकाहूं के त चाहीं, पइसो त कमाये के बा। भूखे भजन ना होला ई त हमरो मालूम बा बाकी एकर मतलब इहो ना होखे के चाहीं कि पइसा खातिर आपन अस्तित्व आ आपन संस्कार ताखा पर रखि दीहल जाउ। एह क्षेत्र में हम एगो क्रांतिकारी कदम कहब बाबू मृत्युंजय कुमार सिंह जी. IPS के गायकी के। उहां के अपना बलबूता पर भोजपुरी गायकी के एगो नया तेवर देबे के कोशिश करत नजर आ रहल बानी। कैसेट बिकाउ चाहे मत बिकाउ, पइसा मिलो चाहें मत मिलो, प्रचार होखो चाहे मत होखो, बाकी गीत अतना सधल कि रउआ पूरा परिवार का संगे बइठ के सुनि सकींले। हर गीत में साहित्यिकता, सामाजिकता आ सांस्कृतिक बोध मौजूद बा। फेर प्रचार के त ई हाल बा कि पिछिला एक साल में इहां का अपना गायक-दल के साथ ब्रिटिश-गुयाना आ मारिशश के दौरा कइ अइनी। अगर उहां के गायकी आ गीत चयन के ई तरीका भोजपुरी क्षेत्र में पसंद कइल गइल, त एह में कवनो दू राय नइखे कि भोजपुरी गीत-गायकी के एगो नया तेवर मिली। अश्लीलता से दूर, सामाजिकता के बहुत करीब ई गीत आ उनुकर गायकी भोजपुरी कैसेट युग के एगो नया आयाम दी आ नया इतिहास रची।

खैर हमरा बुझाता कि हम अपना विषय से कुछु भटक गइल बानी। कुछु हद तक। एकदम से ना। भोजपुरी सिनेमा के नया दौर तक पहुंचे के ई कुल्हि एगो कड़ी रहल ह। जइसे हर युग के एगो अंत आ फेर ओकर नया तरह से शुरूआत होला, ठीक ओसहीं जइसे मनोज तिवारी, भरत व्यास, लोगन के बाद बाबू मृत्युंजय कुमार सिंह जी के अभ्युदय भइल बा, कुछ ओइसने आशा भोजपुरी सिनेमा का क्षेत्र में तलाशे खातिर हम एह लोगन के उदाहरण का रूप में लिहनी हं। लीहल एह से जरूरी रहल ह कि आजु के भोजपुरी सिनेमा के दौर में सबसे आगे फेर ऊहे मनोज तिवारी लउकत बाड़े जे कभी एही पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद का मंच से अपना गायकी जीवन के शुरूआत कइले रहले आ आजु अतहत बड़ मकाम पर पहुंच गइल बाड़े। आजु काल्हु गायकी छोड़ि के भोजपुरी फिल्मन के नायक हो गइल बाड़े। धड़ाधड़ उनुकर फिल्म आ रहल बाड़ी स। चलियो रहल बाड़ी स। बहुत अच्छा बात बा ई, कम से कम मनोज तिवारी के सेहत खातिर। बाकी का ई भोजपुरी सिनेमो के सेहत खातिर ठीक बा। अभी थोड़ा सा एह पर बिचार कइल जरूरी बा।

पहिला बात त ई कि मनोज तिवारी मूलत: गायक हवन, एक्टर ना। चाहें जे उनुकर सिनेमा देखले होखे, ओह में से ओह लोगन के बाद क दीहल जाउ, जे खाली उनुका गीतन के दीवाना रहल बा आ एह से उनुकर फिल्म देखे जा रहल बा, आ जरूर देख रहल बा, आ ओकरा नीमनो लागत होई, बाकी जे कला के पारखी बा ऊ ठीक ई समझ रहल बा कि उनुका एक्टिंग करे नइखे आवत। ना त उनुका कवनो एक्शन करे आवत बा, ना डान्स करे, चाहे ऊ उनुका अपने गाना पर काहे ना होखे, आ ना रोमान्स करे। आधुनिक भोजपुरी फिल्म जवना के अभी-अभी दौर शुरू भइल बा, आ जवन अपना असली भोजपुरी धरातल के छोड़ि के भा ओकरे शहरीकरण कइके, हिन्दी फिल्मन के देखादेखी ओइसने एक्शन भा डान्स आ रोमांस उतारल चाहत बा, ओह में खाली चीकन सूरत आ मीठ गायकी का बल पर ऊ बेसी दिन ना टीक पइहें ई त तय बा। अब अपना किस्मत के सहारे चाहे जतना दिन चलि जासु आ पइसा कमा लेसु, बाकी भोजपुरी सिनेमा के नायक का रूप में ई कवनो आपन अमिट छाप छोड़ि पइहें एह में संदेहे ना पूरा बिश्वास बा। ई कवनो मील के पत्थर ना साबित होइहें। त रउआ सोच लीं कि जवना नायके के कवनो भविष्य नइखे ओह फिल्मन के का भविष्य होई। हमरा त डर बा कि कउवा चला हंस

की चाल.... के तर्ज पर चलिके कहीं ई आपन असली रूपवो मत गंवा बइठस। ना नायक बन पावसु, ना गायक रह जासु।

नाजिर हुसैन साहब जब भोजपुरी फिल्म पर काम शुरू कइले रहले, त उनुका मन में हमरा हिसाब से, अपना भाषा आ क्षेत्र का दिसाईं कुछ कर गुजरे के तमन्ना रहे। एगो जोश रहे भोजपुरी जगत के कुछु देबे के, एहसे ऊ जे कुछु कइले होश से कइले, बाकी आजु काल्हु के प्रोड्यूशर-डायरेक्टर भा लेखक लोग में भोजपुरी खातिर कवनो जजबा नइखे लउकत, बस मूल बात बा, हिन्दी के नकल कइल, आधुनिकता के नाम पर आजुवो से जादा से जादा नंगई परोसल आ लोगन के, यानी सस्ता मानसिकता वाला लोगन के जजबात के कुरेद के ढेर से ढेर पइसा कमाइल। दुनों में बड़ा फरक बा। ओह में जुनून रहे, एह में व्यवसाय बा। व्यवसाय बुरा बात ना ह, बाकी ओकर कवनो उद्देश्य त होखे के चाहीं। आ ऊ उद्देश्य खाली पइसा कमाइल त कबो ना होखे के चाहीं। उद्देश्य ई होखे के चाहीं कि पइसा त अइबे करो बाकी हमार व्यवसायो अपना क्षेत्र में मील के पत्थर साबित होखो। जवन आवे वाला भोजपुरी फिल्मकार लोगन में नइखे लउकत।

जे एह क्षेत्र में मील का पत्थर साबित भइल ऊ आजुवो चरचा में बा, नाजीर हुसैन साहब के बात त छोड़िये दीं, ऊ त रहबे कइले उम्दा कलाकार, रामायण तिवारी आ सुजीतो कुमार साहब आपन कुछु छाप छोड़ि के गइले एह क्षेत्र में। लीला मिश्रा, कुमकुम, पद्मा खन्ना, नाज के आजुवो चर्चा बा, बाकी आजुके आवे वाली फिल्मन में कवनो कलाकार आपन अभी ले विशेष छाप छोड़बे ना कइले त चरचा का होखो। आ मनोजो तिवारी के चरचा अगर होता त उनुका ओह मशहूर गायक वाली छबि का चलते, नायक के त उनुकर कवनो छबि अभी ले बनबे नइखे कइल, हं, आगे देखल जाउ ऊ का कइ पावत बाड़े। आ भोजपुरी फिल्म खातिर त कवनो छबि राकेशो पाण्डेय के ना बन पावल आ नाही कुणाले साहब के बन पावल। कुणाल साहब जब पहिला बेर भोजपुरी फिल्म में अइले त लोग उनुका में जितेन्दर के छबि आ हाव-भाव देखे लागल। अब भोजपुरी फिल्म के जितेन्दर बने के चाह में कुणाल साहेब कुछु अइसन बहकले कि ना त जितेन्दरे बन पवले आ ना कुणाले रह पवले। नतीजा ऊहे टांय टांय फिस। बिना कवनो चरचा के उनुको युग समाप्त हो गइल।

कहे के मतलब बा कि खाली रंगीन मिजाज गाना, भोंडा नाच आ गांव में शहरी नंगई परोसे के अगर लोग चाहत बा कि आवे वाला समय में भोजपुरी फिल्मन के बहार युग पैदा क दीं त हमरा एह में भोजपुरी फिल्म के विकास आ स्थायित्व के कवनो आसार फेर नइखे नजर आवत। कुछ कहानी में दम, कुछ गीतन में नयापन आ कुछ यथार्थ आ कल्पना के अइसन मिलल जुलल तस्वीर होखे, जे मनोरंजन त देबे करो बाकी देखे वाला के कुछु सोचहूं पर मजबूर करो। ओकरा ओकर कुछु मतलबो समझ में आओ, ताकी भोजपुरी फिल्मन के एक बेर फेर से आपन जड़ जमावे के सुजोग मिलो आ एकरा विकास के कवनो आसार नजर आओ, ना त फेर पहिलहीं लेखा टांय टांय फिस होत देरी ना लागी। एकर नया जनम हो सकेला। एकरा अकाल मृत्यु के कारण बनि जाउ। एह से हमार निहोरा बा आवे वाला भोजपुरी फिल्म के लेखक, निर्देशक, कलाकार सब केहू से कि अगर फेर से एह राह पर चले के चाहत बानी त भाई हो खूब फूंक फूंक के डेग बढ़वला के जरूरत बा। अबकी पासा ना परे त फेर चउरासी जाई। अबकी डूबी त जाने फेर कब उगी। एह से काम अइसन कइल जाउ कि एकर धरातल अतना मजबूत बनो कि फेर केहू के पीछे मुड़ के देखे के ना परो आ एकर स्वरूप कवनो क्षेत्रीय भा प्रांतीय भाषा से कमजोर मत बनो। अबकी के अइसन नेव धराउ कि एकर गुम्बद आजु के हिन्दियो फिल्म क्षेत्र से बेहतर चमको।

बस एही सलाह का संगे भोजपुरी माटी के मई के अंक रउआ हाथ में संउप रहल बानी। आशा बा, विश्वास बा, पसन परी। आ सबसे बड़ बात कि पहिलहीं लेखा राउर सहयोग आ सुझाव मीलत रही।

— अनिल ओझा 'नीरद'

सुख

❑ आचार्य गणेश दत्त किरण

संसार सुख चाहत बा... दुख से मन उदास बा। सुख सपना के बात बा। दुख के बरसात बा। सुख गूलर के फूल हो गइल। बोवल आग बबूल हो गइल। सुख का तलाश में मन के हरिना भटकत बा... माथा पटकत बा। बाकिर सुख करीब नइखे। हरिना का पानी नसीब नइखे। सुख अंजोर में बा। अन्हार में नइखे। अंजोर खातिर दिया जरावे के परी। राह-बाट में फूल बिछावे के परी। तबे सुख साकार होई जब बिना कपट के बवहार होई। अइसे सुख ना मिली जब तक मन का पोखरा में कमल के फूल ना खिली।

सुख तृष्णा का वृक्ष में लागल फल ह मंदाकिनी के पवित्र जल ह। कठिनाई से प्राप्त होला... आलस आइल कि समाप्त होला। सोचऽ, सुख केकरा बा। राजा, रंक, फकीर सब केहू पीटि रहल बा लकीर। सुख पराइल चलत बा। कवनो कोना-अंतरा में लुकाइल चलत बा। खोजत-खोजत हमहूं थाकि गइलीं। आपन करम भूंजि के फांकि गइलीं। बाकिर सुख के ना मिलल छाया। जे आपन रहे ऊ हो गइल पराया। एक दिन राम से कहलीं। बहुत ब्याकुल रहलीं– "हे राम! हमरा के सुख चाहीं। तोहार महिमा अपार बा। तोहरे से संसार बा। भव का सागर से पार लगावऽ। हमरा दुश्मन के मारि के गिरावऽ। हमरा के अपना नियरा बोलावऽ। उठावऽ, बइठावऽ। हमरा शरीर में बएखरा लागल बा। मन पितपिता गइल बा। असरा के कोंढ़ी मुरझा गइल बा।"

राम भाव में बहे लगलन... अनसा के कहे लगलन– 'कहे के हम ईश्वर के अवतार बानी, बाकिर कतना लाचार बानी। सुख के पहचानत नइखीं... ठीक से जानत नइखीं। जनम दुखे में भइल। जिनिगी तकरार में बीतलि। केहू साथ ना दिहल। सभ चुटकी लिहल। जनम का पनरहवां साल में ताड़का से अझुरइलीं। मुनि का किरपा से जीत गइलीं। ओह राक्षसी के वध कइलीं। नारी हत्या के लागल पाप। मन में उठल घोर संताप। कहां बेटा कहां बाप। सुख ना मिलल। फेनु सीता से कइलीं बियाह। बाकिर कहवां भइल निर्बाह? बीच में आ गइलन परशुराम.... बुझाइल जे होई संग्राम। बात कइसहूं टल गइल। उनुकर इरादा बदलि गइल। घरे अइलीं त माहुर भइलीं। सत्यानाश हो गइल। हमरा वनवास हो गइल। आदमी साथ ना दिहलन। कन्द-मूल पर समय बितवलीं। तू हीं कहऽ कि कतना दुख उठवलीं। सुख हो गइल किनारा तबे नू बानर के लिहलीं सहारा। जिनिगी के गलत व्याकरण हो गइल जब प्राण प्यारी सीता के हरण हो गइल।'

एह संसार में जे देखे में सुखी बा, उहो भीतर से दुखी बा। केहू का पेटे घाव, केहू का पीठी घाव। सहले सहात नइखे। कहले कहात नइखे। हम दुखी बानी, सोचतानी त कारण समुझ में आवत बा। हम एह से दुखी बानी कि हमार पड़ोसी सुखी बा। अब रउरे बताईं, हम सुख के अनुभव कइसे करीं। हमरा घरे बजड़ा के लिट्टी बनत बा त ओकरा घरे बासमती चाउर के भात। ई हमरा से देखि जात नइखे। अगर भगवान हमरो के इहे सुख देले रहितन त हमरा मन के घाव काहें के टभकित?

एक आदमी के कवनो देवता एगो वरदान दे दिहले– तू जवन इच्छा करबऽ तवन पूरा हो जाई। बाकिर जवन तोहरा के मिली ओकरा दोबरी पड़ोसी के मिलि जाई। आदमी खुश हो गइल। पहिले ऊ नौमहला मकान बनवलस। पड़ोसी के मकान रातो रात अठारह तल्ला बन गइल। देखि के ऊ आदमी दुखी भइल। सुख ना मिलल। आदमी चालाक रहे। उल्टा माला फेरे लागल– हे भगवान! हमार नौमहला गिरा द। हमरा के सुखी बना द। नौमहला गिरल त पड़ोसी के मकान भी ध्वस्त हो गइल। आदमी का कुछु सुख भेंटाइल। फेनु वरदान मंगलस– "हे भगवान! हमार एगो आंख फोरि द।" ओकर एक आंख फूटि गइल। पड़ोसी दूनो आंख फूटला से आन्हर हो गइल। पहिला आदमी सुख के अनुभव करे लागल। फेनु माला उठवलस। वरदान मंगलस– हे भगवान! हमरा दुआर पर चार गो कुआं खोदवा द। ओकरा दुआर पर चार गो कुआं त पड़ोसी का दुआर पर आठ कुआं तैयार हो गइल। बस आन्हर पड़ोसी ओह कुआं में गिर के मर गइल।"

कहे के मतलब कि हम दोसरा के सुख देखले चाहत नइखीं। हमार मन डाही बा। जब तक मन डाही रही तब तक सुख नसीब ना हो सके।

महाभारत में लिखल बा कि एक बेर युधिष्ठिर बाबा भीष्म से पुछलन– "पितामह! सुख के केकरा अनुभव होला? भीष्म उत्तर दिहलन–" जेकरा धन के नित्य आमदनी बा, जे नित्य निरोग रहत बा, जेकरा पत्नी से प्रेम बा, जेकर पत्नी मधुर बोले वाली बिया, जेकर बेटा आज्ञाकारी बा अउर जेकर विद्या धनदायिनी बिया। ई छवो जहां बा, ओइजे सुख बा।

अब रउरे बताईं। ई छवो केकरा पास बा? बाकिर रामायण में लोभ के दुख के कारण बतलावल गइल बा। गीता में भगवान एही लोभ के तृष्णा कहले बाड़न। एह लोभ चाहे तृष्णा के अपना मन से निकालि दिहल सहज नइखे। आदमी कतहीं बाहर से ले आके लोभ के अपना मन में नइखे बसवले कि ओकरा के मन से निकालि दी। लोभ त मन के विकार ह। मने में उत्पन्न भइल बा। ओकरा के गुण निकालि सकेला जब गुण मन में बसी त विकार भागी। एक पल ठहरि ना सके। एही से गोस्वामी तुलसी दास जी कहले बाड़न– "जिमि लोभइ सोखे संतोखा"।

एगो कवनो जवान लइकी का साथ पांच गो जबान बलात्कार कइलन स। लइकी रोवत, आपन छाती पीटत कोतवाली में पहुंचलि आ कोतवाल से रपट लिखे के आग्रह कइलस। कोतवाल डांट लगवलस। बोलल– "जो.. जो थाना से बहरी निकल जो, नाहीं त तोरा के हाजत में बंद करब। तोरा गांव के इज्जतदार लोगन पर कलंक लगावत हया नइखे आवत?"

लइकी डर से थाना छोड़ के भागलि। जब हम एह घटना का बारे में सुनलीं त हमरा बहुत दुख भइल। दुख एह से ना भइल कि ओह लइकी का साथ बलात्कार भइल बा। बलुके दुख एह से भइल कि हम ओह पांचों बलात्कारिन में ना रहलीं। सोचे लगलीं कि बलात्कारी लोगन का हमरो के अपना साथे राखे के चाहत रहे। अगर पांच का बदला बलात्कारिन के संख्या छवे आदमी रहितीं जा त ओह लोग के का नुकसान रहे?

इहे स्वार्थपरता लोगन के दुखी बनवले बिया। संसार के जइसे नैतिक पतन हो गइल बा। जहां दुरवस्था व्याप्त बा ओहिजा सुख के अनुभूति कइसे हो सकेला? एगो दोसर कथा याद आ रहल बा–

एगो राजा का सभ भौतिक सामग्री विराजमान रहे। रनिवास में कवनो कमी ना रहे आ लक्ष्मी पालथी मारि के बइठल रहली। एकरा बाद भी मन में सुख ना रहे। राजा अपना मंत्री से कहलन कि सभ धन-जन का रहते हमरा मन में सुख नइखे। तू अइसन उपाय बतलावऽ कि हम चैन अनुभव करीं। मंत्री जी राजा का दुख से दुखी भइलन बाकिर सुख पावे के कवनो उपाय ना सूझल। राय दिहलन कि पुरोहित जी एकर उपाय जानत होइहें।

पुरोहित जी बोलावल गइलन त राजा आपन समस्या बतवलन– "पुरोहित जी! हमरा सभ भौतिक साधन मौजूद बा। बाकिर एकरा बाद भी सुख नइखे। ई सुख कइसे प्राप्त होई?"

चतुर पुरोहित ताड़ि गइलन– "महाराज! ई साधारण समस्या बा। अपना राज में बहुत सुखी लोग बा। एगो सुखी आदमी के बोलवा के ओकर कुरता मांगि लीं। ओह कुरता के पहिरते रउरा सुख प्राप्त हो जाई।"

राजा के अनुचर एगो सेठ के पकड़ि के ले अइले। महाराज सेठ से पुछलन– "सेठ जी! का तू सुखी बाड़ऽ?"

"ना महाराज"– सेठ बोलल– "हम एगो मुनक्का जब खाईला त तीन दिन पचे में लागेला। एह तीन दिन में हमरा बहुत दुख होला आ खट्टा-मीठा डंकार आवत रहेला।"

राजा कहलन– "तब तोहरा सुख नइखे। तू जा सकेलऽ।"

एकरा बाद एगो दोसर आदमी ले आइल गइल राजा पुछलन– "तू सुखी बाड़ऽ?"

आदमी जवाब दिहलस– "महाराज, सभ ठीके-ठाक बा। बाकिर धन का कमी से एगो ना एगो चिन्ता लगले रहत बा।"

महाराज कहलन– "तब तू का खाक सुखी बाड़ऽ?"

महाराज के सुखी आदमी ना मिलल। जे आवे से एगो ना एगो समस्या से परेशान रहत रहे। केहू के मेहरारू कलही मिल गइल रहे त केहू के बेटा लहेंड़ा निकल गइल रहे। राजा सोचे लगलन, अतना विस्तृत संसार में शायद केहू का सुख नइखे। जब केहू का सुख नइखे त हमरा के सुख कइसे मिली। सुख सपना के बात बा।

अतने में कर्मचारी लोग एगो गरीब आदमी के पकड़ के

ले आइल। ओह आदमी का शरीर पर कुरता तक ना रहे।

महाराज कहलन– "ब्राह्मण देवता! रउरा सुख बा?"

"हं, महाराज! हम सुख के अनुभव करत बानी।"

महाराज का विश्वास ना भइल। अइसन क्षीण काया, शरीर पर लाज ढांके भर कपड़ा, एह ब्राह्मण का कवन सुख बा? सोचलन कि ई ब्राह्मण सांच नइखे बोलत। कहलन– "देवता! अगर कवनो तरह के दुख होखे त लेहाज छोड़ि के बतलाईं। राज का खजाना से राउर पर्याप्त सहायता कइल जाई।"

ब्राह्मण बोलल– "महाराज! हमरा कवनो दुख नइखे। हमरा कवनो तरह के दुखे नइखे। एह से हम सहायता के याचना का करीं। हमरा पर भगवान के असीम कृपा बा।"

महाराज कहलन– "ब्राह्मण देवता! अगर रउरा याचना ना करब त हमहीं रउरा से याचना करत बानी।"

"कइल जाय महाराज!"

महाराज कहे लगलन– "देवता! साच बात ई बा कि हमहूं सुखी नइखी। पुरोहित जी के कथन बा कि कवनो सुखी आदमी के कुरता जब हम पहिन लेब त हमरा सुख प्राप्त हो जाई। एह से हम रउरा से निहोरा करत बानी कि रउरा अपना कुरता हमरा के दे दीं।"

ब्राह्मण कहलन– "बाकिर हमरा कुरता नइखे।"

महाराज कहलन– "देवता! जब रउरा शरीर प एगो कुरता तक नइखे त सुख का बा?"

ब्राह्मण कहे लगलन– "महाराज! रउरा भ्रम हो गइल बा। रउरा पास अनेक कुरता बाड़न स। बाकिर सुख नइखे। हमरा पास कुरता नइखे बाकिर सुख बा। रउरा समुझत बानी कि सुख कुरता में बसेला। ई बात सांच नइखे। कुरता में सुख ना बसे। सुख बसेला संतोख में। रउरा संतोख नइखे। हमरा संतोख बा। जइसे स्वाद जीभ में ना बलुके मन में बसेला। अगर एक आदमी के सौ रसगुल्ला खाए के दिहल जाय त ओह आदमी का जवन स्वाद पहिला रसगुल्ला में मिली तवन स्वाद सौवां में ना मिली। सुख संतोख में बसेला।"

राजा का बात समुझ में आ गइल। ऊ सुख के अनुभव करे लगलन।

महर्षि वेद व्यास से एक बेर पूछल गइल– "महर्षे! रउरा अठारहो पुराण लिखलीं, वेदन के संपादन कइलीं, अतना ग्रंथन में आखिर का लिखलीं?"

महर्षि उत्तर दिहलन– "कुछु ना, दू बात लिखले बानी। इहे कि परोपकार कइल पुण्य ह आ दोसरा के दुख दिहल पाप ह।"

एगो कवि लिखले बा–

"चार वेद छव शास्त्र में बात लिखी है दोय।
दुख दीने दुख होत है सुख दीने सुख होय।।"

– बैरी, पो. महदह, जिला- बक्सर

शोक संदेश

श्रद्धांजलि

हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान, खाली रामचरित मानस आ गीता नाहीं, समस्त वेद-पुराण के अधिकार पूर्ण अध्येता, पश्चिम बंगाल से भाजपा के पूर्व विधायक, बाद में एकर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, फेर राज्य सभा के सदस्य आ अंत में हिमाचल प्रदेश आ उत्तर प्रदेश के राज्यपाल। यानी साहित्य से राजनीति तक के हर ऊंचाई छुअला का बादो हमेशा शांत, निर्मल आ मुस्कुरात रहे वाला आचार्य विष्णुकांत जी शास्त्री हमेशा हमेशा खातिर रविवार तारीख 17 अप्रैल 05 के अपने इष्ट देव भगवान श्रीराम के चरणन में लीन हो गइनी। हमनी पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद आ भोजपुरी माटी परिवार के सदस्यगण मर्माहत भइनी जा। उहां के हर भाषा के उन्नति के समर्थक रहनी हंऽ। ईश्वर उहां के आत्मा के चिर शान्ति प्रदान करे।

पशुधन के रक्षा आपन रक्षा

❑ कृष्ण कुमार

संसार में पशुअन के पैदाइस आदमी से पहिले भइल रहे, बाकिर आदमी विवेकशील प्राणी होखे के चलते पशुअन से आगा निकल गइल। जवना घरी आदमी असभ्य रहे आ कुछुओ ना जानत रहे ओह समय में भी कुत्तन के दरवान बना के गुफा के मुंह पऽ बइठावत रहे आ शिकार करे जंगल पहाड़ पऽ जात खानी ओहनी के संगे राखत रहे। कुत्ता सबसे पहिला पालतु पशु हऽ। ओकरा बाद जइसे-जइसे मनुष्य सभ्य होत गइल ओइसे-ओइसे आउर मनुष्य पशुअन के भी पाले-पोसे लागल। हमनी के पूर्वज तऽ पशु-पक्षी के पूजा करत रहन जा। नन्दी बैल शिव के सवारी मानल जाला। गरूड़ विष्णु के, सिंह दुर्गा के, हाथी विश्वकर्मा के, मोर कार्तिक के, चूहा गणेश के आ हंस सरस्वती के...!

भगवान कृष्ण गोपाल कहालें, काहे कि ऊ गाय चरावत रहन आ ओहनी के रक्षा करत रहन। अनेक पर्व-त्योहार के मोका पऽ माटी आ धातु के पशु-पक्षी देखे के मिलेला। पशु-पक्षिन के रूप में हमनी के कलाकृति के रूप में प्रमुख स्थान बा। मोर हमनी के राष्ट्रीय पक्षी हऽ।

मानव सभ्यता के विकास के साथे ई बात स्पष्ट हो गइल कि मनुष्य आ पशु एक दोसरा के पूरक हवें। मनुष्य जीवन में पशुअन के संग आ सहयोग के भुलाइल ना जा सके...।

किसिम-किसिम के पशुअन के रंग-रूप आ जाति के देखला पऽ प्रकृति के लीला के पता चलेला। पशु हमनी के देश के बहुमूल्य सम्पदा हवन, जेकर रक्षा आ देखभाल बहुते जरूरी बा। मानव जाति हमेशा पशुअन के ऋणि रहल बा। अपना दैनिक जरूरतन के पूरा करे खातिर, सुरक्षा खातिर आ दोसर दैनिक जरूरत खातिर ऊ वन्य पशुअन के पालन भी करत रहे। ट्रैक्टर युग के पहिले बैलन के सहयोग से ही खेती होत रहे...।

बाकिर ई दु:ख के बात बा कि एह बहुमूल्य पशुअन में से अनेको विलुप्त हो गइलें आ कतना विलुप्तता अवस्था में पहुंच गइल बाड़न। हमनी के देश के करीब दो सौ किसिम के पशु-पक्षी विलुप्त हो गइलें आ करीब छह सौ किसिम के वन्य पशु के विलुप्त होखे के आशंका पैदा हो गइल बा। अगर एह पशुअन के रक्षा आ देखभाल के उचित आ जल्दी उपाय ना कइल जाई तऽ ई पशु भी विलुप्त हो जइहन।

एह पशुअन के विलुप्त होखे के मूल कारन इहे बा कि जइसे-जइसे मानव सभ्यता के विकास भइल, तइसे-तइसे अनेको कारन से प्राकृतिक परिस्थितियन में गड़बड़ी पैदा भइल। खेती खातिर आ उद्योग धंधा स्थापित करे खातिर जंगल कटाये लागल। हमनी के ठीक से जानऽतानीजा कि वन्य पशुअन के सबसे बढ़िया चारागाह आ आवास जंगल हऽ। जंगल के नष्ट होखे से वन्य पशुअन में असन्तुलन स्वाभाविक बा, जेकरा चलते वन्य पशु काफी संख्या में नष्ट हो रहल बाड़न..!

कुछ वन्य पशु अइसन बाड़ें जेकरा से हमनी के कवनो लाभ नइखे। जइसे- गैंड़ा। कुछ पशु अइसन बाड़ें जवन फसल के नुकसान पहुंचावलें– जइसे– हाथी। कुछ अइसन हिंस्र पशु बाड़ें जे हमनी के पालतु जानवर के तऽ खाइये जालें साथे आदमखोर भी हो जालें। जइसे– बाघ, सिंह। पहिले लोग वन में मनमाना शिकार करत रहन। बाकिर अब एकरा पऽ रोक बा। अब हमनी के सचेत हो गइल बानी जा। हमनी के वन्य पशु-पक्षियन के रक्षा करे में तत्पर रहे के चाहीं।

हमनी के पूर्वज लोगन के भी वन्य पशुअन से प्रेम रहे। ओह लोग के समय में अइसन वन भी रहें जहंवा वन्य पशुअन के आखेट भा शिकार कइल मना रहे। अइसन वन 'अभ्यारण्य' कहात रहे। एह से पता चलता कि पुराना जमाना से ही हमनी के पशुअन के प्रति प्रेम-भाव राखत आइल बानी जा। हमनी के धारमिक पक्ष भी कवनो प्राणी के पीड़ा पहुंचावे के प्रतिकूल हऽ। हमनी के आपन फसल नष्ट करे वाला पक्षियन के भी मारल पाप समझीला जा। किसान लोग एही से फसल नष्ट करे वाला पशु पक्षियन के शोरगुल मचा के भगावेलें...।

रंग-बिरंग के सुन्दर चिरईन के मनोहर तान आ तरह-

तरह के पशुअन के खेल सभ केहू के मन मोहि लेला। हर वन्य पशु में एगो विशेष सुन्दरता होला, ओमें एगो आकर्षण पावल जाला, एगो खास अदा पावल जाला। चाहे ऊ शेर होखे चाहे हिरन, हाथी होखे आ बंदर, मोर होखे आ सारस, हंस होखे चाहे बकुला। जंगल में ई स्वच्छन्द विचरेलें। ऊंहवां एह प्राणियन के उन्मुक्त कौतुक इनका सौन्दर्य के निखार देला, जेकर अवलोकन मन-प्रान के आनन्दित कऽ देला।

आदमी जैव समुदाय के एगो महत्वपूर्ण घटक हऽ। एह ले ई तय बा कि जैव संतुलन बिगड़ जाए से आदमियो पऽ ओकर प्रभाव पड़ी। दोसरा जीव लेखा आदिमी के भी ओह सब संकट के सामना करे के पड़ि सकत बा...। जइसे जैव समुदाय में असंतुलन के कारण अगर चिरईन के संख्या कम हो जाय तऽ कीड़न के आबादी काफी बढ़ि जाई, काहे कि चिरई-चुरूंग कीड़न के खाके खतम कऽ देलन सऽ। कीड़न के आबादी अधिका बढ़े से फसल अधिका नष्ट हो जाई। काहे कि कीड़ा फसल के खा के नष्ट कऽ देलें सऽ। आ जब फसले नष्ट हो जाई तऽ आदमी के खाये खातिर अनाज-सब्जी आ दाल कहंवा से मिली...?

दोसरा जीव लेखा आदमी के भी संतुलित वातावरण के जरूरत बा। बाकिर आदमी आ दोसरा जीव-जाति में बड़ा फरक बा। एकर कारन ई बा कि पूरा जैव समुदाय में खाली आदमीये एगो अइसन जीव बा जेकरा में अपना जैव समुदाय आ अजैव वातावरण के बदले के क्षमता होला। एही कारन आदमी परितंत्र में अनेकों बदलाव कइल जवना के चलते अत्यंत डरावना पारिस्थितिक समस्या जनम ले लेले बा। आदमी जाति के अस्तित्व कायम राखे खातिर एह समस्यन पऽ बहुत अधिका आ जल्दी ध्यान देबे के परी। पारितंत्र के संतुलन के कायम राखे में आदमी एगो मुख्य कारक के भूमिका अदा कर सकेला।

अभी हमनी के देश में अठारह प्रतिशत से भी कम जंगल शेष रह गइल बा जबकि कम से कम तीस प्रतिशत जंगल होखे के चाहीं। कवनो पारितंत्र में पौधा आ पशुअन के बीच घनिष्ठ संबंध होला। जंगल के पूरा जैव समुदाय पऽ ओकर बहुत बुरा असर पड़ेला। काहे कि जंगल ही ओह पशुअन के आवास होला जहंवा ऊ सब कुशलपूर्वक आ स्वच्छन्द जीवन-यापन करेला। जइसे शेर आ चीता के प्राकृतिक आवास जंगल होला। जंगल नष्ट होखला से एह पशुअन के आबादी तेजी से घटत जा रहल बा। एगो आंकड़ा बा कि गत शताब्दी के शुरू में हमनी के देश में पचासो हजार से बेसी सिंह रहन बाकिर आजु ओह पशुअन के संख्या घटि के दु हजार रह गइल बा। आ आगे के दिनन में सिंह अउर कम हो जइहें...।

आदमी प्राणी समुदाय में अनेक गड़बड़ी पैदा कइले बा। जेकरा चलते भीषण पारिस्थितिक संकट पैदा हो गइल बा। ऊ अनेक पशुअन के आखेट द्वारा नष्ट कऽ देले बा। आदमी द्वारा अधिक पशु पइसा के लालच खातिर मारल जालें सऽ। कुछ पशुअन के शिकार एह से कइल जाला कि ओकर मांस, खाल आ ओह खाल के बनल समान बहुते महंगा दाम पऽ बिकाला। जइसे शेर, चीता, तेंदुआ, साम्भर, हिरन आदि के खाल। कुछ जानवरन के शिकार उनका सींगन खातिर कइल जाला जेवना से सजावट के अनेक सामान बनेला। कुछ पशु के सींग के दवाई भी बनेला। एह कारन भारतीय पशुअन के पूर्णतया गायब हो जाए के खतरा पैदा हो गइल बा। सिंह, जंगली गधा, कश्मीरी स्टैग, कस्तूरी मृग ई सब पशु लुप्त होखे के अवस्था में पहुंच गइल बाड़ें। भारतीय चीता तऽ पूरा गायब हो गइलें। मगर आ घड़ियाल भी तेजी से गायब हो रहल बाड़न।

जैव समुदाय में जनमल संकट अंतिम रूप में आदमी समुदाय के ही हानि पहुंचावेला। जवन आदमी समुद्र चाहे नदी किनारा बसेलें उनकर मुख्य आहार मछली हऽ। आदमी छोटकी मछरियन के खाला। बाकिर एह छोटकी मछरियन के बड़की मछरी खाली सऽ। एह से कि बड़की मछरियन से हमनी के भोजन में हानि होला। बाकिर मगर आ घड़ियाल एह बड़की मछरिन के खा के हमनी खातीर छोटकी मछरिन भोजन के रूप में उपलब्ध करावेला...।

एह घरी विश्व में जनम दर प्रति सेकेण्ड दू शिशु बा। एह रफ्तार से आदमी के बढ़ला के जनसंख्या अनेक भीषण संकट पैदा कऽ देले बा। एह कारन संसार में भोजन आ आवास के भयंकर समस्या पैदा हो गइल बा। एह कमी के पूरा करे खातिर आदमी जंगल के जंगल साफ कऽ देले बा। जवना से भोजन आ आवास के समस्या हल हो सके। ई सब बात पूरा जैव समुदाय में संकट पैदा कऽ देले बा आ आदमी ओह संकट में फंसत जा रहल बा।

हमनी पशुअन के जवना परकार से अपना उपयोग में ले आई ला जा ओकरे के पशुअन से अर्थ लाभ कहल जाला। जवन दवा आदमी के दिहल जाला ओकरा के पहिले बानर के दे के ओकरा परभाव के निरीक्षण कइल जाला। बाघ के बसा के गठिया-सम्बन्धी रोग के इलाज कइल जाला।

पशुअन के बचावे खातिर वन्य जीवन के व्यवस्था भिन्न-भिन्न चरण में करे के जरूरत बा। पहिलका चरण वन्य प्राणियन के संरक्षण खातिर उनका उचित आवास के बारे में अच्छी जानकारी होखे के चाहीं। पशुअन के आवास के सुरक्षा आ विकास खातिर हमनी के अइसन पौधन के लगावे के चाहीं जवना से अच्छा आ शक्तिदायक चारा मिल सके। वन्य पशुअन के सुरक्षित आ संरक्षित राखे खातिर समय-समय पऽ ओहनी के गिनती राखल आ अधिनियम बनावल बहुते जरूरी बा। ओह अधिनियम के कड़ाई से पालन होखे के चाहीं। पशुअन के विलुप्त होखे से बचावे खातिर आखेट पऽ कड़ाई से रोक लागे के चाहीं। वन्य पशुअन के उचित देखभाल खातिर उचित पशु चिकित्सालय के व्यवस्था करे के चाहीं। जवना से महामारी आ दोसरा रोग से ओहनी के बचावल जा सके। पशुअन के आवासीय आवश्यकता आ ओहनी के स्वभाव से ठीक से समझे खातिर जगह-जगह पऽ अनुसंधानशाला स्थापित करे के चाहीं।

पंचतंत्र आ हितोपदेश में बन्दर, चूहा, घड़ियाल, ऊंट, हाथी, बिल्ली, सांड़, सिआर आ कछुआ के वर्णन मिलेला। कवि आ लेखक के ध्यान भी पशु अपना ओरे आकृष्ट करेलें। कलाकारन के मूर्तिकला आ चित्रकला में भी पशुअन के छटा देखे के मिलेला। ताजमहल, अजन्ता आ एलोरा के साथे इहंवा के वन्य पशु बिदेशियन के आकृष्ट करेलें। आ जीवित वन्य पशुअन के चित्र अपना कैमरा में उतारे खातिर ऊ दूर-दूर से आवेलन।

गांवन में आज भी गाय-भईंस पाल के आ दूध दही माठा बेंच के कतना लोग अपना परिवार के जीविकोपार्जन करेलन जा। एहले जब हमनी के कवनो ना कवनो रूप में पशुअन से लाभान्वित होते बानी जा आ ओहनी से कलात्मक प्रेरणा पावतानी जा तऽ हमनी के ई कर्त्तव्य हो जाता कि हमनी के पशुअन के रक्षा करीं जा, काहे कि पशुधन के रक्षा में ही आपन रक्षा बा...।

– महावीर स्थान के निकट
करमन टोला, आरा - 802301 (बिहार)

दू गो गजल

❑ पाण्डेय कपिल

(१)

जइसे–तइसे समय कटत बा
दुख में केहू कहां सटत बा

बात करे के फुर्सत नइखे
बात इहे अब सभे रटत बा

पटरी नइखे अब आपुस में
शामिल कुल परिवार बँटत बा

कइसे संसरो काम समय से
मन से केहू कहां खटत बा

पसरल बाटे चुप्पी सगरो
देखीं, कबले धुंध छँटत बा

(१)

जिनिगी चलत रहल हमेशे राग-लय के साथ
कइलीं कुछो दबाव में ना काम भय के साथ

हारल ना काहे होखे न्याय, हमरा प्रिय रहल
दिहलीं कबो ना छल से मिलल जय-विजय के साथ

हर सोच के पीछे रहल बा सांच के संबल
कबहूं सुलह ना कइलीं झूठ के अनय के साथ

हत्या-अदंक-लूट के माहौल बा भइल
अइसन में भाग्य से मिले कवनो सदय के साथ

दउड़त रहल बा जोर से बेचैन जिन्दगी
कइसे मिला के डेग चलीं हम समय के साथ

– मार्ग - 3, इन्द्रपुरी, पटना– 800024

कलंक

❑ चंद्रवर्ती दुबे

योगेन्द्र क रेलगाड़ी एक घंटा देरी से सबेरे पांच बजे मुगलाईपुर रेलवे स्टेशन पर पहुंचल। अब योगेन्द्र के अपने स्टेशन पर जाये खातिर साढ़े आठ बजे पसिंजर ही मिली। जइसे पसिंजर पलेटफारम पर आइल, धक्का धुक्की करत डिब्बा भर गयल। जब योगेन्द्र आपन झोरा लेके डिब्बा में चढ़लन त बईठे क जगह नाही मिलल। उनके इहो कहे क आदत नाहीं रहे कि तनी घुसकऽ , तनी घुसकऽ । खड़ा हो गइलन। एगो युवक उनके बड़े गौर से देखत रहल। जब योगेन्द्र क नजर युवक के नजर से मिलल त उ खड़ा होके योगेन्द्र के अपने जगह पर बईठे के कहलस। योगेन्द्र के नाहीं नुकुर कइले पर भी उनके बईठा देहलस। थोड़े देर के बाद जगह बनाके योगेन्द्र के सामनेवाली सीट पर उहो बईठ गयल। युवक क गोरा अउर सुन्दर चेहरा , कद लम्बा अउर सर पर संवरल बबरी। शकल सूरत से सीधा जवान लगत रहल। गाड़ी चल पड़ल, जवान योगेन्द्र से बातचीत शुरु कइलस "कहां जायेके बा?"

"गोपालगढ़।"

"वोहिंजे क हईं कि कहीं गांव में क?"

"हमार कोठी गोपालगढ़ में भी ह बाकि गॉव वोहिंजग से छ मील पच्छिम हऽ, नाम हऽ गढ़कोटा।

जवान बहुत गंभीर हो गयल, सोच में पड़ गयल, अउर ओकर दूनों आंख आंसू से भर गइलींसन।

योगेन्द्र : का बात ह हो ?

जवान : कुछ नाहीं। (थोड़े देर बाद) हमार ननिहाल आपेके गांव में ह हमार जनम भी ओही गांव में भयल ह।

"तब त हमरे गांव में गइले होबऽ?"

"नाहीं कब्बो नाहीं।"

"ई काहें ? माई संगे त कई बार गयल होबऽ!"

"हमार माई हमरे होश में कब्बो नईखे गइल । माई बाबू हमहूं के ओह गांव में जायेके मना कइले हउवन।"

"का करेलऽ?"

"बनिया जात त बेपारी न होलन खरीदीहन, बेचीहन। 'फिर ओकर ध्यान आयल त पूछलस कि कवन स्टेशन आई। जब पता चलल कि ओकर स्टेशन त पिछहीं छूट गयल त पछताये लगल।

योगेन्द्र कहलन "अब अगिला स्टेशन हमार आई तू हमरे संगे चलऽ। आखिर तोहके एह स्टेशन से वापस जायेके शाम क सात बजे ही पसिंजर मिली।"

उ सोच में पड़ गयल। जब योगेन्द्र अपने स्टेशन पर उतरलन , ओहू के त उतरहीं के रहल उहो उतर गयल। पलेटफारम पर योगेन्द्र बहुत जिद्द कइलन त उ उनके संगे गोपालगढ़ आ गयल। दूपहर क खाना खइले के बाद दूनों जानी गढ़कोटा आ गइलन।

रात क जब सूते खातिर खटिया पर योगेन्द्र लेटलन त सोचे लगलन "ई जवान जात क बनिया आ जनमल एही गांव में। कब्बो एह गांव में अइले नइखे। ई केकर नाती हो सकेला। हमरे गांव में तीने घर बनिया। झमेलू बनिया! बिल्कुल झमेलू बनिया।"

उ बीस बरिस पहिले क घटना क संस्मरण करे लगल।

***

"जब उ हाई स्कूल में पढ़त रहल आ एक शनिचर के गांव आयल त देखलस कि ओकरे बईठका के पच्छिम वाला पोखरा के उत्तर पीड़ी पर पीपल के पेड़ के नीचे ब्रह्म जी क चउरा कीहन गांव क लोग जुटल रहलन। योगेन्द्र भी ओहिंजे गयल। ब्रह्म जी के माथा टेक के बइठ गयल। वोहिंजग झमेलू बनिया आ उनकर लइकी भी बइठल रहलीं। योगेन्द्र के पता चलल कि कलावती क बियाह हो गयल ह बाकि अबे गवना नूहे भयल। बारह दिन पहिले ओके एगो लइका पैदा भयल ह । पंचायत एह बात क ह कि उ लइका केकर हऽ। योगेन्द्र क बाबूजी ठाकुर विरेन्द्रपाल सिंह राठौर भी मौजूद रहलन।

राठौर साहेब कलावती से पूछलन : केकरे पाप के जनम देले हई।

कलावती रोवे लगल आ फिर रोवते रोवत कहलस : बाबू क ।

आगे बयान कइलस : हमरे जनमते माई मर गइल। बाबूजी त बैल क लदनी करते बाड़न। एक दिन राती क बाबूजी कहलन कि बचिया आज जीव बहुत थक गयल ह तनी तेल लेके हमरे गोड़ में मालिस कर दे। एही तरे जब तब गोड़ आ देह में मालिस करावे लगलन। एक रात हमार बांह खींच के खटिया पर सुता लेहलन आ फिर दुष्कर्म कर बइठलन। ई सिलसिला जवन चालू भयल तवन चलते रहल आ हम नाहीं बता सकलीं कि हम उनकर बच्चा अपने पेट में पालत हईं।

एतना सुनते लोग झमेलू के मारे टूट पड़लन। झमेलू त अपने बचिया क बयान सुनते ही सुन्न हो गयल रहं, आ एक तमाचा लगते ही बेहोश होके लोट गइलन। आदमी लोग दउड़ के पोखरा से पानी लेके उनके मुंह पर छिड़के लगलन। थोड़े देर के बाद झमेलू होश में अईलन। योगेन्द्र खड़ा होके कहलन "हमहन में कोई नईखे जानत कि वोकर बाप के हऽ। केवल विसवास क बात हऽ। जहां बिसवास होला उहां संदेह भी होला। कलावती के बात में संदेह भी हो सकेला।"

ठाकुर विरेन्द्रपाल सिंह राठौर फैसला सुना देहलन '24 घंटा के भीतर झमेलू अपने लइकी अउर ओकरे लइका के साथ एह गांव से निकल जांय। फिर एह गांव में वापस कब्बो न आवें। दूसरे दिन जब झमेलू गांव से जाये लगलन त ठाकुर साहेब के सलाम करे अइलन।

झमेलू : मालिक अब त हम गांव छोड़के जाते बानीं। जाते जात आपके आशीर्वाद लेवे आ गइलीं हं।

ठाकुर (फुसफुसात धीरे से) : जा झमेलू जा। एह लइकिया के पार लगा के चार छः महीना के बाद आ जइह । कोई गांव में तोहरे रहले क विरोध नाहीं करी।

झमेलू अपने लइकी के लेके गांव से चल गइलन। कुछ महीना के बाद अकेले गांव वापस आ गइलन। कोई विरोध नाहीं कयल आ गांवें में अपने घर में रहे लगलन।

बीस बरिस पहिले क घटना इयाद कइले के बाद योगेन्द्र के दिल में झमेलू के प्रति हमदर्दी हो गयल ई सोच के कि कलावती के कम से कम रण्डी के कोठा पर त नाहीं बेचलस।

बीहान भइले नाश्ता कईले के बाद योगेन्द्र अपने एगो आदमी के बोला के कहलन 'तू नागेन्द्र के घुमाके गांव बगईचा सब देखा द । वापसी में झमेलू के घरे भी जइहऽ अउर नागेन्द्र के झमेलू के घर के भीतर अपने संगे लेहले जईह आ झमेलू से कहीहऽ कि एक–दू घंटा बाद उ आके हमसे भेंट करें ।

दूपहर क खाना खइले के बाद योगेन्द्र अउर नागेन्द्र बइठल रहलन। नागेन्द्र अब उहां से जाये क छुट्टी मांगत रहलन। झमेलू आके योगेन्द्र के सलाम कके कहलन : 'का छोटे मालिक, का हुकुम हऽ?'

'आवऽ बइठऽ।'

योगेन्द्र नागेन्द्र से कहलन : तू उठ के इनकर गोड़ धरऽ। नागेन्द्र उठ के झमेलू क गोड़ धरे चललन, झमेलू पीछे हटके कहलन 'का मालिक ई का करावत हईं ? हमके त कुछ समझे में नइखे आवत।'

योगेन्द्र : नागेन्द्र! ई झमेलू हउवन तोहार नाना! आ जवने घर में तू गयल रहलऽ ह उहे तोहार जनम स्थान ह।

झमेलू के आंख से टप टप लोर बहे लगल, नागेन्द्र क आंख भी डबडबा गयल। फिर कुछ देर तक स्तब्धता।

झमेलू : मालिक हुकुम हो त अब हम चलीं।

योगेन्द्र : हं ! तोहके तोहरे नाती से मिलावे खातिर बोलवले रहलीं हं।

झमेलू चले खातिर खड़ा हो गइलन आ नागेन्द्र से कहलन : बचवा! एह गांव में फिर कब्बो दुबारा मत अइहऽ। झमेलू के गइले के बाद नागेन्द्र भी योगेन्द्र से छुट्टी लेके चल देहलन। चलते चलते कहलन 'हमके ई रहस्य नइखे समझ में आवत कि माई बाबू आ अब नाना भी एह गांव में आवे से काहें मना करत बाटं।'

योगेन्द्र : 'समय अइले पर सब रहस्य खुल जाई।' नागेन्द्र चल गइलन।

योगेन्द्र के मन में ई विचार आयल कि नागेन्द्र क बाबू धन्य बाटं कि कलावती के पाप के आपन लईका मान के एक सभ्य नागरिक बनवलन।

समय बीते लगल। बहुत समय से योगेन्द्र अउर नागेन्द्र क आपस में भेंट नाहीं भयल। अब ई समय ही बताई कि फेरु भेंट होई कि नाहीं।

***

नागेन्द्र क गांव भानपुर के पास गंगापुल के दुसरे किनारा पर रहे। साइकिल पर उ भानपुर आवत रहलन, जइसहीं गंगापुल पर उनकर साइकिल पहुंचल एगो अम्बेसडर कार एकठे रिक्शा आ साइकिलवाला के बचावे में पुल के रेलिंग से टकरा गयल। इंजन के आगे के तरफ से पुल पर से धड़ाम से गंगा में गिर गयल। गनीमत रहे कि गाड़ी पानी में न गिर के किनारे के बालू में धंस गयल। आलम दउड़ल आ गाड़ी के पास भीड़ जमा हो गइल। ड्राईवर स्टीयरिंग अउर सीट के बीच में फंस गयल रहे। पीछे बइठल आदमी क दूनों टांग आगे अउर पीछे वाली सीट के बीच में फंस गयल रहे। बड़ी मुश्किल से पहिले ड्राईवर के निकालल गयल । स्टीयरिंग से ओकरे छाती पर दबाव पड़ले के कारण ड्राईवर त मर गयल रहे। पीछे वाली सीट पर बइठल आदमी के जब निकालल गयल त उ जिन्दा बाकि बेहोश रहल। टूटले से दूनो टांग झूलत रहंसन। उनके लेके नागेन्द्र अउर दू आदमी झट से अस्पताल भगलन। अस्पताल में जांच कइले अउर एक्सरे लेहले के बाद डाक्टर बतलवलन कि इनके दूनो गोड़ क हड्डी टूट गयल बा आ हड्डी क छोट छोट टूकड़ा हो गयल बा। ऑपरेशन कके टुकड़ा निकाले के पड़ी आ लोहा क छड़ डाल के सियाई फिर बाद में दूनों टांग पर पलस्तर चढ़ी। ऑपरेशन करे खातिर इनके परिवार क कोई आदमी के फारम पर दसखत करेके पड़ी। नागेन्द्र उनकर भतीजा बनके दसखत कर देहलन। उनके ऑपरेशन टेबुल पर ले जायल गयल। ऑपरेशन हो गयल बाकि अबहिन उ बेहोसे रहलन एहसे उनके आई. सी. यू. (इन्टेन्सिव केयर यूनिट) में रखल गयल। एही बीच में नागेन्द्र अपने घरे ई बतावे खातिर गइलन कि ओके रात क घरे पहुंचे में देरी होई। हाल सुनले के बाद उनकर माई बाबू भी ओकरे संगहीं अस्पताले आ गइलन जा। ई तीनों जानी आई. सी. यू. के सामने खड़ा होके मरीज के होश में आवे क इन्तजार करे लगलन जा। पांच–छः घन्टा के बाद जब उ होश में अइलन त उनके स्टेचर पर सुताके जनरल वार्ड में ले जायल जात रहे। जइसहीं दरवाजा पर स्टेचर आयल उनकर नजर कलावती पर आ कलावती क नजर उनके उपर पड़ल। एक दूसरे के पहचान गइलन। कलावती नागेन्द्र से कहलीं कि बचवा ई हमरे गांव क ठाकुर विरेन्द्रपाल सिंह राठौर हउवंन। तू गांव पर चल जा अउर इनके लइका योगेन्द्र पाल सिंह राठौर के लिया आवऽ तबतक हमहन क इनकर देखभाल करल जाई। बाबू भी सहमति में मुड़ी हिला देहलन। तीनों जानी ठाकुर के बेड के पास गइलन जा। नागेन्द्र प्रणाम कके ठाकुर से कहलन 'हमार नाम नागेन्द्र हऽ। ई लोग हमार माई बाबू हउवं जा। हम आपके गांवे जाके योगेन्द्र जी के खबर दे देहीला। जबतक हमहन नाहीं आवल जाई हमार माई बाबू आप क सेवा करिहन। हमार बाबू गूंगा हउवन एहसे आपके पास अधिकतर हमार माईये रही। ठाकुर आपन दूनों हाथ जोड़ के आभार प्रगट कइलन। नागेन्द्र अस्पताल से रवाना हो गइलन। जबतक योगेन्द्र अउर उनकर माई नाहीं अइलिन कलावती ठाकुर क खूब सेवा कईलस। ईहां तक कि पेशाब पैखाना धोवे पोंछे में भी कवनो तरह क घृणा नाहीं कइलस। ठकुराईन आ योगेन्द्र आके कलावती क समर्पित सेवा देख के भावुक हो गइलन जा।

करीब पन्द्रह दिन के बाद अस्पताल से छुट्टी मिलल। ठाकुर के दुनों टांग में जंघा से लेके एड़ी तक पलस्तर चढ़ गयल। छः सप्ताह के बाद चेकअप करे खातिर डाक्टर बोलवलन। योगेन्द्र नागेन्द्र से कहलन कि उनके साथ उहो चलतन त दू आदमी के साथे रहले से बाबू जी के ले जाये में सुविधा रहत। नागेन्द्र क माई बाबू उनके जायेक आज्ञा दे देहलन। ठाकुर गांवे आ गइलन। कोई से मिले जुले के मना कर देहलन। गांव पहुंचले के दूसरे दिन ठाकुर ब्रह्म स्थान पर गांव के लोग क बटोर

कइलन। ठाकुर के देखे वासते गांव क मरद, मेहरारु, लईका, लईकी भीड़ के तरह उमड़ पड़लन। झमेलू के खास तौर पर बोलावल गयल। ठाकुर खटिया पर ढोके ले आयल गइलन। खटिया रखले पर एक ओर योगेन्द्र अउर दूसरे ओर नागेन्द्र खड़ा हो गइलन। ठाकुर पता कइलन कि झमेलू बनिया आयल बाटं कि नाहीं। झमेलू के बोला के ठाकुर के समने खड़ा कयल गयल।

ठाकुर बोले लगलन :

'आज के बाईस तेईस बरिस पहिले एही जगह पर हम झमेलू अउर उनके लइकी कलावती के चौबीस घंटा के भीतर गांव से निकल जायेक हुकुम सुनवले रहीं। दरअसल में ओह समय में बात क खुलासा नाहीं हो पावल काहें से कि कलावती कहले रहल 'बाबू क।' हमरे दबाव में आके बाबू साहेब के बदले बाबू कहलस। असलियत हम आप सबके सामने रखके आपन गुनाह कबूल कयल चाहत बाटीं। बात ई रहल कि कलावती एक दिन हमरे हवेली में कुछ लेवे आइल। हमार पत्नी नाहीं रहलीं आ अउर कोई भी नाहीं रहल। मौका क नाजायज फायदा उठाके हम कलावती के साथ बलात्कार कइलीं। ओकरे बाद जब कभी भी हमार हवस बुझावे क मन करे ओके बोला लेहीं। दू चार बार के बाद कलावती के भी आनन्द आवे लगल आ उहो अपने आग के शान्त करे खातिर अपने आप हमरे पास आवे लगल। एक दिन आके हमसे कहलस कि उ अपने पेट में हमार बच्चा पाल रहल बाटे। हम ओसे कहलीं कि अब तू हमरे पास कब्बो मत अइहे। आनन्द लेवे खातिर हमरे पास आवत रहली ह ! का मालूम कि दूसरहूं मरद के साथ भी मउज लेत रहल होबी ? कवनो सबूत त बाय नाहीं कि तोरे पेट में हमरे बच्चा ह ? दूसर बात कि ई बात कोई दूसरे से बतलईबी त तोहके त नंगा कके, सारे गांव घुमाके एह गांव से निकाल देब आ तोहरे बापो के उनके घर सहिते राख में मिलवा देब।'

थोड़े देर रुक के आगे कहलन 'हम ब्रह्म जी क कसम खाके कहत हईं कि सच्चाई ईहे ह । आज आप सबके सामने आपन कसूर स्वीकार करके आप सब लोग आ झमेलू अउर उनके बेटी से माफी मांगत हईं, (कहते कहत ठाकुर भोंकर भोंकर के रोवे लगलन आ फिर बोललन) 'नागेन्द्र हमार लइका हउवन आज से उ ठाकुर नागेन्द्र पाल सिंह राठौर हमार बेटा अउर ठाकुर योगेन्द्र पाल सिंह राठौर क छोट भाई कहईहन। झमेलू के बीस एकड़ खेत देत हईं । झमेलू क बेटी आ दमाद अउर उनकर बाकी नाती, नतिनी उनके संगहीं एही गांव में रहीहन। योगेन्द्र अउर नागेन्द्र क जिम्मेवारी रही कि उ ई सबलोग क देखभाल करंऽ।' एतना कहले के बाद ईशारा कईलन आ उनकर खटिया उठल आ चल गइलन।

उहे भयल जवन ठाकुर विरेन्द्रपाल सिंह कहलन। नागेन्द्र क मजबूरी ई रहल कि बरसों बाद उनके नाना अउर माई के ओह गांव में मान सम्मान मिलल। एह वजह से न चाहते हुए भी ठाकुर साहेब के फैसला मुताबिक उनके ईहां रहे लगलन। शान्ति के बजाय उनकर मन अशान्त हो गयल कि उनके मन में उठल सवालन क का कोई उचित जवाब दे सकेला ?

– एसे का झमेलू अउर उनके बेटी क तेईस साल क कलंक में जिनगी बीतल वापस आ जाई ?

– एसे का कलावती क इज्जत लूटल वापस आ जाई ?

– एसे का अनुचित उचित हो जाई, पाप का पुण्य बन जाई ?

यदि मनुष्य के दिमाग में ईहे बात जम जाय कि पश्चाताप अउर धन–संपत्ति नारी क इज्जत, अनुचित के उचित, पाप के पुण्य में वापस नइखे ला सकत त कोई आदमी अनुचित काम आ पाप करबे नाहीं करी। धर्म कार्य जइसे तीरथ कयल, पूजा पाठ, गंगा स्नान, यज्ञ , दान इत्यादि मनुष्य के सात्विक बनावेला, मन में शान्ति देला, मनुष्यता सिखावेला, पाप–पुण्य क ज्ञान देला न कि पाप धोवेला अउर स्वर्ग पहुँचावेला।

(सब नाम काल्पनिक रखल हऽ। सत्य घटनाओं एवं लेखक के कल्पना पर आधारित)

– H-416, E-7 अरेरा कॉलोनी
भोपाल– 462016

भोजपुरी नीर

❖ कृष्णदेव चतुर्वेदी

भोजपुरी के उर्वर माटी
गहगह सोना चमचम माटी
जहां गइल भोजपुरी माटी,
ले आइल आपन परिपाटी।
सेवा पथ पर सबसे आगे,
विचार-शक्ति अर्पण अपनावे।
सुन्दर स्वास्थ्य गठीला काया,
शुद्ध सनातन पहिन पहिनावा।
अद्भुत बोली निर्मल शैली,
धर्मवान सद्मार्गी–प्रेमी।
छल-कपट से हरदम दूर,
लोक–कला के ह ई नूर।
ढोलक तांसा, झाँलि-गान पर,
संगीत साज जस मिठका गूर।
पग–पग शोभे भोजपुरी नीर,
हृदय संजोके राखे पीर।
कष्ट हरण के भाव हाथ में,
संग खड़ा बा सदा न्याय के।
जे चाहे इनके अजमावे,
हरपल–हरदम सभके भावे।।

– सम्पर्क : म.न. 522
बंगाली मोहल्ला, पंचशील नगर
भोपाल (मध्य प्रदेश)
पिन : 462003

सलाह

❖ गोरख प्रसाद मस्ताना

रोटी बन चन्दा के, भूइयां आवे के चाहीं
ओठे ओठ धराइल भूख, मिटावे के चाहीं
मामा, मामा कहके बचपन, रोजू हांक लगावे
कवन कसूरे चंदा मामा तोहके दया ना आवे
भगिना सब ला दूध-कटोरा लावे के चाहीं
रोटी बन चन्दा के, भूइयां आवे के चाहीं
रोज महल में नाचऽ गावऽ नइखे कवनो बतिया
सोचऽ गहज गरीबे ला बा, रोज अमावस रतिया ?
पूनम से एको दिन, मड़ई, छावे के चाहीं
रोटी बन चन्दा के, भूइयां आवे के चाहीं
मानऽतानी हीत नात से भूल कबो हो जाला
बाकी, जे उदार होला ना, एह कुल से घबराला
भूल चूक अपनाइत के, बिसरावे के चाहीं
रोटी बन चन्दा के, भूइयां आवे के चाहीं
केतनो भोथर हंसुआ होखे, अपने ओरिया खींचे
रोज निहारेलऽ उपर, कहियो त झांकऽ नीचे
गरीब गुरुबो के तनिका अपनावे के चाहीं
रोटी बन चन्दा के, भूइयां आवे के चाहीं
बीतल साल महीना जिनगी तोहरा के गोहरावत
'मस्ताना' के उमर सिराला रोज रोज समझावत
लोर भरलको मनई के हरसावे के चाहीं
रोटी बन चन्दा के, भूइयां आवे के चाहीं

– पुरानी गुदरी, महावीर चौक
बेतिया (पश्चिमी चम्पारण), बिहार

निहोरा

भोजपुरी माटी क जुलाई अंक सुप्रसिद्ध कहानीकार–उपन्यासकार कलम के सिपाही मुंशी प्रेमचंद के जयंती पर स्मृति स्वरूप "कहानी अंक" होई। रचनाकारन से निहोरा बा कि आपन रचना ३१ मई तक कार्यालय में भेजे के किरपा करीं।

कहानी

बेटी भइला के दरद

❑ उपेन्द्र श्रीवास्तव 'अजनबी'

मालती जब दुआर से सिकरी बाजल सुनली त, रसोई में काम करत मालती के हाथ रुक गइल। उ अपना मन में सोचली भला एह घरी के हो सकेला। जरूर हमार बेटी सबिता आइल होई, उ देवाल पर घड़ी टांगल देखली त दिन के बारह बजत रहे।

आज सबिता के बी.ए. के रिजल्ट निकले वाला रहे। झटपट मालती आपन हाथ धो धा के केवाड़ी खोललीं। उनुका सामने उनुकर बेटी सबिता खाड़ रहली। खुसी के मारे सविता के चेहरा चमकत रहे।

'माई' कहके सबिता उनुका करेजा से लिपट गइली। सबिता कहली– माई हम अपना कालेज में सबसे बढ़िया नम्बर पवले बानी। यानी की सभन लइकिन से अधिका अंक पवले बानी। हमार इसकालरो सीप मंजूर क लिहल गइल बा।

मालती के आंखी में खुसी के आंसू भर आइल। उ अपना बेटी के लिलार चुम के ढेर सारा आशीष देहली।

मालती कहली– जा बेटी थाकल होइबू, जा के हाथ मुंह धोवऽ तले हम चाय बना के ले आवत बानी।

सबिता कहली– माई हम लगले बाबूजी से कहिके आवत बानी। मालती चाय बनावे रसोई घर में चल गइली।

बाकिर मालती अपना बेटी सबिता के पास भइला पर अपना जिनगी के सबसे खुसी के दिन मानत रहली।

बेटिन के रूप में आपन सपना साकार होखे खातिर ऊ अपना पति दिलीप से बहुत कोशिश कइले रही।

शुरूए में अपना बेटिन खातिर कवनो कमी ना होखे दिहली, उ अपना बेटिन के बढ़िया से लालन पालन कइले रही।

दू दू गो बेटिन के माई भइला के दरद आजु सबिता त धो दिहली। बाकिर मालती में उ दरद सहे के बहुत छमता रहे।

बाकिर इ टीस मारल सहन दिन रात कचोटत रहे। पहिलका बेरी जब मालती के बड़की लइकी कबिता जिला स्तर पर डान्स कम्पटीशन में शील्ड जीत के ले आइल रही, त कविता के नाम आ अखबार में फोटो देख के कविता के माई आ बाबूजी खुसी के मारे झुमे लागल लोग।

दिलीप इ बात कहले रहन– देखऽ कविता के माई आजु हम बहुते खुस बानी, हमार एगो सपना पूरा हो गइल। हम इहे चाहत बानी कि हमार बेटी दुनिया में बहुते नाम कमा स, आ हम अपना बेटिन के चलते, आपन सीना ऊंचा कके राह में चल सकीं।

ई देखा द स कि हम केहू के दुलरुवा बेटा से कम नइखी, हमनियों के इ समाज में इज्जत के साथ जी सकिले, केहू के पांव के धूल बन के ना, बाकिर भगवान आजु हमार बिनती सुन ले ले।

जब मालती चाय लेके दालान में अइली त, सबिता अपना सहेलियन से हंस हंस के बोलत बतियावत रही।

अपना पास भइला के खुसी में उ लोगन के चाय पियवली।

अपना माई से सबिता कहली– माई आजु बाबूजी जल्दीये दुकान बन्द क के आवे के कहले बाड़न।

आज हमनी के बजारे चले के, दीदीयो त काम पर से जल्दीये आवे के कह गइल बिया।

मालती आपन बितल दिन के सपना में खो गइली।

जब दुसरकी लइकी सबिता भइल रही त, मालती के सास सबकरा से जादा दुखी रहली।

बाकिर मालती आ दिलीप पर कवनो फरक ना पड़ल। इ दुनो परानी प्रण क लेले रहे कि एना पारी बेटा होई चाहे बेटी ओके अपना लेहल जाई। एही के चलते मालती अपना अल्ट्रासाउन्ड ना करववली।

बाकिर मालती के नसीब में बेटीये रहे। जवन कि अन्त में बेटीये भइल। इ सबकरा आसरा लागल रहे, कि एना पारी मालती के बेटा होई। बाकिर के जानत बा भीतरी के हाल, इ त भगवाने जान सकेलन क केकरा नसीब में का बा। इनसान का जानो।

आपरेशन रूम में जब डाक्टर कहलस कि राउर बेटी भइल बिया, त मालती कहली– हमरा एकर कवनो दुख नइखे, डा. साहब। मालती एकरा बाद आपन अपरेशन करवावल चहली। बाकिर मालती के सास, एगो बेटा खातिर आपरेशन ना करवावे दिहली।

मालती आपन मन बटोर के रह गइली।

बाकिर मालती अपना मन में सोच ले ले रहली कि अब ई नउबत ना आई।

सबिता के जनम के बेरी मालती के बड़ा दुख सहे के पड़ल। तीन बरिस तक खइला पियला के बड़ा दिक्कत भइल, सबिता के पाले पोसे में मालती के बहुते परेशानी झेले के पड़ल।

बाकिर मालती के सास उनुकर तनिको मदद ना करत रहली। सब इनही के करे के पड़े।

मालती के देवरान के लइका दू महिना पहिले भइल रहे। एही के कारन मालती के सास अपना छोटकी बहू के लइका के सब कुछ करत धरत रही।

मालती के सास उनुकरा साथे बड़ा रुखापन लेखा दुरव्यवहार करत रही। इ मालती के साफ नजर आवत रहे कि उ केकरा के कतना करत बाड़ी।

बाकिर मालती ई सब कुछ देखला के बादो उनुकर हिम्मत ना करत रहे कि हम उनुका के कुछ बोल सकी, बाकिर जवन नफरत के बीज उनुका बेटी के साथे बोआत रहे, इ बात उनुका दिल में रह रह के टीस मारत रहे। अइसन लागत रहे कि एही तरे होई त एक ना एक दिन घाव बन के ऊपर हो जाई।

भला देखी एगो नन्हीं गो जान संगें अइसने करतब कइल जाला। मालती रह रह के भीतरे भीतर घुटत रहत रही। इ बात त मालती कबो ना भुला सकेली। जवन कि उनुकर सास छोटी गो चिरई के साथ करत रहि।

दूनो लइका सुबेरही सुबेरे दुध पिये खातिर रोवे लागस, बाकिर मालती के सास, अपना छोटकी बहू के लइका के केवाड़ी खोलवा के दूध दे आवत रही।

काहे से कि उनुकर छोटकी बहू बेटा नू पैदा कइले रही। आरे बेटा आजु काल्ह केतना माई बाबू के सुख देत बाड़न स, इ त बेटे वाला जानत बा।...

बाकिर मालती के सुबेरहीं सुबेरे उठ के सबिता खातिर दूध बनावे के पड़त रहे।

बाकिर मालती के सास इ जाने के कबो कोशिश ना कइली कि सबिता के का भइल, का ना भइल। बेराम भइल हेराम भइल, एहसे त खाली आपन छोटकी पतोह के बेटा से, ओकरे बेटा मीसस आ खेलावस, बाकिर मालती के सास सबिता के कबो आपन नातिन ना जनली, ना कबो आपन प्यार आ दुलार देली, मीसल घसल त दूर बा। सविता से कुछउ बोलवाइयों ना करस।

मालती अपना मन में इहे सोचस कि का बेटी जनमावल कवनो पाप होला। आखिर समाज में घर परिवार में, बेटीयने के साथे अइसन काहे हो रहल बा।

इहे सब सोच के मालती रो धो के रह जात रही।

कबो कबो मालती ई चाहत रही कि चिल्ला चिल्ला के इ सब बात सबकरा से बतला दी।

बाकिर उ जानत रही कि हमरा उपर केहू के विश्वास ना होई, इहे सब बात लेके, उ बड़ा परेशानी में रहत रही। उ कतही एकान्त में बइठ के रो-रो के अपना मन के बोझ हल्का क लेत रही।

उ अपने आप अपना दिल के समझा बुझा लेत रहि। दिलीपो अपना घर के बारे में केहू से कुछ कहत ना रहलन।

बाकिर मालती कवनो बात दिलीप से कहत रही त दिलीप कहत रहन कि कवनो अइसन बात नइखे, इ तोहरा खाली मन के भरम बा। इ भरम के उतार फेकऽ, दिलीप मालती के बात सुनके एक कान से सुन के दुसरा कान से बाहर क देस।

मालती आजीज होके दिलीपो से सब बात कहल सुनल छोड़ दिहली।

बाकिर मालती के लइकिन के साथे जवन दुराभाव होत रहे। उ मजबूरी बस चुपचाप सह लेत रही।

घर परिवार में कलह मत होखे, एही से मालती कुछ बोल ना सकत रही।

सविता के जनमें से मालती के सास के नजर बदल गइल रहे। उ दूर नजर से देखस।

एगो परिवार में रहला पर, सब कुछ सहे के परेला। तबे परिवार चल सकेला।

नाही त, छोटी-छोटी बात पर लइका लइकी क भेद परगट हो जात रहे।

मालती इ बात के जानत रहि, कि दिलीप सब कुछ जनला के बादो, कुछ बोलत ना रहलन। कबो अपना माई से खुल के बात ना कइलन त आजु उ का करिहन।

अगर कबो काल दिलीप कुछ कह सुन देत रहन त, घर में तूफान आ जात रहे।

कारन कि मालती के सासे के राज उ घर में चलत रहे। उनुकरा मरजी के बिना एगो पतई तक ना हिल पावत रहे। लरिकन के त बाते अलग बा।

उनुकरा सामने मालती के ससुरो के हिम्मत बोले के ना करत रहे। दोसरा के के कहे जाव।

बाकिर मालती बड़ा खुस रहत रही कि जाय द बाबूजी के मन गंगा के पानी अइसन पवितर बा।

उ दूनो लरिकन के प्यार आ दुलार देत रहलन।

जब मालती के पंचवां देवर के शादी हो गइल त मालती अपना मन में अलगा रहे के विचार बना लेले रही।

नया नोहर पतोह के अइला पर जगह के कमी देख के उ उपर रहे के बिचार बनवली।

थोड़की सा नोक झोक भइला पर दिलीप अलगा होखे खातिर चट से तइयार हो जात रहलन।

मालती के उपर रहला पर मालती के सास बहुते शोर शराबा कइले रही। बाकिर मालती अपना निरणय पर एकदम टिकल रहली, जवन कुछ हो जाय, शुरू-शुरू में मालती के बहुते परेशान होखे के पड़ल।

बाकिर उ आपन हिम्मत ना छोड़ली। उ तय क ले ले रही कि इ समाज जवन कि लइका अ लइकिन में भेदभाव के नजर से देख रहल बा उहनिन के जीवन सुधारे खातिर अइसन समाज से दूर रहल ही ठीक बा। अइसन दू नजरी समाज में नाहीयें रहल ठीक बा।

इ समाज के ठेकेदार लोग इ सभ नइखे जानत कि लइकिन के नीच नजर से देखे वाला, आजु इ लइकी कहवा से कहां तक गइलीन स, उ लोग के कुछ कहल ना जा सकेला।

हम कहवां तक उ लोगन के बखान करीं।

मालती के सास अइसन मेहरारू के चाल चलन, कबो ना कबो हमरा बेटिन पर जरूर असर करी।

अलगा हो गइला पर मालती आपन बचल जीनगी अपना ढंग से जीयल चाहत रही।

उ इहे चाहत रही कि हम अपना लइकिन के बढ़ियां से बढ़ियां पढ़ा लिखा के उ लोग के जीनगी सुखमय बनादीं, इहे उनुकर बिचार करत रहे।

मालती अपना अंचरा में गठिया लेले रही कि केहू के बेटी कवनो बेटा से कम नइखी स, ओही तरे उ अपना बेटीन के बनावल चाहत रही।

मालती इहे सब सोच के सबूर क लेत रही कि हमार बेटी कवनो दुलरुआ बेटन से कम नइखी स।

कबिता त बहुत तेज दिमाग वाली लइकी बिया, अब त सबितो आपन योग्यता सिद्ध कके देखा देले बाड़ी।

सबिता जब माई-माई चिचियात घर में पांव रखली त मालती अपना सपना से जगली, जब मालती अपना जिनगी से अतीत में अइली त मालती पुछली– का बात ह सबिता...।

सबिता कहली– माई हई देख के आइल बा। हमार आजी आइल बाड़ी, हमरा के आशीर्वाद देबे।

मालती अपना सास के गोड़ पर आंचर के पल्लू ध के गोड़ लगली।

मालती के सास कहली– उठऽ बहू उठऽ, हमरा के त सबिता के रिजल्ट निकलला के बाद पता चलल ह त, बहुते हमरा दिल के सुनला पर खुसी भइल ह।

उ कहली कि सबिता इ बात के देखा दिहली कि इ हमार नातिन कवनो दुलरुआ बेटा से कम नइखी।

हमार प्यार दुलार आ आशीर्वाद इनका साथे बा। आजु इ हमरा मन में इ बात समझ में आइल ह कि आजु काल्ह के समाज में लइकन से बढ़ियां लइकीयो बाड़ीन स, जवन कि आपन करनी से कुल के नांव ऊंचा क देत बाड़िन स।

जाये द मालती, हमरा के माफ कई द, जवन भेदभाव इ दूनो लइकिन के साथे हम कइले बानी उ केहूए के सास अइसन मत करस, नाहि त सास के प्रति पतोहन के श्रद्धा कम हो जाई।

मालती इ बात सुन के कुछ दुखी भइली आ मने मन हंसबो कइली, आ कहली– चलऽ आजु सासू जी त इ बात के जान गइली कि बेटी केहू के बेटा से कम नइखी स, भला इ बात के त मान गइली।

आजु इनका लइकिन के योग्यता पर त विश्वास हो गइल।

बेटीन के महतारी कहाइल आजु मालती के बड़ा बढ़िया लागत रहे।

इ बात सुन के मन आ दिल एकदम गदगद हो गइल। गर्व से उनुकर चेहरा चमके लागल।

बाकिर उनुकरा लइका ना भइला के कवनो गमफिकीर ना रहे।

आजु हमार बेटी कवनो लइका से बढ़ के बाड़ी स, इहे हमरा संतोष बा।

ग्रा + पो. सेवराई
जिला- गाजीपुर– 232333 (उ.प्र.)

धत् तेरी की जय

❑ बावला

न्याय के कुर्सी पर अन्यायी कइसे लोग रही निरभय। धत् तेरी की जय।।

कोट कचहरी थाना देखा। ब्लाक सिंचाई खाना देखा।
बिजुरी बिल क हाल न पूछा लाइन काटै बिना समय। धत् तेरी की जय।।

तहसीलन में गोरखधन्धा। धूल झोंकि के करैलैं अन्धा।
दउरल करा उपासल पेटे, दया न बाटै सब निरदय। धत् तेरी की जय।।

चुनि चुनि जिन्हैं पठाईला जा। धोखा उनसे खाईला जा।
राजभोग में रजधानी के, नेताजी होइ जात विलय। धत् तेरी की जय।।

डाकू चोर लफंगा गुण्डा। भारत के करिहैं मोंछ मुण्डा।
कहै सुनै में लाज अगोंछै, कुल सभ्यता संस्कृति क्षय। धत् तेरी की जय।।

आवा रचिका आई के देखा। गंगा नई नहाय के देखा।
रामराज क सपना जागल, ना जनली मोहिं मारी धय। धत् तेरी की जय।।

संसद भवन में हाथा पाई। कुकुरन जइसे होत लड़ाई।
कवन 'बावला' दीन हीन के, सुनै दरद दुख दूर भगै। धत् तेरी की जय।।

न्याय के कुर्सी पर अन्यायी कइसे लोग रही निरभय। धत् तेरी की जय।।

– भीखमपुर, चकिया, चन्दौली (उ. प्र.)

गीत

❑ डॉ. रामनारायण तिवारी

का अगोरबि कोठिला के आन ?
लंघावे चोरिका घरे-घरे मेहरी।
समय बेमेल बा, इ समय के खेला,
घरे-घरे, बच्चा-बच्चा, लागल बा झमेला,
ढेढ़र आपन लउके नाही, फूली अनकर ताके
सभ गुड़ेरे अखियाँ .....
कट्ठा-धूरी बाटेला सियारऽ,
बइठल मानी, देखि रोवे केहरी।
नाही केहु करिन्दा, भरती पावे आँखी गुड़ेरा,
सोझा मुँह बात नाही, पीठि-पिछा हुड़ेरा,
हाथ के अपाहिज, रोज-रोज अखियाँ देखावे,
कोखिया मारे बिधुना...
का बाझो बबुआ बिअइहें,
झाँकत बीते राति-दिन डेहरी।
जवने पतल कौर थाम्हे, उहे पावे छेदा,
अफरा से गाभीन भइल, फेकि का ई लेदा,
दरबे में खोता सभकर, चिरई के चोला,
भाई-भाई जहरा.....
भेजावे रोज दूध दुहि डेयरी।
चीराबाती लोग भइले ओदा-फानी राहाता,
सोना-चानी हेठा गइले, ऊपर छापे जाहाता,
अदहन के पानी चुइ-चुइ चुल्हवे बुतावे,
अबके आई नियरा.....
जियते आपन मयजलि उठाई,
करिला काम, खाई-खाई सेहरी
पाटि-पाटि समुन्दर, दर-दर गड़हा खोनाता,
चवे-चवे, बाँटि-बाँटि, अँगना गेंड़ाता,
आपन सभे चिन्हे, अनकर लाते लतिआवे,
बच्छा दुध पियना.....
गाइ झँखे खूंटा प कसाई
हत्यारवा, पगहा लेके माँगे बेहरी।

– भइया भदवरिया, गदाधर श्लोक महाविद्यालय
रेवतीपुर, गाजीपुर– 232328 (यूपी)

जोत ना बुताई

❑ भगवती प्रसाद द्विवेदी

कतनो अन्हार आपन जोर अजमाई,
नेहिया के
कबो जोत न बुताई, नेहिया के...

दिनवा पातर, गारह रात के सियहिया
कइके करेज टाँठ झेललीं तबहिया
पीर बेसम्हार, बाकिर आँखि ना लोराई,
नेहिया के...

दुखवा बा जनमे से ओढ़ना-बिछवना
गारी-फजिहत रोज-रोज के उठवना
साँसते में साइत ई संसा टँगाई,
नेहिया के...

हाड़-मांस-लोहू के गलावे के, जरावे के
देहिया के साधि के धेनुहिया बनावे के
हक बदे होसिला के दियना बराई,
नेहिया के...

भइले रहनुमा बहेंगवा के टाटी
राज पाइ होइ गइले अवरू अबाटी
दु-दु हाथ कइके झमेल फरियाई,
नेहिया के...

जिनिगी ह जुझे के, जरे के, धन्हकावे के
जाँगर ठेठावे के आ बोझा अलगावे के
बदरी के फारि फेरु चान मुसुकाई,
नेहिया के...

– पोस्ट बॉक्स – 115
पटना– 800 001(बिहार)

रेस क घोड़ा

❑ गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश'

सबेरे क समय रहे। गरमी के दिन रहला से आठ बजे घाम अइसन चनाका उगल रहे कि बरदास्त का बाहर रहे। थोरकी दूर पैदल चलला पर कुल्हि देहिं बनबनाये लागे आ पसीना से तर हो जा। थाना क गेट पर सन्तरी बन्दूक लेले खाड़ रहे। इन्सपेक्टर रामधीरज आफिस में अइलन। बरामदा में लागल ऐनक में खाड़ होके चेहरा देखलन, वरदी देखलन कुल्हि चुस्त-दुरुस्त रहे। ऊ जाके अपना कुरसी पर बठइ गइलन। थोड़ी देर आंख मूंद के बइठलन फेनु बगल में लागल घण्टी के बटन दबा दिहलन। बाहर घण्टी घनघना के बाजल आ तुरते मुंशी जी हाजिर हो गइले।

'हजूर! का हुकुम बा?' – मुंशी जी सलाम ठोकला का बाद पुछलन। बाहर के के बइठल बा हो, बड़ा भीड़ लागल बा इन्सपेक्टर का आंख में सवाल का साथे जिज्ञासा रहे।

हाकिम! भीखमपुर के पार्टी ह। काल्ह जवन मारपीट भइल रहे ओही का बारे में आपसे बात कइल चाहत बा। ऊ लोग चाहत बा कि मामला रउवे कीहें सलट जा बाकिर पहिलकी पार्टी तैयार नइखे होत। लोग आपके सेवा सत्कार करे के तैयार बा।

कहां तक सेवाकरी लोग – इन्सपेक्टर पुछलस।

पार्टी मजबूत बा सरकार, मुंशी जी कहलन चाहब त 40-50 हजार तक हाथे लाग जाई।

'मुंशी जी?'

'जी हाकिम'

'लड़ाई झगड़ा ठीक थोरे ह। एहमे काहे न सुलह हो जाय। ठीक बा तूं पार्टी से बात करऽ बाकिर जवन कुछ होखे पहिले ले आके दे जा।'

मुंशी जी सलाम ठोकलन आ चल गइलन। थोड़की देरी क बाद ऊ लवटलन आ हाथ में नोट के गड्डी रहे। ऊ गड्डी टेबुल पर ध दिहलन। रामधीरज नोट का गड्डिन के देखलन आ मूड़ी हिलावत कहलन तूं जाके कहि द काम हो जाई। आपन हिस्सा तू लिहलऽ की ना?

हजूर! एकर एक भाग रखा गइल बा। ई बस आपके आ कप्तान साहब बहादुर आ अउरी अधिकारी लोग के ह। मुंशी जी कहलन– साहेब टेलीफोन आइल रहल ह कि नया सी.ओ. साहेब दफ्तर में बइठ गइल बाड़न। रउरा के सलाम भेजववले बाड़न। नया सी.ओ. चक्रधर शर्मा के नाम सुनते रामधीरज मुंह टेढ़ क दिहलन। मुंशी जी अब एहिजा कुछ ना होई। अइसन खराब अधिकारी आ गइल न खाई न खाये देई। आजकाल्हु जे कुछ नइखे लेत ओके लोग अच्छा ना बेवकूफ समझेला। बड़का अफसर त ई सोचेलन स कि अकेले खात बा आ ईमानदारी के नाम पर हमनी के ठेंगा देखा देत बा। एही से चक्रधर शर्मा जी साल भर छ: महीना से अधिक एक स्थान पर ना रह पावेलन। रामधीरज मुंशी का ओर तकलन– कहो मुंशी जी! नया सी.ओ. का बारे में त बड़ा सुनाता। बनल विधाता बाड़े। का लेके सलाम करे जाईं? अभी का लेके जाइब हाकिम! मुंशी जी कहलन- पहिले जाके मिजाज बूझ लेईं तब जवन सेवा करे के होखी तवन करब। लइकन के एडमिशन, गैस भरावल, सिनेमा के टिकट आ मेमसाहब के शापिंग त करवही के पड़ी। हम त ई राय देब कि एक किलो बढ़िया मिठाई ले लीं आ चल जाईं।

ठीक कहत बाड़ऽ रामधीरज कहलन– तूं एक किलो बढ़िया मिठाई मंगवा द हम लेत जात बानी। जा तनी जल्दी करिह।

अच्छा हजूर! मुंशी सलाम ठोक के चल गइल। मुंशी के मालूम बा कि पइसा कहां से आई। उहे रामधीरज के एहिजा के चाभी ह। कुल्हि मामला पटावल ओकरे काम ह। थाना भर जानेला कि जवन मुंशी जी चहिहन ऊहे इन्सपेक्टर साहेब करिहन। छुट्टी से लेके डियूटी तक खातिर मुंशी जी के सलाम ठोके वालन में कई गो दरोगा लोग बाड़न। मुंशी जी क थाना में एहघरी चलल बा। थोड़की देर बाद मुंशी जी मिठाई के डिब्बा लेले खाड़ होके सलाम ठोकलन। रामधीरज का सामने का मेज पर

डिब्बा ध दिहलन आ सलाम ठोक के चललन तबले रामधीरज फेनु बोलवलन– मुंशी जी। अभी कहां कहां ले पइसा नइखे आइल। ट्रांसपोर्ट वाला दे गइलन स सिनेमा वालन के का हाल बा। सभ दे गइल बाकिर चन्द्रा टाकिज से पइसा नइखे आइल– मुंशी जी जवाब दिहलन। ठीक बा त सिपाही शाहबुद्दीन के भेजके ओहिजा टिकट ब्लेक भइल रोकवा द। जरूरत पड़े त दू-चार गो के लाके हवालात.में डाल द। रास्ता पर लोग आ जाई त छोड़ दियाई – रामधीरज कहलन।

ठीक बा हाकिम अभी कह देइला मुंशी जी कहलन आ सलाम ठोक के चल गइलन।

रामधीरज फेनु एक बेर आइना का सोझा खाड़ होके चेहरा रुमाल से पोछलन। वरदी पर नजर डललन आ हाथ में डिब्बा उठाके आके जीप पर बइठ गइलन। ड्राइबर उनका ओर सवालिया नजर डललस मानो पूछत होखे कहां चलीं। ऊ समझ गइलन आ कहलन सी.ओ. साहेब कीहें।

जीप सी.ओ. साहेब का बंगला पर जाके रुकल। रामधीरज उतरलन। टेलीफोन ड्यूटी पर तैनात सिपाही बतवलस कि साहेब बइठल बाड़न। रामधीरज दरवाजा पर गइलन परदा हटा के अन्दर गइलन और कड़ाका के एगो सलाम ठोकलन। साहेब मूड़ी ऊपर उठा के देखलन जइसे पूछत होखसु रउरा के हईं।

थाना के नाम बतावत ऊ कहलन इन्सपेक्टर रामधीरज आ आगे बढ़के मिठाई के डिब्बा साहेब के टेबुल पर ध दिहलन आ एकदम पाछे हट के अगला हुकम के इन्तजार करे लगलन।

तू इंस्पेक्टरी कबसे करत बाड़ऽ, साहेब पुछलन।

हजूर! परमोशन भइले पांच साल हो गइल। रामधीरज जबरदस्ती मुस्कियात कहलन– आपलोग का सेवा में अभी तक कवनो कमी ना कइली। हुकम करी हजूर। तूं जनता के सेवक हउव कि हमनी के? अचानक अधिकारी पूछ दिहलन।

हमरा खातिर पहिले आप फेनु जनता रामधीरज जवाब दिहले।

अब हमे बुझा गइल कि इन्सपेक्टरी काम से ना चापलूसी से पवलऽ ह। सी.ओ. साहेब कहलन– ई मिठाई बतावत बा कि तू भ्रष्टो बाड़ऽ। एके उठा लेजा आ जनता में बाट दीहऽ। एह देस में केतने के रोटी नइखे मिलत त हमके या तोहके मिठाई खाय के का अधिकार बा। इहो मिठाई तू जेब से ना खरीदले होखब ना?

आजुकाल्ह जेब से के खरीदत बा सरकार। रामधीरज कहलन– हमनी का अइसन करीं जा त बिका जाइब जा।

ई कुल्हि तोहन लोग के बहाना ह। सी.ओ. साहेब कहलन हर भ्रष्टाचारी आपन बात दमदार बनावे खातिर कवनो न कवनो बहाना बना लेला। तूं ओही में क एगो हउव। हम तोहके एह खातिर बोलवली ह कि तोहरा क्षेत्र में जवन मारपीट भइल रहे ओहमें दूनो ओर से कारवाई करिहऽ। तूं सुलहा करावे का फेरा मत पड़िहऽ। एह में आगे काम हो रहल बा। जवना पद पर बाड़ ऊ देश सेवा क पद ह। जनता के लूटे के ना ह। पुलिस जनता क सहयोगी ह। रक्षक ह भक्षक ना। तोहरा घूसखोरी के चरचा ऊपर ले हो गइल बा। एही से हमे भेजल गइल ह। तूं सुधर जा ना त तोहार बाल-बच्चा भूखे मर जइहनस। सोचऽ जेकरा खातिर तूं घूस लेत बाड़ऽ ऊ केहू तोहरा साथे तोहार पाप काटे में साझा होखी। खाई सब भोगबऽ तूं अकेले। महकमा के छवि जवन खराब होत बा ऊ अलग। एगो बड़ भाई नीयर समझावत बानी मान जा। सी.ओ. साहब गम्भीर हो गइलन। रामधीरज सलाम कइले। सलाम में पहिले नीयर कड़क ना रहे। उनकर कुल्हि देहि कांपत रहे। ऊ चललन तबले सी.ओ. साहेब फेर रोकलन इन्सपेक्टर!

हजूर! रामधीरज घूम के देखलन।

ई मिठाई के डिब्बा लेत जा। थाना पर सिपाहिन के बांट दिह तोहार पाप बटा जाई। सी.ओ. साहेब एतना कहके डिब्बा उनकरा हाथ में थमा दिहलन। रामधीरज थाना पर लवट अइलन। काम में मन ना लागल ऊ क्वार्टर में आके सूत रहलन। ओह रात उनका नीद ना परल। रात भर सोचत रहलन। अचानक बुझाइल कि सी.ओ. साहेब सही बाड़न अबले उहे गलत रहलन ह।

ओहदिन से एगो नया इन्सपेक्टर जनम लिहलस। एकरा कर्मठता, ईमानदारी आ व्यवहार के विभाग लोहा मान गइल रहे। परमोशन के दुआर एतना तेज खुलल कि कब ऊ कप्तान हो गइलन उन्हें पता ना लागल बाकिर आजो उनका कमरा में सी.ओ. साहेब के चित्र लगल बा जवना के ऊ पूजा करेलन। उनकर जिनगी बनावे में ऊ भगवान हो गइले।

सी.ओ. साहेब अब अपर पुलिस महानिदेशक हो गइल बाड़न। उनकर रिटायरमेण्ट के समय नजदीक आ गइल बा।

सबेरे के डाक खोलत रहलन अचानक एगो चिट्ठी मिलल जेवना में ए.डी.जी. के कार्यक्रम रहे। तीन दिन बाद ऊ आवे के रहलन। रामधीरज के मन नाचे लागल। ऊ साहेब के एना बेर देखा दीहन कि उनकर उपदेश कइसे उनकर जिनगी बना देलस।

आखिर ऊ दिन आ गइल। ए.डी.जी. के इस्कोर्ट करेवाला पुलिस दल आके बलवलस कि ऊ डाक बंगला में आ गइल बाड़न। रामधीरज खुशी से झूम उठलन। उनकर मन कहे कि साहेब उनकरा के देखते गला से लगा लीहें आ पीठ थपथपइहन। आजु के रामधीरज उनही के उपदेश के फल हउवन। डाक बंगला आ गइल। रामधीरज जाइल चहलन त सन्तरी रोकलस आ कहलस पांच मिनट बइठ जाईं, साहेब फ्रेश होत बाड़न। रामधीरज अपना आ साहब का बीच में कवनो देर ना चाहत रहलन। पांच मिनट बुझा घड़ी के सूई जाम हो गइल बा। आखिर में साहेब का कमरा के घण्टी बाजल। सन्तरी अन्दर गइल फेनु बाहर आइल– सर! साहेब आपके बोलवलन ह। रामधीरज कमरा का अन्दर गइलन। साहेब कुर्सी पर पिछउड़े बइठल रहलन। रामधीरज कड़ाक सलाम कइले आ तनी जोर से बोललन- जय हिन्द सर एस.पी. रामधीरज। कैसे हो रामधीरज साहब बइठले पुछलन। ठीक बानी साहेब आपका दया से, आपका कृपा से कुल्हि ठीकठाक बानी। रामधीरज कहलन।

साहेब के कुर्सी घूमल। ऊ रामधीरज का ओर देखलन उनकरा होठ पर मुस्कान आइल आ बोललन तूं खाली हाथ मिले अइलऽ ह। तोहार मिठाई के डब्बा कहां बा?

साहब! आप मजाक मत करीं हम बदल गइली। ओह गलती खातिर मांगत बानी। रामधीरज कहलन।

तूं त बदल गइलऽ रामधीरज बाकिर चक्रधर शर्मा ओकरा बाद मर गइलन। ईमानदारी का बेदी पर दवा बिना हमार बिटिया मर गइल। लइका के पढ़ाई ठीक ना होखे पवलस। महतारी कैंसर के शिकार हो गइल। हमरा हालत से विभाग का कवनो सहानुभूति ना रहे। ईमानदारी केहूं के पसन्द ना रहे। आज एहिजा काल्हु ओहिजा लगातार तबादला हमे तोड़ दिहलस। हमें बुझाइल कि रेस में कुल्हि घोड़ा दउरत बाड़न स। हम अइसन घोड़ा बानी जवन लक्ष का उल्टा धउरत बानी। कबो ना सफल होइब। अपना खुशी खातिर आपन पूरा परिवार के खुशी भेंट चढ़ा रहल बानी जवना के कवनो हमार अधिकार नइखे। हम केतनो ईमानदार होखीं बाकिर दूसरा पर आपन सिद्धांत लादे के हमार कवन हक बा। हम अइसन बदलनी कि जवन तूं करत रहलऽ तवन हम करे लगली। जा कुछ सेवा भेंट के जोगाड़ करऽ।

रामधीरज सलाम क के जल्दी से बाहर निकल अइलन उनकरा बुझाइल साचों उनकर साहेब मू गइलन। ई उनकर साहेब ना कवनो सइतान ह जवन उनकर वेश धके छलल चाहत बा।

– B-10 पत्रकारपुरम राप्तीनगर
पो.– आरोग्य मन्दिर
गोरखपुर– 273003

कुण्डलिया

❑ हरिद्वार प्रसाद किसलय

(१)

बेटन के बात सुनि के, गइल करेजा फाट।
जहर खाईं की माहुर, डूबीं कवना घाट।।
डूबीं कवने घाट, बाट जात शरम लागे।
घर में भइनी कांट, मन करे भागे भागे।।
कह किसलय हरिद्वार, गति छूतिहर मेंटन के।
लागत बा आन्हार, सुनि के बात बेटन के।।

(२)

लोक लाज के फेर से, बापे पूछे बात।
पूत, भर मुंह ना बोले, उलटे बा अनसात।।
उलटे बा अनसात, बाप बैरी अस लागे।
मरले बाटे काठ, बोले ना सके आगे।।
कह किसलय हरिद्वार, मेटे ना मन के शोक।
उलटे पूछे बात, लाजे में छूटत लोक।।

– ग्राम + पो. – राजापुर, भाया दलीप पुर, भोजपुर– 802155

अनोखा बदला

❑ जय बहादुर सिंह

राम प्रताप सिंह आ बैसाखा सिंह के पुस्तैनी दुसमनी चलत रहे। एह दुसमनी में दुनो परिवार के करीब दस-एगारह सदस्यन के बली चढ़ि चुकल रहे। बाकी दुसमनी के आगि बुझाए के नांव ना लेत रहे। दूनो परिवार के बबे लोग के बेरा से हरमेसा कम से कम आठ-दस कीतां मुकदमा चलत रहल बा आ बदला लेबे के नया-नया तरीका खोजात रहल बा। मोका मिलला प कवनो दल बाजि नइखे आइल।

एही बीचे राम प्रताप सिंह के एक दिन फजिरहीं मृत्यु हो गइल। ओही दिन ऊपरी बेरा लास श्मसान घाट ले जाके जरा दिआइल। बाकी पूरा लास जरत जरत अन्हार हो गइल। उनुकर लइका लोग सोचल कि रात भर अइसहीं छोड़ दिहल जाय। जब राख पूरा ठंडा हो गइल त काल्हु फजिरे इतमिनान से अस्थि चुनि के ओनिये से ओनिये दू आदमी जाके गंगा जी में विसर्जन क दी जैसे बाबूजी के आत्मा के शान्ति हो जाई।

ई फैसला सुनि के बैसाखा सिंह के दिमाग में बदला लेबे के एगो नया तरीका सूझल। ऊ भोरे तीनिये बजे अपना बेटा के संगे श्मसान घाट जाके, पूरा राख उटकेरि-उटकेरि सब अस्थि चुनि के एगो गंदा गड़हा के पानी में डाल दीहले। सोचले अब राम प्रताप के अस्थि ना गंगा जी में बिसर्जन होई, ना इनिकर तरन हो सकी। इनिकर आत्मा भूमंडल में चारू ओर बेचैन जुग जुग तक शान्ति खातिर मंडरात रही। सफलतापूर्वक ई काम पूरा क के बैसाखा सिंह के बड़ा सुख मिलल। आखिर केहू अपना दुसमन के एह से बड़ दुख अउरी का दे सकला।

– होल्डिंग न.5, क्रास रोड- 3
जोन नं. 4, विरसा नगर, टेल्को, जमशेदपुर–831004

लघु कथा

छपला के उमंग

❑ डॉ. दिनेश प्रसाद शर्मा

'ए माई, हई देखु, आजु हमार एगो कविता अखबार में छपल बा।'

माई देखि-पढ़ि के बड़ा खुस भइल। बोलल– भगवान तहरा के अउरी तरक्की देसु। तहार नांव दूर-दूर तक फइलो।

उनुकर भतीजा जवन ओहिजे खाड़ होके अपना बड़का बाबूजी के छपल कविता पढ़ते रहे तले ओकर माई आइल आ अपना बेटा के लगभग घिसिआवते लेके चलि देलस, बड़बड़ात– 'करे एहिजा का करता बाड़े मुँहझउसा, चल हट इहवां से। तोरा के कवन बड़का लेखक बनके तीर मारे के बा?'

देखते-देखते ओह मासूम के गाल प ओकर महतारी के दू-तीनि चटकन लागि चुकल रहे।

कविता छपला के उमंग ओह चटकन के आवाज में ना जाने कहवां हेरा गइल रहे?

– मुहल्ला व डाकघर – अनाईठ (आरा)
(प्रसाद पेपर वर्क्स के निकट)
जिला– भोजपुर (बिहार) 802301

मई माह के पर्व-त्योहार

१.	रवि	: मई दिवस	१९.	गुरु	: एकादशी व्रत स्मार्त
४.	बुध	: वरुथिनी एकदशी सबका	२०.	शुक्र	: एकादशी वैष्णव, ११ शरीफ
५.	गुरु	: प्रदोष व्रत	२१.	शनि	: शनि प्रदोष व्रत
८.	रवि	: स्नान दान की अमावश्या	२३.	सोम	: बुद्ध पूर्णिमा, वैशाख पूर्णिमा
११.	बुध	: अक्षय तृतीया	२६.	गुरु	: श्रीगणेश चतुर्थी
१२.	गुरु	: वैनायकी गणेश चतुर्थी	३१.	मंगल	: शीतलाष्टमी (बसियउरा)

स्वामीहन्ता जोग

❑ अंजन जी

बात 1975 के कातिक अगहन के हवे। ओ घरी हम सरकारी स्कूल में अध्यापक रहनीं। लरिका बतवलें सन कि घोरठ गाँव में एगो पिल्ली बिसहरिया बच्चा बियावल बिया। बिसहरिया पिल्लन के बीस गो नोंह होला आ बड़ा तेज मानल जाले सन। मन में लालच समा गइल। लरिकन से मँगवनी। झोरा में ध के ओकरा के घरे ले अइनीं। छव-सात किलोमीटर के रस्ता रहे। महरा देउर चट्टी पर ओकरा के एक गिलास दूध पियवनी। रस्ता में जब ओकरा पेशाब लागे; त कोंकियाये लागे। निकालि के भुइयां उतार दीं। पेशाब कइला का बाद फेरू से झोरा में बइठा दीं।

घरे अइला पर जब मलिकाइन देखली त नांक-भौं सिकोड़े लगली। कारण रहे– एकरा पहिले के पिल्लन के झाड़ा-पेशाब धोवत-धोवत तंग आ चुकल रहली। बाकी जब हम बतवनी कि ई पिल्ला अउरी सब पिल्लन से बहुत माने में बढ़िया बा– त मान गइली।

जवने तरह कवनो नेता साफ पाजामा-कुर्त्ता में पहचानल जाला, ओही तरह ई पिल्ला साफ झब्बरदार देहाती पिल्लन से अलगे अपना पहचान वाला रहे। समय बीते लागल– पिल्ला बढ़े लागल। कुछु दिन ले त एकरो पाखाना-पेशाब साफ करे के परल– बाकी जब बड़ूर हो गइल त साधू-सन्त का तरे घर से दूर कहीं जा के पाखाना-पेशाब करे आ मलमूत्र त्यागला का बाद पोखरा में जा के नहा के तब दुआर पर आवे। एकर काम देखि के एकर नांव शेरू धराइल। का मजाल जे केहू के बकरी-गाइ दुआर का ओर झांके। कवनो भिखमंगा-साधू भी डरे दुआर काँड़ल छोड़ि दीहले।

समय बइठल ना रहेला। शेरू सेयान हो गइले। बढ़ियां भोजन मिलत रहे। जब कुआर के महीना आइल त शेरू के गर्मी देहि में उठल। दुआर छोड़ि के सरेह में चुपे से राति में निकल जासु। हर गांव में देहाती पिल्लन के जमात होला। दोसरा गांव के पिल्ला के देखि के एके बेरि सगरो हांव-हांव क के परि जाले सन। डीह पर, मूंजबानी में आ मोड़ पर ओकनी के जमावड़ा देखे में आवेला। खास क के कुआर-कातिक ओकनी के संगम के सीजन हवे।

शेरू जब सीवान हेले लगले त तीन-चार गांव के पिल्ला उनके हजामत बना दीहले सन। गतर-गतर में ओकनी के दांत के घाव हो गइल। एक दिन लेरूआइल-घायल होके अइले। का कइल जा। दवा-मरहम भइल। ओ साल नीरोग हो गइले। रात भर जागल रहसु। एक दिन हमरा घर में चोरी हो गइल। हमनी का निश्चिन्त होके सूति गइनीं जा, जे शेरू का रहते अब चोर लोग एने ना झांकी। बाकी ओह दिन शेरू का ऊपर कुंभकर्ण के सगरो उंघी सवार रहे। अइसन सूत गइले जइसे कवनो हारल नेता रिजल्ट सुनला का बाद कहीं लुका के सूत जाला। शेरू अब फेरू जवान हो गइल रहले- बाकी कवनो कामे ना अइले। ऊहे कातिक-अगहन के महीना रहे। उनुका गर्मी ना खेपाइल। सरेह में निकलि गइले। ए बेरी उनके गर्दन में काटि दिहले सन। कुकुर के घाव ओकरा चटला से मेंटि जाला। बाकिर गर्दन के घाव चाटसु कवने तरह। घाव सड़े लागल। बसाये लागल। आन्हर हो गइले। जेने जासु- लोग दूर-दूर क के डन्टा लेके चोटियावे लागे। लउकत ना रहे – भागत फिरले। पानन महुअवां पंडित जी लोग के गांव हवे – जवन हमार गांव का बगल में बा। भागत-भागत एक दिन पानन में एगो पंडितजी का घर में घूसि गइले– आ एगो डेहरी का कोने में जाके प्राण त्याग दीहले। नाक बंद क के ऊ लोग उनुका निकालि के गांव का बहरा चौवरा में फेंकि आइल। हमरा उनुका मर गइला पर तनी अफसोस भइल।

दोसरा दिने महुंअवा में आचार्य हरि नारायण बाबा कीहां जाके पतरा खोलववनीं आ पंडित जी से शेरू के बारे में जाने चहनीं। पंडित जी बतवनीं कि अंजन जी, शेरू के सब लक्षण नेता के रहे। पूर्वजन्म में ऊ बड़का नेता रहले– ढेर घोटाला कइले, सरकारी पइसा खइले। जनता के हक हड़पले। विरोधी

लोग के लापता करवले। बाकी ओ टाइम में उनुके कवनो अपराध कानून का पकड़ में ना आइल। कानून सबूत खोजेला। एको सबूत एको गवाह ऊ छोड़ले ना रहले। बंचत गइले। सगरो लक्षण दबंग नेता के रहे। ए जनम में शनिचर के कुदृष्टि परल रहे। एगो खाना में उनुका स्वामीहन्ता जोग रहे। एही से ओ जनम में सजाई ना पवले– बाकी ए जनम में उनुके सगरो विरोधी जवन मरि गइल रहले सन, कुकुर होके उनुके काटि-काटि के अपना दुख के बदला चुका देहले सन।

– अमहीं बांके
पो. सोहनरिया भाया कटेया
जिला- गोपालगंज (बिहार)
पिन– 841437

गीत

हर सिंगार हो गइल

❖ गौरीशंकर मिश्र 'मुक्त'

जब से गीतिया से हमरो पियार हो गइल।
तब से जिनगी हमार, हरसिंगार हो गइल।
सूनसान रतिया में, अचवेक जगावे,
हंसि-हंसि के हमसे, पिरितिया जतावे,
जबसे ऊगल भउवा कचनार हो गइल।
तबसे जिनगी हमार, हरसिंगार हो गइल।।
केहू ना टिक पावे, अब एकरा आगे,
चानी क रूपवा अब, जुगनू अस लागे,
जब से रोम-रोम एकर, पइसार हो गइल।
तब से जिनगी हमार, हरसिंगार हो गइल।।
बंहिया पकड़ि के ई, रहिया देखावे,
नीमन आ बाउर क, भेदवा बतावे।
जब से करम-धरम एकर, उपकार हो गइल।
तब से जिनगी हमार हरसिंगार हो गइल।।
एकरे निहोरा से, मनई हम भइलीं,
मानवता के जावेक, गरवा लगवलीं,
जबसे एकर बिचरवा, हमार हो गइल।
तब से जिनगी हमार, हरसिंगार हो गइल।।
मुक्त कहिके ईहे हंसि, हमके बोलवलसि।
मानव क सेवा क, मेवा चखवलसि।।
जब से हमनी क सगरो, संसार हो गइल।
तब से जिनगी हमार, हरसिंगार हो गइल।।

– रेवतीपुर, रुपाण पाण्डे पट्टी, गाजीपुर

- "भोजपुरी माटी" अपने ह्वे के ह, एकर प्रचार प्रसार करीं।
- "भोजपुरी माटी" पढ़ीं लोगन के पढ़ाईं आ आपन विचार लिखीं। राउर चिट्ठी हूबहू "राउर-चिट्ठी" स्तम्भ में छपी।
- "भोजपुरी के बढ़त डेग" स्तम्भ खातिर अपना-अपना इलाका के प्रगति समाचार जरूरे भेजे के किरिपा करीं।
- मौलिक आ अप्रकाशित रचना ही भेजीं कहीं अउर ठहर भेजल आ छपल रचना के फेरू छपवाए खातिर मत भेजीं। ई लेखकन से विशेष निहोरा बा।
- 'भोजपुरी माटी' के सालाना / त्रय वार्षिक / पंच वार्षिक / आजीवन जे कवनो ग्राहक-सदस्य बन के भोजपुरी के मजबूत करीं।

—प्रबंध सम्पादक

"कहानी महाभारत क"

❑ वीरेन्द्र पाण्डेय

(पिछला अंक में जरासंध क मराइल, शिशुपाल क मराइल, राजसूय यज्ञ क पूरा भइल, युधिष्ठिर क जुआ में सब कुछ हारल, भरल सभा में द्रौपदी क अपमान, पांडवन क तेरह बरिस क वनवास आ एह अवधि में काम्यक वन में रहला क बारे में पढ़नी। अब आगे बढ़ला क काम बा...)

काम्यक वन में पांडव बहुते आनन्द से जीवन बितावे लगले। ऋषि-मुनि आ महात्मा लोगन से मिलल आ उनुका उपदेशन से शिक्षा ग्रहण कइला में मन लाग गइल। कबो-कबो उनुका लोगन से कथा-कहानी सुने क मिले। कहानीयन में नल-दमयंती, अगत्स्य, लोपा-मुद्रा, ऋषि श्रृंग, अष्टावक्र आदि प्रमुख रहल। एह कहानीयन से ओह लोग के शिक्षा मिलल कि सब समय एक समान ना होला। आफत अइला पर घबराये के ना चाहीं। धीरज से काम लेवे के चाहीं। काम्यक वन में पांडवन क जीवन सात्विक आ अवरु धार्मिक हो गइल। अब तक उनके वनवास क खबर चारु ओर फइल चुकल रहल। इन्द्रप्रस्थ आ हस्तिनापुर क वासी त खबर पाइ के दुखी होइये चुकल रहले बाकी सबसे अधिक दु:खी पांचाल राज द्रुपद आ द्वारिका-मालिक श्री कृष्ण रहले। श्रीकृष्ण से ना रहाइल आ ऊ पांडवन के सांत्वना देवे खातिर काम्यक-वन चल पड़ले। इहां आके बहुत कुछ समझवले बुझवले आ ढांढस दिहले। घूमत-घामत एक बार व्यास जी काम्यक वन पधरले। पांडव लोगन से भेंट कइ के कहले कि युधिष्ठिर अब समय मिल गइल बा कि तू लोग आगे होखे वाला युद्ध खातिर दिव्य-अस्त्रन के चलावे क ज्ञान प्राप्त कइ लऽ। बिना एकरा तइयारी के भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य जइसन महारथियन से सामना ना कइल जा सके। युधिष्ठिर के बात जंच गइल। ऊ व्यास जी से पूछले कि एकर का उपाय बा। व्यास जी बतवले कि अर्जुन कइलास परवत पर जाइ के भगवान पशुपति नाथ के अपना तपस्या से खुश कइके अइसन अस्त्र पा सकेले। तहरा लोगन के इन्द्र आदि देवतावन के खुश कइ के अमोघ अस्त्र पा लेवे के चाहीं। अइसन जब हो जाई त तोहरा लोगन से केहू पार ना पाई। भले ही कौरवन का पासे एक से एक महारथी भा अपार सेना होखे। ई कह के व्यास जी उहवां से चलता बनले।

महर्षि व्यास के बतावला क अनुसार युधिष्ठिर अर्जुन के कइलास परवत पर जाये आ पशुपति नाथ के तपस्या कइ के खुश करे खातिर उकसवले। ऊ इन्द्र, वरुण आदि देवतावनो क उपासना करे क सलाह दिहले। जब तक भगवान पशुपति नाथ के प्रसन्न कइ के "पशुपत" नांव क दिव्यास्त्र नइखे पावल जा सकत तब तक हमनी का कौरवन के नइखीं जा हरा सकत। तपस्या आ दिव्यास्त्र पावे क बात सुन के अर्जुन क रोवां गनगना गइल। नस-नस में गरम खून बहे लागल। मुख-मण्डल जगमगा उठल। कहले कि आप के आज्ञा क जरूर पालन होई आ हम कवनो कोर-कसर उठा ना राखब। ई कहि के बहुते उत्साह से तरकस बंधले आ हाथ में धनुष लेके भगवान शंकर क धियान धरत कइलास परवत का ओर चल दिहले।

चलत-चलत कुछ दिन बाद "गंध-मादन" परवत अइसन विकट चोटियन के पार करत एक दिन कइलास परवत पर पहुंचले। देखले कि राहे पर एगो जटाधारी बूढ़ तपस्वी बइठल बा। सोचले कि एही बाबा से कुछ जानकारी ले लीं। ऊ नजदीक जाइ के परनाम कइले। बाबा अर्जुन से कहले कि बचवा ई तपोभूमि हऽ। इहवां केहू अस्त्र लेके ना चले। तू के हवऽ, केकरा के खोजत बाड़ऽ? सिर नवा के अर्जुन बोलले, "बाबा, हम क्षत्री हईं। अबहीं हम क्षत्री-धर्म छोड़ले नइखीं त अस्त्र कइसे छोड़ दीं।" अर्जुन के एह जवाब से तपस्वी बहुते खुश भइले आ अपना असली रूप में प्रकट होत कहले कि बच्चा तू जवन चाहऽ वर मांग लऽ। ई तपस्वी अवरु केहू ना खुद देवराज इंद्र रहले। इन्द्र के देखते अर्जुन धधाइ के चरण छुअत कहले कि

अगर अइसन बात बा त आप हमरा क आपन दिव्यास्त्र देवे क कष्ट करीं। हम आप से एकर शिक्षो ग्रहण करब। इन्द्र बहुत प्रसन्न भइले आ कहले "बेटा अर्जुन, तू भगवान शंकर के प्रसन्न कइके पहिले 'पशुपत अस्त्र' पावे क कोशिश करऽ एकरा बाद दोसर देवता लोग तहरा के अपने आप आपन दिव्यास्त्र दे दिहें।" एह अस्त्रन क प्रयोग मानव पर मनाही रहल एह से इन्द्र पूछले कि एह अस्त्रन क प्रयोग केकरा पर करबऽ। अर्जुन कहले, हम एकर दुरुपयोग ना करब हमार अभिप्राय खाली शक्ति-संचय क बा। कौरव छल कइके हमरा बड़ भाई युधिष्ठिर से हमनी क राज छीन लेले बा लोग। हमनी के तेरह बरिस क वनवास मिलल बा। राज घराना क होइयो के वन-वन मारल फिरत बानी जा। इन्द्र अर्जुन के आशीर्वाद दिहले कि घबड़ाये के ना धीरज से काम लऽ। एक दिन तू जग-जाहिर महा प्राक्रमी बीर होखबऽ। ई कहि के देवराज इन्द्र अंतर-धान हो गइले।

अर्जुन बिना खइले-पीयले भगवान शंकर क उपासना में लीन हो गइले। दिन पर दिन उनुकर तपस्या कठोर से कठोर होत गइल। तपस्या के करत अर्जुन क पांच महीना हो गइल रहे। एही बीच एक दिन भगवान शंकर पारवती जी के साथ अर्जुन के तपोभूमि का ओर चलले। अर्जुन अभी फूल ले के पूजा खातिर अइले रहले कि जंगल से घुरघुरात एगो वाराह निकलल। ओकरा के मारे खातिर अर्जुन अपना धनुष पर अबहीं वाण रखते रहले कि देखले कि एगो किरात ओही वाराह के मारे खातिर ओकरा पीछा-पीछा वन से निकलल। अर्जुन किरात के बिना कवनो चिंता कइले तीर चला दिहले। ओने किरातो वाराह पर तीर चलवलस। दूनो जना क तीर वाराह के लागल। वाराह देखते-देखत छन मात्र में मर गइल। अर्जुन खिसिया के किरात से बोलले कि जब हम तीर वाराह पर चला देले रहनी हंऽ, त तू काहें तीर चलवल हऽ। किरात ठठा के हंसल आ कहलस कि वाराह के त हम पहिलहीं निशाना बनवले रहनी हंऽ। किरात के हंसत खड़ा देख के अर्जुन आपन अपमान समझले आ ओकरा पर आपन तीर चला दिहले बाकिर ओह तीर क ओकरा पर कवनो असर ना परल। क्रोध से पगला के धनुष फेंक के अर्जुन तलवार से वार कइले। तलवार ओकरा देह से टकरा के टूक-टूक हो गइल। अब कवनो उपाय ना देख के अर्जुन किरात से मल्ल-युद्ध करे लगले। कई घंटों तक लड़ाई होत रह गइल। अंत में अर्जुन थाक गइले आ अचेत हो के गिर गइले। किरात अइसहीं जइसन क तइसन खड़ा रहल। जब अर्जुन के होस आइल त सोचले कि अबहीं हम अपना इष्टदेव क पूजा नइखी कइले। पहिले पूजा कइ लीं एकरा बाद इन्हिका से फरियाइब। इहे बात ऊ किरातो से कहले। किरात राजी हो गइल आ हंसत कहलस कि पूजा कइ के आपन बल बढ़ा लऽ। ई आपन अपमान समझले बाकिर बरदास्त कइ के पूजा करे लगले। पूजा करत बार-बार अर्जुन क मन में ई बात उठत रहल कि कहीं किरात के भेष में भगवान शंकर त ना हवे। ऊ मंत्र-जाप कइ के शिवजी क मूर्ति पर फूल-माला चढ़वले आ उठले। ऊ देख के चिहा गइले कि जवन माला हम शिवजी क गला में पहिरवले रहनी हऽ ऊ माला किरात क गला में कइसे आ गइल। अर्जुन क भरम टूटल आ समझे में तनकियो देर ना लागल कि भगवान शंकरे किरात क रूप में आइल बाड़े। ऊ आतुर होके भक्ति-भाव से उनुका के साष्टांग प्रणाम कइले। जब सिर उठवले त देखले कि सामने भगवान शंकर पार्वती के साथ विराजमान बाड़े। भगवान शंकर गंभीर स्वर में कहले कि वीर अर्जुन हम तहार तपस्या देख के बहुत प्रसन्न भइनी। तू जवन चाहऽ मन के मुताबिक वर मांग लऽ। अर्जुन क मन प्रफुल्लित हो गइल। ऊ भगवान शंकर के पाशुपत-अस्त्र देवे क विनती कइले। भगवान शंकर पाशुपत-अस्त्र दे दिहले आ एकरा के चलावे आ रोके खातिर मंत्र बतवले। अंत में इहो कहले कि एकर प्रयोग मानव पर मनाही बा।

पाशुपत-अस्त्र पवला क बाद जब अर्जुन आवत रहले त रास्ता में इंद्र क सारथि "मातलि" के रथ लेके राह देखत पवले। मातलि अर्जुन से कहले कि आपके देवराज इन्द्र बोलवले हऽ। उहवां सब देवता लोग आपके वाट देख रहल बा। उहवां चल के महारथ अपनाईं आ ओकरा प्रयोग से देवता क शत्रु असुरन क विनाश करीं।

एह निमंत्रण के पाइ के अर्जुन क मन फूला न समाइल। ऊ ओह सजावल रथ पर बइठ गइलन। मातलि वागडोर सम्भरले। रथ हवा से बात करत अनेक लोकन से घूमत इन्द्रलोक पहुंचल। इन्द्र, यम, वरुण, अग्नि आदि देवता लोग अर्जुन क स्वागत कइल।

उनुका के एगो सुन्दर सुसज्जित स्थान पर ठहरावल गइल।

इन्द्र लोक में देवता लोग आपन आपन दिव्य अस्त्रन के चलावे के शिक्षा अर्जुन के दिहले आ कहले कि एही अस्त्रन से असुरन क संहार होई। अर्जुन के पराक्रम क गाथा चारू ओर फइल गइल। इन्द्र लोक में रहत पांच बरिस कइसे बीत गइल कुछ पते ना चलल।

एक रात अर्जुन अपना कमरा में लेटल अपना भाई लोगन आ द्रौपदी के बारे में सोचत रहले। ऊ स्वर्ग के सुखी जीवन क तुलना धरती पर कष्टकर जीवन से करे लगले आ सोचले कि एह दूनों में अतना अन्तर काहें बा? एही तरह के विचारन में अर्जुन बूड़त-उतरात रहले कि इन्द्रलोक क सुन्दरतम अप्सरा उर्वशी उनुका कमरा में आके उनुका बिछवना पर बइठ गइल। अर्जुन चिहा गइले। झट बिछवना से उठके विनय क साथ हाथ जोड़ के कहले, "माता, एह समय में आवे क कष्ट काहे कइल गइल हऽ?" उर्वशी अइसन बात सुन के दंग रह गइल। ओकरा तनिकियो उमेद ना रहल कि अर्जुन अइसन बात कहीहें। अपना के संभारत कहलसि– "पार्थ! अइसन सम्बोधन से हमरा के मत लजवावऽ। एगो अप्सरा कबहीं केहू क माता आ बहिन ना बन सके। हम तहार कामना कइ के आइल बानी।" अर्जुन ओही विनम्र भाव से कहले कि अगर अइसन बात बा त माता, तहार ई कामना कबहीं सफल ना हो सकी। आप देवराज इन्द्र क अमानत हईं आ देवराज इन्द्र हमार गुरु हवे। हमरा पर आपन कृपा-दृष्टि बनवले रहीं इहे बहुत बा। हम इहवां पर शस्त्र आ नृत्य-संगीत क शिक्षा लेवे खातिर आइल बानी। सब केहू जानत बा कि विद्यार्थी क धरम भोग ना बलुक तपस्या हऽ। फेनु आप क गिनती संगीत आ नृत्य शास्त्र के आचार्य गंधर्वन क कतार में होला एह से हमार आचार्य आप बानी। हमनी क सम्बन्ध गुरु-शिष्य क बा आ एकरे के बनवले रखला में दूनो क कल्याण बा।

उर्वशी बहुते तरह से अर्जुन क अपना ओर लुभावे क कोशिश कइलसि बाकिर बेकार। अर्जुन टस से मस ना भइले आ अपना मरयादा पर डटले रहि गइले। जब उर्वशी क कवनो दाल ना गलल त अन्त में झल्ला के अर्जुन के श्राप दिहलसि कि जा, तू एक बरिस तक निवीर्य रहबऽ। ऊ कहलसि कि ई श्राप हम एगो कामिनी क रूप में देले बानी बाकिर तू हमरा के माता कहले बाड़ऽ एह से आशीर्वाद देत बानी कि ई श्राप तहरा खातिर एक दिन वरदान सिद्ध होई। जब तहरा एक साल क अज्ञात वास भोगे के पड़ी ओह घरी तू अपना के नपुंसक का रूप में छिपा सकबऽ। तहरा क केहू पकड़ ना पाई। ई कहि के उर्वशी विदा भइल।

बहुत दिन गुजर गइल। अर्जुन क कवनो अता-पता ना चलल। कवनो समाचार ना पाइके पांडव चिंतित रहे लगलन। एही बीच बहुते ऋषि आ मुनी लोग पांडवन क अनेक तरह क शिक्षा दिहले। पांडव जप-तप, वेद-पाठ आदि में आपन जीवन गुजारे लगले बाकिर बार-बार ओह लोगन क ध्यान अर्जुन का ओर चल जात रहल। कुछ दिन बाद महर्षि नारद घूमत-फिरत पांडवन क पास अइले आ खुशखबरी दिहले कि अर्जुन इन्द्रलोक में बाड़े आ उनुकर कुशल-समाचर लेके महर्षि लोमस तहरा लोगन किहां आवहीं वाला बाड़े। घबड़ाये क काम नइखे। इन्द्रलोक में ऊ शिक्षा प्राप्त कर रहल बाड़न। अर्जुन क समाचार पाइ के पांडव बहुते खुश भइले। अब लोमश ऋषि क आवे क राह तकाये लागल। एक दिन लोमश ऋषि आ पहुंचले। पांडव लोग बड़ा श्रद्धा आ भक्ति से उनुकर स्वागत कइल। अर्जुन क समाचार सुने खातिर ई लोग ब्याकुल रहल। पूछला पर ऋषि कहले कि अर्जुन शंकर भगवान क तपस्या कइ के पाशुपत-अस्त्र ले लेले बाड़े। स्वर्ग में देवता लोगन से दिव्य अस्त्रो ले लेले बाड़े। अब गंधर्व आ अप्सरा उनुका के संगीत आ नृत्य क शिक्षा दे रहल बा। किछुवे दिन में ऊ एहू विद्या में पारंगत हो जइहें। युधिष्ठिर से कहले कि महावीर अर्जुन आपके आ भीमसेन के आपन प्रणाम भेजले बाड़न। नकुल आ सहदेव के स्नेह अवरु द्रौपदी के प्रेम भेजले बाड़े।

अर्जुन क कुशल-क्षेम से पांडव खुशी में झूम उठले। युधिष्ठिर लोमश ऋषि से विनती कइले कि भगवान, जब तक अर्जुन देवलोक से शिक्षा पूरा कइके आवत बाड़े तब तक आप हमनी के तीर्थन क दर्शन करा दीं। महर्षि नारदो क अइसने सलाह बा। लोमश ऋषि बहुते खुश भइले। कहले शुभ काम में देरी काहें। पांडवन के लेके तीर्थ-भ्रमण खातिर चल पड़ले। पहिले ऊ नैमिबारण्य पहुंचले। इहवां क तपोवन बहुते ऋषि-मुनियन से भरल पड़ल रहे। उहवां के शांत आ सुहावना शोभा देख के पांडव मुग्ध हो गइले। कुछ दिन इहवां रहला के बाद

प्रयाग राज, वेद तीर्थ, गया होत तीर्थन के देखत, रास्ता में धर्म कथा सुनत 'गंगा सागर' नांव क प्रसिद्ध तीर्थ स्थान पर पहुंचले। कहले गइल बा "सब तीरथ बार-बार, गंगा सागर एक बार"। उहवां से वेतरनी नदी आ कलिंग पार करत प्रभास तीर्थ आइल लोग। ई यादव बाहुल्य इलाका रहल। यादव लोग पांडवन क भव्य स्वागत कइल। सुभद्रा बहुते प्रेम से धधाइ के द्रौपदी से मिलली। बलराम आ कृष्ण जी पांडवन के सांत्वना आ ढांढस दिहले कि घबड़ाये के ना चाहीं। धैर्य से काम लेवे के चाहीं। धैर्य क फल मिठा होला। कई दिनन तक यादवन क आतिथ्य-सत्कार के बाद पांडव आगे चले के तइयारी कइले। चलत-चलत लोमश ऋषि के साथ सरस्वती नदी के पार कइ के सिन्धू तीर्थ होत कश्मीर पहुंचले। कश्मीर से विपसा नदी पार कइ के हिमालय क सुवाहु राज्य में पहुंचल लोग। कुछ दिन उहवां के राजा क आतिथ्य-सत्कार पावला क बाद "गंध मादन" पर्वत का ओर चल दिहल। जब सब लोग गंध मादन पहाड़ का एगो चोटी पर चढ़े लागल ओही घरी बहुते जोर क आंधी-पानी आइल। शिला खंड गिरे लागल। तवना का बाद मूसलाधार बारिस शुरू भइल। कवनो तरह पेड़न का ओट में आपन जान बचावल लोग। जब बारिस बन्द हो गइल त गते-गते चलत एगो बहुते सुन्दर स्थान पर पहुंचल लोग। ई स्थान "बदरिका" आश्रम रहल। इहवां क प्राकृतिक छटा मन के मोह लिहलस। आराम करे खातिर इहवें ऊ लोग डेरा डाल दिहल। फेनु आगे बढ़ले।

"द्वैत वन" होत पांडव एक दिन "काम्यक वन" पहुंचले। ई समाचार कृष्ण के मिलल ऊ आके ओह लोगन संगे मिलले। युधिष्ठिर बतवले कि अर्जुन घोर तपस्या कइ के शंकर भगवान से पाशुपत-अस्त्र ले लेले बाड़े आ अब इन्द्रलोक में देवता लोगन से दिव्य अस्त्र ले रहल बाड़े। ई सुन के कृष्ण बहुते खुश भइले। द्रौपदी के धैर्य दे के कृष्ण द्वारिका पुरी लौट गइले।

वन में पांडवन क कठोर-जीवन क समाचार हमेसा दुर्योधन के मिलत रहल। ओकरा मन में पांडवन क नीचा दिखावे क भावना उठल। ऊ सोचलस कि वन में जाइ के अपना वैभव के देखावे के चाहीं। एही से कर्ण आ शकुनि के साथ द्वैत-वन जाये क आपन योजना बनवलस। एकरा खातिर धृतराष्ट्र से आज्ञा ले लिहलस। धृतराष्ट्र अइसे त आन्हर रहबे कइले, पुत्र-मोह उनुका के अवरु आन्हर बना देले रहल। अब का कहे के? आपन वैभव देखावे के रहल। सोना-चांदी, हीरा-मोती से जड़ित रथ तइयार करावल गइले सऽ। हाथियन पर बहुमूल्य रत्नन से जड़ित हउदा कसवावल गइले स। कर्ण आ शकुनि के साथ दुर्योधन अपना रानियन के लेके द्वैत-वन आ पहुंचले। पांडवन के दुर्योधन क आवे क समाचार मिल गइल रहे। लोग आ-आ के कौरवन के अपार ऐश्वर्य आ आलीशान ठाट-वाट क बड़ाई करे। युधिष्ठिर सब सुन के चुप लगवले रहसु।

कौरव राज परिवार वन क एगो विशाल जगह में आके टिकल रहे। दुर्योधन शिकार करे में मस्त रहत रहले। पास में एगो सुन्दर तालाब रहे। एक दिन दुर्योधन क इच्छा भइल कि रानियन के साथ एह तालाब में स्नान कइल जाउ। स्नान करे क त एगो बहाना रहल। ओकर मुख्य मकसद रहे जल-क्रीड़ा क जरिये पांडवन का सामने आपन वैभव देखावल। काहे कि ओही तालाब क किनारे पांडव आपन कुटी बना के रहत रहले। तालाब क दूसरा तट क जमीन साफ करावे खातिर दुर्योधन अपना आदमी जन को भेजले बाकिर ओकरा पहिलहीं गंधर्वन क राजा चित्रसेन अपना साथीयन क संग उहवां ठहरल रहले। उहो जल-क्रीड़े खातिर आइल रहले। ऊ दुर्योधन क आदमीयन के मार-भगा दिहले। कहले कि जब तक हमनी का इहवां बानी केहू इहवां आ ना सके। दुर्योधन क आदमी-जन मुंह लटकवले चल गइल।

अपना आदमियन से गंधर्वन क बात सुन के दुर्योधन खिसी तिलमिला गइल। गंधर्वन क निकाल-बाहर करे खातिर आपन सशस्त्र सेना भेजलस। कुछ सैनिक जाके गंधर्वन से कहले कि ई जगह जल्दी से खाली करऽ लोग। महाराज दुर्योधन स्नान करे खातिर अबहियें आ रहल बाड़े। ऊ लोग कहल कि ई जगह दुर्योधन क बपौती ना ह। हमनी का पहिले से आइल बानी आ इहवें रहब। एकरा खातिर चाहे किछुओ हो जाउ। दुर्योधन क सेना उल्टे पावें लवटि आइल आ निमक-मिरचा लगा के उनुका से सब समाचार सुनवलसि। समाचार सुनते दुर्योधन, कर्ण आ शकुनि के लेके गंधर्वन से लड़े खातिर पहुंचल। कर्ण क वाण-वरसा से गंधर्व व्याकुल हो गइले। एने दूनो ओर से घनघोर लड़ाई चलत रहे ओने गंधर्वन क राजा चित्रसेन अप्सरावन का संगे जल-क्रिड़ा में निमग्न रहले। जब लड़ाई क खबर पवले

जल्दी जल विहार छोड़ के समर-भूमि में पहुंचले आ कौरव सेना पर वाण बरसावे लगले। कौरव सेना में भगदड़ मच गइल। समय क तकाजा देख ऊ सम्मोहन अस्त्र छोड़ले जवना से लोगन में मोह आ गइल। एही बीच चित्रसेन कर्ण के रथ काट दिहले। कर्ण भयभीत होके जान बचावे खातिर दोसरा रथ पर सवार होके भागल। चित्रसेन दुर्योधन के पाश में बांध लिहले। कौरवन क रानियन क बन्दी बना के रथ में बइठा क स्वर्ग लोक चल दिहले। दुर्योधन पानी-पानी हो गइले। लज्जा से मुड़ी झूक गइल। रानी लोग बचावऽ-बचावऽ क गुहार युधिष्ठिर, भीम आदि से करे लागल।

युधिष्ठिर ई पुकार सुनत रहले। एही बीच दुर्योधन क मंत्री गिड़गिड़ात कौरवन पर आइल विपदा क बात कहत युधिष्ठिर से ओह लोगन के छोड़ावे क विनती कइले। युधिष्ठिर अधीर हो गइले। बाकिर भीम मने-मन खुश रहले कि दुर्योधन के ठीक दवाई दियाइल बा। जे जइसन करेला ओकर फल ओइसने पावेला। युधिष्ठिर भीम के समझवले कि ई हमनी क इज्जत क सवाल बा। ई सब हमनी के खानदान क महिला हई एह लोगन क छोड़ावल हमनी क धरम बा। बहुत समुझवला बुझवला पर भीम तइयार भइले। ऊ लोग गंधर्वन के लालकारल। तब तक अर्जुनो आ गइल रहले। अर्जुन क 'दिग्बंधन शर' चलवला पर चित्रसेन बहुते खिसिअइले। ऊ एकरा जवाब में पांडवन पर खूब तेज वाणन क बरसा कइले बाकी अर्जुन क सामने उनुकर एक ना चलल। अर्जुन महाकर्षण वाण छोड़ले आ चित्रसेन के आकाश से नीचे उतरे खातिर बाध्य कइले। अर्जुन क शस्त्र-विद्या इंद्रलोक में धूम मचा देले रहल। अब चित्रसेन घबड़ा गइले। भीम महिला लोगन के संगे दुर्योधनो के रथ से उतार लिहले। चित्रसेन आ अर्जुन आपस में अइसन मिलले जइसन एक साथी दूसरा साथी से बहुत दिनन के बाद भेंटाइल होखस। चित्रसेन दुर्योधन के मूर्ख आ पापी कहत युधिष्ठिर के बतवले कि ई आपन ऐश्वर्य देखावे खातिर इहवां आइल रहल हऽ। जवना घमंड में आइल रहले हऽ ऊ तो चकनाचूर भइये गइल आ जेकरा के नीचा देखावे क चाहत रहले हऽ उहे इनिकर सहायक बनल। दुर्योधन बहुते लज्जित भइले आ मुंह लटकवले अपना राजधानी लवट गइले।

दुर्योधन के बहन दु:शला क बियाह सिन्धुराज जयद्रथ से भइल रहे। एक दिन जयद्रथ काम्यक वन से होकर जात रहे कि ओकर निगाह द्रौपदी पर पड़ल। द्रौपदी क सुन्दरता पर ऊ मोहित हो गइल। ऊ अपना एगो दूत से आपन प्रेम संदेश द्रौपदी किहां भेजवलस। द्रौपदी आपन परिचय दिहली आ कहली कि हमार पति लोग आके रउवा सभनी क यथोचित सत्कार करिहें। ओह घरी पांडव लोग शिकार पर गइल रहले। जयद्रथ पांडवन के कुटी में आसन ग्रहण कइले आ बतकही का सिलसिला में आपन इच्छा प्रकट कइले कि तहरा पति लोगन के मार के हम तहरा के पत्नी बनावल चाहत बानी। एह नीचता पर द्रौपदी के क्रोध आ गइल आ जवन ना कहे के सब सुना गइली। बाकिर जयद्रथ पर कवनो असर ना पड़ल। ऊ त प्रेम में पागल हो गइल रहल। ऊ ताव में आके जबरदस्ती द्रौपदी के रथ पर बइठा के भाग चलल। कुछ देर बाद पांडव अपना आश्रम पर लवटले। आवते द्रौपदी क अपहरण क समाचार पवले। भीम आग बबूला होके जयद्रथ क पीछा कइले। युधिष्ठिर भीम से कहले कि जयद्रथ बहिन दु:शला क पति ह ओकरा के जान से मत मरिहऽ। अर्जुनो पीछा कइले। जब जयद्रथ देखलसि कि भीम आ अर्जुन दूनो आ रहल बाड़े त द्रौपदी के छोड़ के आपन जान बचा के भागल। भीम आ अर्जुन द्रौपदी के सस्नेह लवटा ले अइले।

भीम क क्रोध अबहीं शांत ना भइल रहल। ऊ फेनु जयद्रथ क पीछा कइले। कुछ दूर गइला का बाद ऊ पकड़ा गइल। ओकरा के रथ पर से उठा के धरती पर पटक दिहले आ बान्हि के द्रौपदी क पास ले अइले। द्रौपदी से माफी मंगला क बाद कबहीं दोसरा नारी का ओर आंख उठा के ना देखे क कसम खइले। द्रौपदी के दया आइल- आ ओकरा क छोड़वा दिहली। जयद्रथ एह अपमान से बहुते दुखी भइल आ पांडवन से बदला लेवे खातिर जंगल में जाके भगवान शंकर क तपस्या करे लागल। शंकर के प्रसन्न भइला पर ऊ पांडवन के जीते क वरदान मंगलस। भगवान शंकर वरदान दिहले कि जा अर्जुन के छोड़ के तू कवनो पांडवन से परास्त ना होखबऽ।

चित्रसेन से पराजित भइला क बाद कर्ण पांडवन से अवरू डाह करे लागल। अर्जुन के पराजित करे खातिर घोर तपस्या करे लागल। ओकरा तपस्या से इन्द्र बहुते घबरइले काहें कि ऊ अर्जुन क रक्षा कइल चाहत रहले। ऊ सोचले कि कर्ण अपना दान-प्रियता खातिर जग-जाहिर बा। जब तक ओकरा लगे कवच

आ कुंडल रही ओकरा के अर्जुन हरा ना सकसु। अगर हम ब्राह्मण भेष में जाके ओकर कवच आ कुंडल क मांग ली त ऊ नाहीं ना कर सके आ एह तरह से अर्जुन क रक्षा हो सकेला। बस, अब देरी कवना बात क, तुरन्ते कर्ण किहां चल दिहले।

कर्ण सूर्य क कृपा से जनम लेले रहले। सूर्य सोचले कि अगर इन्द्र कर्ण से कवच आ कुंडल ले लिहें त कर्ण क पराजय निश्चित बा, केहू टाल ना पाई। एह से आके सूर्य कर्ण के सावधान कर दिहले। बाकिर जवन होखे के रहेला ऊ होइये के रहेला। कर्ण सूर्य क बात ना मनले आ कहले कि हम बचन दे कुचल बानी कि कवनो याचक हमरा किहां से खाली हाथ ना जाई भले एकरा खातिर प्राणो चल जाउ। सूर्य बड़ा दुखी भइले आ कर्ण क मंगल-कामना करत बोझिल मन से चल दिहले। उनुका जाते ओही घरी इन्द्र ब्राह्मण भेष में उपस्थित भइले आ कर्ण के महादानी कहत कवच आ कुंडल क मांग कइले। कर्ण के होठ पर बहुते मार्मिक मुस्कान उभरल। हंसते-हंसत तेज शस्त्र से शरीर क कवच आ कुंडल काट के ब्राह्मण देवता के दे दिहले। ई कवच आ कुंडल जन्मे से कर्ण क शरीर से जुड़ल रहे। ब्राह्मण वेश धारी इन्द्र कर्ण क दान-प्रियता पर गद्‌गद् हो गइले आ कहले कि कर्ण तू धन्य बाड़ऽ। हम इन्द्र हईं। तू बज्र के छोड़ के कवनो चीज मांग सकेलऽ हम तहरा के दे सकत बानी। कर्ण कहले कि अगर अइसन बात बा त हमरा के अमोघ शक्ति दे दीं। इन्द्र अमोघ शक्ति देत कहले कि एकरा के जेकरे पर प्रयोग करबऽ ओकर मृत्यु निश्चित बा। बाकिर ओकरा बाद ई शक्ति फेनु हमरा पास चल आई। ई कहि के इन्द्र कवच आ कुंडल ले के चल दिहले।

अब तक धीरे-धीरे पांडवन क बारह बरिस क वनवास खतम होखे लागल। एकरा बाद एक बरिस क अज्ञातवास क चिंता युधिष्ठिर क सतावे लागल। एही चिंता में डूबल एक दिन युधिष्ठिर द्रौपदी आ भाईयन क संगे बातचीत करत रहले कि ओह लोगन क सामने एगो रोवत ब्राह्मण आके खड़ा हो गइल। पूछला पर पता चलल कि ओकरा झोपड़ी क सामने ऊ आपन अरणी क लकड़ी टंगले रहल। एही बीच एगो हिरन आके ओही लकड़ी से आपन शरीर खुजलावे लागल। अरणी क लकड़ी ओकरा सींग में अटक गइल। हिरन घबड़ा गइल आ भड़क के भाग चलल। अब ऊ होम करे खातिर आग कइसे तइयार करी। एही से ऊ रो रहल बा। ओह ब्राह्मण पर तरस खाके पांचों भाई हिरन क पीछा कइले। हिरन तेजी से भागत बहुत दूर निकल गइल। किछुए देर में देखत-देखत आंख से ओझल हो गइल। धउरत-धउरत पांचों पांडव थाकल पियासल एगो बरगद क छाया में बइठ गइले। ऊ लोग एह बात प लजा गइल कि ब्राह्मण क एगो साधारण काम ओह लोगन से ना हो पावल। पियासे सब केहू क कंठ झुरा गइल रहे। नकुल पानी क खोज में निकल पड़ले। कुछ दूर गइला पर एगो तालाब लउकल। लगे गइला पर देखले कि तालाब स्वच्छ जल से भरल बा। नकुल पानी पीये खातिर जइसहीं तालाब में उतरलें, एगो आवाज आइल "माद्री क लइका, तू दुस्साहस मत करऽ। ई जलाशय हमरा अधीन बा। पहिले हमरा सवालन क जवाब दऽ एकरा बाद पानी पीयऽ।" आवाज सुनते नकुल चउकले बाकिर उनुका अतना जोर क पियास लागल रहल कि आवाज क कवनो परवा ना कइ के पानी पी लिहले। पानी पियत उनका चक्कर आइल आ बेहोश होके गिर पड़ले। जब देर तक नकुल ना लवटले त युधिष्ठिर चिन्तित भइले। अब ऊ सहदेव क भेजले। बाकिर सहदेवो के साथ उहे घटना घटल जवन नकुल के साथे घटल रहे।

जब सहदेवो ना लवटले त युधिष्ठिर अब अर्जुन के भेजले। अर्जुन ओह पोखरा किहां जाके देखत बाड़े कि दूनो भाई मुअल पड़ल बाड़े। अभी अर्जुन ओह लोगन के मुअला क कारण सोचत रहले तब तक उनुको उहे आवाज सुनाई दिहल जवन नकुल आ सहदेव क सुनाई देले रहल। अर्जुन क्रोधित होके शब्द-भेदी वाण छोड़े लगले बाकिर कवनो फल ना निकलल। कुछ देर बाद अर्जुनो पियास बुझावे खातिर तालाब में उतरले आ पानी पियते चक्कर आवे लागल आ किनारा आवत-आवत बेहोश होके गिर पड़ले। जब अर्जुनो लवट के ना अइले त युधिष्ठिर बहुते चिन्तित भइले। अब भाइयन के खोजे खातिर भीम के भेजले। खोजत-खोजत भीम ओह जलाशय का पास पहुंचले आ देखले कि तीनो भाई मुअल पड़ल बाड़े। ऊ सोचले जरूर कवनो ना कवनो कारण बा। पहिले पानी पी लेला क काम बा, एकरा बाद कारण क पता लगाईं। ई सोच के भीम जइसहीं तालाब में उतरे लगले उनुको उहे आवाज सुनाई दिहल

"भीम, हमरा सवालन क जवाब ना दिहले अगर पानी पीये क साहस करबऽ त तोहरो उहे हाल होई, जवन तहरा भाई लोगन क भइल बा।" भीम कहले कि हमरा के मना करे वाला तू के हवऽ? ई कहि के ऊ पानी पी लिहले। पानी पीयते चक्कर आइल आ उहो ओहिजे ढेर हो गइले। चारो भाइयन के ना लवटला से युधिष्ठिर बेचैन हो गइले। आ ओह लोगन के खोजे खातिर खुद चल दिहले। खोजत खोजत सुनसान जंगल से होत ओह तालाब के खोजे खातिर खुद चल दिहले। खोजत खोजत सुनसान जंगल से होत ओह तालाब क लगे पहुंचले जहवां चारों भाई मुअल पड़ल रहले। युधिष्ठिर पियास से ब्याकुल रहले एह से ओह लोगन के मृत्यु के कारण सोचत पहिले पानी पीये खातिर तालाब में उतरे लगले। अतने में आवाज सुनाई दिहलस- सावधान! तहार भाई लोग हमार बात ना मान के पानी पीयल लोग ओकर फल तहरा सामने बा। ई तालाब हमरा अधीन बा। हमरा सवालन क जवाब पहिले दे दऽ तब पानी पी के आपन पियास बुझावऽ। युधिष्ठिर समझ गइले कि ई आवाज कवनो यक्ष के हऽ। ऊ कहले कि ठीक बा, तू सवाल करऽ हम जवाब एक-एक कइ के देत जाइब। यक्ष सवाल कइले–

सवाल – मनुष्य के सभ समय के साथ देला?
जवाब – धीरज सभ समय साथ देला।
सवाल – यश पावे खातिर एकमात्र उपाय का हऽ?
जवाब – दान एक मात्र उपाय हऽ।
सवाल – हवा से तेज चले वाला के हऽ?
जवाब – मन से तेज चले वाला केहू नइखे।
सवाल – विदेश जाये वाला क के साथी होला?
जवाब – विद्या साथी होला।
सवाल – केकरा के छोड़ देला से आदमी प्रिय होला?
जवाब – अहंकार से उपजल घमंड छुटला से।
सवाल – कवना चीज के खो जाये से दु:ख ना होला?
जवाब – क्रोध के खो देवे से।
सवाल – कवना चीज के गंवा के आदमी धनी बनेला?
जवाब – लोभ के गंवा के।
सवाल – ब्राह्मण होवल कवना बात पर निर्भर करेला?
जवाब – शील स्वभाव पर।
सवाल – कवन अइसन एगो उपाय बा जवना से जीवन सुखी हो सकेला?
जवाब – नीमन स्वभाव से जीवन सुखी हो सकेला।
सवाल – सबसे बड़का लाभ का हऽ?
जवाब – रोग से मुक्त रहल।
सवाल – धर्म से बढ़ के संसार में अवरु का बा?
जवाब – उदारता।
सवाल – कइसन आदमी क साथ कइल मित्रता कबहीं पुरान ना पड़े?
जवाब – सज्जन आदमीयन क साथ।
सवाल – एह संसार में आश्चर्य का बा?
जवाब – अंनत काल तक जीये क चाह।

एह तरह से यक्ष बहुते सवाल पूछले आ युधिष्ठिर एक-एक कइ के सब क ठीक-ठीक जवाब दिहले। अन्त में यक्ष कहले कि तहरा जवाब से हम संतुष्ट बानी हम तहरा मुअल भाईयन में से केहू एक के जिया सकत बानी। तू जेकरा के कहऽ ऊ जी जाई। युधिष्ठिर पल भर सोचले आ कहले– "नकुल" क। युधिष्ठिर क अइसन बोलत कहीं कि यक्ष सामने प्रकट भइले आ कहले कि युधिष्ठिर दस हजार हाथीयन क बल राखे वाला भीम के छोड़ के नकुल के काहें जीयावत चाहत बाड़ऽ। भीम ना त अर्जुने क जिया लेतऽ जे हमेशा तहार रक्षा करत आइल बा।

युधिष्ठिर कहले, महाराज! आदमी का रक्षा ना भीम से हो सके ना अर्जुने से। खाली धर्म मनुष्य क रक्षा करेला। धर्म से विमुख भइला पर मनुष्य क नाश हो जाला। आप के मालूम होई हमरा पिताश्री क दू पत्नी हईं कुन्ती आ माद्री। कुन्ती क एक पुत्र हम जीयत बानी एह से हम चाहत बानी कि माता माद्री क एक पुत्र नकुल जी जासु।

एह जवाब से यक्ष बहुते प्रसन्न भइले आ कहले कि हम आजु पक्षपात रहित लइका पा के धन्य हो गइनी। हम वरदान देत बानी कि तहार चारों भाई जीवित हो जासु। ई यक्ष अवरू केहू ना खुद धर्मदेव रहले। उहे हिरन क रूप धारण कइले रहले। उनुकर इच्छा रहल कि अपना आंखन से युधिष्ठिर के देख के जुड़वाईं। (क्रमश:)

जमीदार समाज के मर्मस्पर्शी कथा

❑ प्रो. रामदेव शुक्ल

पुस्तक – 'घर टोला गाँव' (उपन्यास)। लेखक– पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह। प्रकाशक– भोजपुरी संस्थान, पटना, संस्करण– पहिला, 1979। पृष्ठ– 129।

आत्मकथा शैली में 'घर टोला गाँव' बिहार के सारन जिला के प्रसिद्ध गाँव शीतलपुर के जमीदार-परिवार के आख्यान ह। एकरा के जेतना अच्छा उपन्यास कहल जा सकेला, ओतने प्रभावपूर्ण आत्मकथा के रूप में भी एकरा के देखल जा सकेला।

गाँव के कहानी शाहजहाँ के दरबार से जागीर पाके पाण्डेय शीतल सिंह द्वारा गाँव के बसावल गइला से शुरू होखत बा। शीतल सिंह के संतति का साथे कुंज बिहारी सहाय के संतति के पीढ़ियन तक चले वाला नरम-गरम संबंध कथा के सूत्र बुनले बा। फोर्ट विलियम कालेज कलकत्ता के पहिलका बैच के ग्रेजुएट गुरुसहाय सिंह आ उनका भाइयन के सन्तान पच्छिम टोला के व्यक्तित्व बनावत बा। अंगरेजन के जमाना में जमीदार शानो-शौकत आउर पट्टीदारी के आपसी रिश्तन के एगो जीवन्त दस्तावेज बुनत लेखक अनेक पात्रन का बारे में लिखत बा कि ओह लोग के देखले ना रहीं, सिर्फ ओह लोग का बारे में सुनले रहीं। कुछ पात्रन के लेखक अतिवृद्धावस्था में देखले रहे, कुछ का साथे बचपन आ जवानी के दिन बितवले रहे। लेखकीय कौशल ई बा कि सभके चित्रण एतना सहजता से भइल बा कि पाठको ओह के देखे-समझे-महसूस करे लागत बा।

उपन्यास में भोजपुरी जीवन के मस्ती के अनेक प्रसंग बा, जे ओह जमाना में ग्रामीण समाज में स्त्री के दशा के मूर्त करत बा। अनेक पुरुष बाड़े जे जवानी में विधुर हो गइलो पर आ सन्तानविहीन होइये के बियाह नइखन करत, आ भतीजा के सब कुछ मान के जिनिगी बिता देत बाड़े। अदित बाबा बाड़े जे मुंशी बलदेव लाल आ कुछ औरतन के क्रूर मजाक का चलते एगो बेसहारा विधवा से धोखा में बियह दिहल जा तारे, बाकिर असलियत खुलला पर ओकरा के बेसहारा देख, जिनिगी भर ओकरा के साथ निर्वाह करत बाड़े। बिरिछ ठाकुर के मरला पर ओकरा विधवा के बनारसी से बियाह करावे में समाज आगे बढ़के अपना मनुष्यता आ प्रगतिशीलता के परिचय देता। एगो बूढ़ मुसलमान के तिसरकी युवती पत्नी अपने इहां काम करेवाला विवाहित युवक का साथे ओकरा गाँवें चल आवत बिया। ओकर कुल्ह सम्पत्ति नया घर वाला हड़प के ओकरा के कंगाल बना देता, बाकिर गाँव-टोला के लोग ओकरा असहाय स्थिति के सम्हार लेता। आउर त आउर सिर पर मइला ढोवे वाली औरत के भी जमींदारी क्रूरता के शिकार होखे से बचाके ओकरा अस्तित्व आ व्यक्तित्व के रक्षा कइल गइल बा।

पट्टीदारी के अकड़ आ झूठ शान के अनेक प्रकरण बा, बाकिर बैर आ मोकदमाबाजी का बीचे संयुक्त परिवार के रिश्तन के भीतर बहत रस के अन्तःसलिला के एह एहतियात का साथे सहेज के राखल गइल बा कि पाठक अभिभूत हो उठत बा। चाचा-भतीजा एक-दोसरा के खिलाफ मोकदमा लड़ रहल बा। गवाही के कठघरा में खड़ा भतीजा कोर्ट में प्रवेश करत चाचा के देख के हाथ जोड़ के प्रणाम करत बा। चाचा गदगद कंठ से आशीष देतारे। जज चकित। भतीजा से पूछत बाड़े, "रउआ इहाँ के प्रणाम काहे कइली हँ?" जवाब, "इहाँ के हमार चाचा हईं, त हम प्रणाम कइसे ना करीं!" चाचा से जज पूछत बा– "इनका प्रणाम कइला पर रउआ आशीर्वाद दिहली हँ?" जवाब– "भला भतीजा के आशीर्वाद कइसे ना देब?" जज गदगद। कहलस– "हम रउरा दूनू चाचा-भतीजा के मोकदमा ना देखब। रउआ लोग आपस में सुलह कर लीं। हम रउरा दूनू आदमी के वकील लोग के पंच मोकर्रर करत बानी।"

सुलह अपने-आप हो जाता।

जवना मानवीय मूल्यन से संस्कृतियन के स्वरूप बनेला, ई दुनिया जीये लायक बनेला, ओह के 'घर टोला गाँव' में खूब-खूब रचल गइल बा। अलंकारविहीन भाषा के सादगी के सौंदर्य देखते बनत बा। जमीदार आ परजा के बीच के रिश्तन के घिनौना रूप आ सामन्ती जीवन के बजबजात गन्दगी से अलग, ई उपन्यास सम्बन्धन के निर्वाह के कथा कहत बा।

'घर टोला गाँव' पढ़ला का बाद समझ में आइल कि 'फुलसुंघी' जइसन उपन्यास लिखे के क्षमता पाण्डेय कपिल का विरासत में मिलल बा।

– शीतल सुयश, राप्ती चौक, आरोग्य मंदिर
गोरखपुर– 273003

गजल

हो जाला प्यार से

❖ पप्पू मिश्र 'पुष्प'

होला ना जवन मार से, हों जाला प्यार से
बिगड़ल बनेला सब दिन के, एही फुहार से

(१)

मत ढूंढी जवन लुक-छिप के, पहिले गुजर गइल
धो डालीं मन के करिखा, नेहिया के धार से

(२)

देहिया में सबका खूनवा, एके तरह के बा
सबका में एके जोति, जूझे अन्हार से

(३)

घूनवा चमक-दमक के, करि देला धूरा-धूरा
फटकीं, बहारी फेंक दीं, दिलवा के बखार से

(४)

दुनिया के देखीं जीत के, छूंछे सभे गइल
ओकरे रहल बा जेकर, निबहल बा यार से

(५)

झूठा ह सब चमक-दम, रूपवा, जवानी, रंग
का होई केहू जीती, 'पप्पू' के हार से।

– छोटी नरैनियां (पूरब टोला)
मीरगंज (गोपालगंज)
बिहार– 841438

सेहत-सलाह

खरबूजा

❖ अर्चना ओझा

खरबूजा में प्रोटीन, विटामिन अउर लवण के समावेश होला जवन 'लू' से बचावेला। ई पाचन शक्ति बढ़ावेला आ कब्ज दूर करेला। एकरा के खाली पेट ना खाये के चाहीं बल्कि खाना खइला के २ घण्टा बाद खाये के चाहीं। एकरा के ढेर ना खाये के चाहीं।

खरबूजा के संगे दूध के प्रयोग बहुत हानिकारक ह। अइसन कइला से उल्टी अउर दस्त होला। हिस्टीरिया, चर्मरोग, मूत्र रोग में बहुत लाभकारी ह।

एकरे छिलका के पीस के चेहरा पर लगवला से चेहरा पर पड़ल झांई मिट जाला। आ बीज पीस के लगवला से चेहरा के त्वचा में निखार आवेला।

'लू' लग गइला पर खरबूजा के बीज पीस के सिर पर लगवला से भा एकर रस शरीर पर मलला से लाभ होला।

एकर रस पुरान भा नया खाज-खुजली मिटावे में मदद करेला। खरबूजा वृक्क-रोग के दूर करेला आ पथरी के निकाल देला।

एकरा अधिक प्रयोग से पेट आ आंत कमजोर हो जाला। हैजा के दिन में खइला से हैजा होखे के खतरा रहेला। एकरा के खाना के पहिले आ तुरन्त बाद ना खाये के चाहीं। गर्म प्रकृति वालन के बेसी खइला से आंख दुखाये लागेला।

– तुलसी अपार्टमेंट, 115, जी.टी. रोड, हावड़ा- 6

भिखारी ठाकुर ग्रंथावली के गीत ताल छन्द के

❑ महेन्द्र सिंह "प्रभाकर"

भिखारी ठाकुर ग्रंथावली खंड-1 में बिदेसिया, भाई-बिरोध, बेटी-बियोग, कलिजुग-प्रेम, अवरू राधेश्याम-बहार के नाटक संग्रहित बा। ग्रंथावली खंड-2 में गंगा-स्नान, बिधवा-बिलाप, गबर घिचोर, पुत्र-बधु अवरू ननद-भउजाई के नाटकन से अधिका अनुपात में गीते बाड़न स। गीत-गवनई में छन्दे गवाला। परम्परित लोक गीतन के छन्दन में गण, वर्ण भा वर्ण-मात्रा के गिनती के कवनो स्थान नइखे। ई सभ गीत ताल-मात्रा भा काल मात्रा के होलन स। काल खंड के गिनती के काल मात्रा कहल जाला। एही काल मात्रा के निश्चित संख्या के आधार प ताल के रचना भइल जवना के काल भा ताल मात्रा कहल जाला।

उपलब्ध ग्रंथावली खंड-2 के अन्दर गंगा-स्नान नाटक के गीतन के देखल जा सकता। एह नाटक के आरम्भ में मंगला चरन के गीत के चौपाई बतावल बा। एह नाटक में दोहा, कवित्त, पद अवरू अन्य तरह के गीत बाड़न स। सभ गीत समाजी अवरू पात्रन से गावल गइल बा जवन प्रकरण के अधीन बाड़न स। एहसे इहनी के मुक्तक रूप में ना आंकल जा सकत बा। गीति-काव्य के कवनो गीत के एक से अधिक राग अवरू ताल में गवाला। ई गायक प निर्भर बा कि ऊ जवना ताल अवरू राग में गावे। एह प कवनो प्रतिबन्ध ना रहे। बाकी एह नाटक के गीत प्रसंगाधीन बाड़न स आ ठाकुर जी के मंडली में एगो निर्धारित धुन अवरू ताल में गवात रहे आ आजो गवाला। इतर मंडली द्वारा नियमतः ओही धुन अवरू ताल में गावे से ओकरा में निहित भाव-लालित्य ओसही बनल रहीत। बाकी ग्रंथावली में धुन अवरू ताल के निर्देशन नइखे भइल।

नाटक में कथित चौपाई समाजी से आ अन्य छन्द पात्रन द्वारा गावल गइल बाड़न स। छन्द के प्रकारन में प्राचीनतम छन्द ताल छन्द के होलन स। प्रारम्भिक अवस्था में कवनो भाषा के गीत कम-पढ़ल लिखल भा निपढ़ व्यक्तियनों के रचल होला। ओह में संभ्रान्त व्यक्तियन के चलते शास्त्रीय-छन्द के रूप धारन क लेला। प्राचीन काल में गावे खातिर ताल-छन्दे के रचना भइल बा। वैदिक संगीत में उदात्त, अनुदात्त अवरू स्वरित संगीत के प्रचलन रहे। 'उत्तरार्चिक साम वेद' में स्पष्ट उल्लेख बा कि

"गायत्रं त्रैष्टुमं जगतं विश्व रूपिणि सम्मृता।
देवा ओ कांसि चक्रि रे।।3।।"

यानि गायत्र, त्रैष्टुम आ जगत सामे से नाना प्रकार के गीतन के रूप बनावल गइल बा। ई 'जगत साम' आज लोक गीत कहा रहल बा। वैदिक काल के बाद लौकिक संगीत में वर्णिक अवरू मात्रिक छन्दन के रचना होखे लागल। एही तरी भोजपुरी में ठाकुर जी के नाटकन में गीतन के प्रक्रिया बा। भोजपुरी के प्रारम्भिक रचना काल में अपढ़ बाकी सरस्वती के वरदपुत्र स्व. भिखारी ठाकुर विरासत में प्राप्त लोक-धुनन के आधार प गीतन के रचना कइनी। एही से ऊ गीत छन्द शास्त्र के घेरा में ना आँट के ताल मात्रा भा काल मात्रा के छन्द बनल रहलन स आ आजुओ बाड़न स। विद्वान सम्पादक मंडल द्वारा इहनी के संवरारे के असफल प्रयास भइल। ई गीत वर्णिक भा मात्रिक छन्द के ना हो पवलन स। बाकी परिष्कार के चलते अंग-भंगू बनके रह गइलन स। जइसे चौपाई आ दोहा।

काव्यशास्त्रीय नजर से चौपाई के हरेक चरन में 16-16 वर्ण-मात्रा होला जेकरा अन्त में जगण-तगण ना होखे। नाटक के मंगला चरन के रूप में देवल चौपाई निम्न प्रकार से बा–

"गौरी गनपत होखहु सहाई। सारद बसहु हृदय महं आई।
गावत बानी गंगा स्नाना। सुनहु कृपा करिके सगेयाना।"

एकरा पहिलका पांति में 17-16 वर्ण-मात्रा अवरू दोसरका पांति में 16-17 मात्रा बा। अन्य पांतिन के इहे हाल बा। एह से स्पष्ट बा कि ताल छन्द में वर्ण भा मात्रा के गिनती

के कवनो स्थान ना रहे। ओह में काल मात्रा भा ताल-मात्रा के स्थान रहेला। एकरा के धुन पूर्वी आ ताल कहरवा में निम्न प्रकार से गावे के परिपाटी ठाकुर जी के मंडली में बा–

"रामाऽ गौरी गनपत होखहु सहाईऽ रामा होऽ राऽ माऽ।
रामाऽ सारद बसहु हृदय महं आईऽ रामा होऽ राऽ माऽ।।
रामाऽ गावत बानी गंगा स्नानाऽ रामा होऽ राऽ माऽ।
रामाऽ सुनहु कृपा करि के सगेयानाऽ रामा होऽ राऽ माऽ।।"

एह तरी एह गीत के नाटक में ज्यों के त्यों ना रखला से एह गीत के अभीष्ट खतरा में पड़ जात बा।

फेर पृ. 18 के नीचे दोहा देल बा जवन निम्न प्रकार से बा:–

"बुढ़िया जाई तहां ना जाइब, सुनऽ निहोरा मोर।
अवरू जो कुछ कहब बालम, हुकुम बजाइब तोर।"

ई मानक दोहा के परिभाषा से बाहर बा। दोहा के विषम चरनन में 13-13 आ सम चरनन में 11-11 वर्ण-मात्रा होला। बाकी एकरा विषम चरनन में 17-15 आ सम चरनन में 10-11 मात्रा बाड़न स। एह से स्पष्ट बा कि ई वर्ण-मात्रिक दोहा ना ह। ई पूर्वी धुन के काल मात्रिक छन्द ह जवन ताल कहरवा भा दादरा में गवला प रूचिकर होला। एह गीत के ठाकुर जी के मंडली में निम्न प्रकार से गावे के परिपाटी बा:–

"बुढ़िया जाई तहां ना जाइब, सुनऽ निहोरा मोर।
अवरू जो कुछ कहब बालम, हुकुम बजाइब तोर होऽ।
हुकुम बजाइब तोर हो बालम, हुकुम बजाइब तोर हो।।"

अइसन रहला प एह गीत के धुन के मौलिकता खतरा में ना पड़ सकता।

भोजपुरी लोक धुनन के गीत तीन तरह के तालन में गवाला। जइसे ताल कहरवा, दादरा आ दीपचन्दी। कहरवा 8 काल मात्रा के, दादरा 6 काल मात्रा के आ दीपचन्दी 14 काल मात्रा के ताल हवन स। एह नाटक के अधिकांश गीत ताल दादरा अवरू कहरवा के हवन स जवना के अनुपात 2:1 के बा। मात्र एगो गीत पृ. 13 प समुह गीत के रूप में गंगाजी के बा जवना के ताल दीपचन्दी में गावे के परिपाटी बा। ई गीत धुन में पूर्वी आ विधा में पचरा के बा। जइसे :–

"गंगा जी के भरल अररिया नगरिया दहत बाटे हो।
गंगा मइया पनिया में जनिया रोअत बाड़ी
कंत विदेस मोर हो।।"

एकर दीपचन्दी ताल में निम्न प्रकार से काल मात्रा होला:–

काल मात्रा:	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
ठेका :	धा	धीं	ऽ	धा	धा	धीं	ऽ	ता	तीं	ऽ	धा	धी	धीं	ऽ
छन्द :	गं	गा	ऽ	जी	ऽ	के	ऽ	भ	र	ऽ	ल	ऽ	अ	ऽ
	र	रि	ऽ	या	ऽ	न	ऽ	ग	रि	ऽ	या	ऽ	द	ऽ
	ह	त	ऽ	बा	ऽ	टे	ऽ	हो	ऽ	ऽ	गं	गा	मइ	या
	प	नि	ऽ	या	ऽ	में	ऽ	ज	नि	ऽ	या	ऽ	रो	ऽ
	अ	त	ऽ	बा	ऽ	ड़ी	ऽ	कं	ऽ	ऽ	त	ऽ	बि	-ऽ
	दे	स	ऽ	मो	ऽ	र	ऽ	हो	ऽ	ऽ	गं	गा	.....	

एह तरी ई गीत 14x5+10 = 80 काल मात्रा में ताल छन्द के बा।

भोजपुरी खातिर ठाकुर जी के इहो एगो बड़हन देन बा कि लोक प्रचलित संस्कार गीतन के धुनन के घर-आंगन से बाहर निकाल के मैदान में पहुंचावे के काम कइले बानी। एही परम्परित धुनन के आधार प नाटकन के गीतन के रचना कइनी। बिरासत में प्राप्त धुनन के आधार प गीतन के रचना नाटकन में बा। उदाहरन में नाटक के पृ. 34 के गीत लेल जाय :–

"चलली गंगोतरी से गंगा मइया, अइली हरि हो द्वार।
धन-धन भगिरथ कइलन, पुरुखन के हो उधार।।"

ई परम्परित देवी गीत के धुन के आधार प बा जवन निम्न प्रकार से बा:–

"काथी केरा ककही भवानी मइया, काथी लागे हो साल।
कथिये बइठल सितली मइया, झारस लामी हो बाल।।"

एह गीत के आपन विशेषता अलगे बा। ई गीत काल मात्रा के गिनती के अनुसार 12 काल मात्रा के बा जेकर बिवरन नीचे देल गइल बा:–

काल मात्रा:	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	
प्रचलित	का	थी	के	रा	क	क	ही	भ	वा	नी	मइ	या	
गीत :	का	ऽ	थी	ऽ	ला	गे	हो	ऽ	सा	ऽ	ऽ	ल	
	क	थि	ए	बइ	ठ	ऽ	ल	सि	त	ली	मइ	या	
	झा	ऽ	र	स	ला	मी	हो	ऽ	बा	ऽ	ऽ	ल	
काल मात्रा:	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	
नाटक के गीत:	च	ल	ली	गं	गो	त	री	से	गं	गा	मइ	या	
	अ	इ	ली	ऽ	ह	रि	हो	ऽ	द्वा	ऽ	ऽ	र	
	ध	न	ध	न	भ	गि	र	थ	क	इ	ल	न	
	पु	रु	ख	न	के	हो	उ	ऽ	धा	ऽ	ऽ	र	

एह दूनो गीतन के देखला प स्पष्ट बा कि एह गीतन के हरेक चरन डंका के चोट प बारह काल मात्रा के बा। 12 मात्रा के तालन में धुपद अवरू एक ताल बा। बाकी ई गीत ना त धुपद के ह न एक ताल के ह। मध्य लय के ठेका कहरवा भा दादरा के ठेका से संघत कर लेल जाला। बाकी एकर मौलिक ताल कहरवा भा दादरा के नइखे। एह से स्पष्ट बा कि एह धुन के गीत के कवनो ताल 12 मात्रा के होई बाकी अब लुप्त हो गइल बा भा अप्रचलित होके अब भुला गइल बा। अब ई शोध के विषय बनल बा।

जहां तक गीतन के गायकी से सम्बन्ध बा, सभ गीत धुन, लय अवरू ताल में अनमोल बाड़न स। भावाभिव्यक्ति में पूर्ण सक्षम बाड़न स। गीतन में सगरो प्रसाद गुन भरल बा बाकी कारूनिक भावाभिव्यक्ति में माधुर्य गुन बाजी मार लेत बा। गीतन में भरपूर शब्द शक्ति से काम लेल गइल बा। उदाहरण में एह नाटक के पृ. 26 प व्यंजित बा:-

"प्यारी सहऽ दुख राखऽ पगरी के पनिया।"

देखल जाय त पगरी में पानी ना रहे, पगरी धारी में रहेला। एह तरी उपादान "पगरी के पानी" के कथन से उपादान लक्षण बहुते सशक्त भइल बा। एहतरी नाटक में गीतन के उपयोगिता सभ प्रकार से बढ़ चढ़ के बा।

अत: स्पष्ट हो रहल बा कि स्व. भिखारी ठाकुर जी के नाटकन में परम्परित धुनन के गीत बाड़न स। एकनी के छन्द वर्णिक भा मात्रिक ना रहके ताल-छन्द के बाड़न स।

- ग्रा. + पो.- करनौल, जिला- भोजपुर

गीत

हमार माई

❑ निर्मला सिंह, आचार्य

जिनगी क साझ भइली लागय दुलहिनिया।
केहू नाही कहय माई हो गइली पुरनियां।।

मथवा पर टिकुली सोहय सेन्हुरा भरल मँगिया।
बहियां में चुड़िया सोहय पायल झुनझुनिया।।
चुनरी चटकदार सोबरन देहिया,
केहू नाही कहय माई हो गइली पुरनियां।।

माई बनली सासु, बनली दादी परदादी हो।
बाबूजी के अपने हाथे धोवे धोती खादी हो।।
जियरा हुलस उठे देखि माई बाबू क सनेहिया,
केहू नाही कहय माई हो गइली पुरनियां।।

नोहर हो गइली जग में अइसन अब चलनिया।
चला सखी सीखीं उनसे जिनगी क रहनिया।।
नाही बयान जोग उनकर बाय कहनियां।
केहूं नाही बुझय माई हो गइली पुरनियां।।

- न्यू सर्वोत्तम शिक्षा निकेतन
कुम्हार पुरा, फुलवरिया
बाराणसी- 221106

लेखकन से निहोरा

लेखक लोग से निहोरा बा कि आपन रचना (कविता, गीत, कहानी, लेख) आदि भेजत समय कागज का एके ओर साफ साफ लिखल भेजे के चाहीं। रचना साफ ना लिखल रहला से छापे में असुविधा होला। कहीं अउर छहर भेजल भा प्रकाशित रचना के दोबारा छपे खातिर मत भेजीं। रचना स्वीकृत आ अस्वीकृत के सूचना पता लिखल टिकट लागल लिफाफा मिलला पर भेजल जाई।

अखिल भारतीय स्तर पर उच्च स्तरीय साहित्य के भोजपुरी भाषा में एकमात्र मासिक पत्रिका

भोजपुरी माटी

में विज्ञापन देके आपन रोजगार बढ़ाईं। भोजपुरी माटी भारतवर्ष के प्रत्येक कोना में जाले। साथे विदेशो में लंदन, अमेरिका, मारिशस, सूरीनाम, युगाण्डा आदि देशनो में जाले।

वास्तुशास्त्र आ फेंग सुई के नौगो सुनहरा नियम

❑ संकलित

आठों दिशा, पांचों तत्व अउर पृथ्वी के चुम्बकीय प्रभाव से ब्रह्माण्ड में उपस्थित धनात्मक आ ऋणात्मक उर्जा-शक्ति के प्रभाव से मनुष्य-जीवन में घटना घटत रहेले जवन वास्तु शास्त्र आ फेंग सुई के अनुसार प्राचीन धर्म ग्रंथन में मनुष्य के साधारण जीवन में सुख-शांति अउर समृद्धि खातिर कुछ महत्त्वपूर्ण बात बतावल गइल बाटे।

1. भवन (मकान) के पूजा-स्थल में भगवान के मूर्ति क ऊंचाई ग्यारह अंगुरी से बड़ा ना रखे के चाहीं। कवनो मूर्ति के दीवार से सटा के ना रखे के चाहीं अउर ना त कवनो मूर्ति के स्थिर रखे के चाहीं। मंदिर के हर समय खुला ना रखे के चाहीं। भवन के ईशान दिशा में पूजा के स्थान बनावे के चाहीं। पूजा-अर्चना हमेशा पूर्व, उत्तर या ईशान दिशा में मुंह करके करे के चाहीं। पूजा घर में छतरी-गणेश क छोट प्रतिमा रखले से कई तरह के विपत्ति से छुटकारा मिलेला।

2. भवन में कवनो सीढ़ी यदि टूट जाय त ओके तुरन्ते ठीक करवाये के चाहीं। ऐसे आपके जीवन में 'ठोकर' लगे क सम्भावना समाप्त हो जाई।

3. भवन के छत पर कूड़ा-कचरा अउर लोहे के कबाड़ कबो ना रखे के चाहीं। लोहे क कबाड़ में शनि क वास मानल जाला। ई घर में अनेक समस्या के उत्पन्न करत रहेला।

4. भवन के शयन-कक्ष में इमामदस्ता, सिलबट्टा, मूसल आदि कबो ना रखे के चाहीं। ई आपसी लड़ाई-झगड़ा के सूचक हऽ।

5. ड्राइंग रूम के पूरब या उत्तर के दीवार पर उछलत-कूदत हिरण या घोड़ा के पेंटिंग आ जोड़ा मछली के चित्र लगावे के चाहीं। ई स्मृद्धिदायक अउर शांतिदायक के सूचक हऽ।

6. भवन में उत्तर या पूरब की ओर सफेद आक क पेड़ (पौधा) भी लक्ष्मी वर्द्धक मानल गइल बा। यदि पौधा ना मिले त एकरे जड़ के पूजा घर में रखे के चाहीं ई परिवार खातिर शुभदायक बा।

7. फेंग सुई में भवन चाहे कवनो दिशा में काहे ना हो पेड़-पौधा लगावल शुभ मानल गयल बा। उत्तर, पूरब या ईशान में छोट-छोट आ दक्षिण, पश्चिम नैऋत्य दिशा में बड़ा पेड़ लगावे के चाहीं। पेड़-पौधा जीवन में उत्साह शक्ति देला। सांप के आकार कवनो पेड़ भवन में मत लगाईं।

8. भवन में अपने मंदिर में (चाहे ऊ कमरा हो या लकड़ी के छोट घर) कबो ध्वजादंड ना लगावे के चाहीं।

9. भारत में दर्पण के ढेर महत्व दीहल जाला। एही से भवन में सुविधानुसार दर्पण लगा के अधिक से अधिक लाभ पावल जा सकेला।

कवनो प्लाट खरीदत या लेत समय निम्न बातन के ध्यान रखें के चाहीं

1. एक आदर्श प्लाट चौकोर होवे के चाहीं।

2. लम्बाई अउर चौड़ाई क मापदंड १:१ के अनुपात में रहले से अच्छा होला। ई अनुपात १:२ से अधिक ना होवे के चाहीं। काहें कि घर के आकार निश्चित रूप में ओमे रहे वालन के प्रभावित करेला।

3. बेड-रूम के स्थिति दक्षिण-पश्चिम होवे के चाहीं। उत्तर दिशा के तरफ सिर करके अउर दक्षिण दिशा के तरफ पैर करके कबो ना सूते के चाहीं। एसे उमिर घटेला। सूतत समय हमेशा पैर पश्चिम दिशा की ओर अउर सिर पूरब दिशा की ओर होवे के चाहीं। एसे आदमी के मानसिक अउर शारीरिक शांति मिलेला।

4. छोट लइकन के कमरा खातिर स्थिति उत्तर-पश्चिम या पश्चिम दिशा में रहे के चाहीं।

5. रसोई घर के स्थिति क संबंध हमेशा स्वास्थ से रहेला। अग्निदेवता क वास स्थान दक्षिण-पूरब हऽ। एहसे रसोई घर हमेशा दक्षिण-पूरब दिशा की ओर होवे के चाहीं।

6. पढ़ाई-घर के स्थिति उत्तर या पूरब या फिर उत्तर-पूरब के ओर होवे के चाही। किताब हमेशा घर के दक्षिण-

पश्चिम दिशा में रखल रहे के चाही।

7. पढ़ाई करत समय हमेशा आदमी के चेहरा (मुँह) उत्तर दिशा की ओर या फिर पूरब दिशा की ओर या उत्तर-पूरब दिशा की ओर होवे के चाहीं।

8. डाइनिंग-रूम के स्थिति रसोईघर के पास पूरब दिशा या पश्चिम दिशा या फिर उत्तर दिशा की ओर होवे के चाहीं।

9. ड्राइंगरूम के स्थिति हमेशा उत्तर-पूरब दिशा की ओर या उत्तर दिशा की ओर या फिर पूरब दिशा की ओर होवे के चाहीं। ड्राइंगरूम के उत्तर-पूरब की ओर काफी स्थान छोड़ देवे के चाहीं।●

गजल

आदिमी के

❑ मुफलिस

जियल आजु मुश्किल भइल आदमी के।
मुअल आजु मुश्किल भइल आदिमी के।।

दूधे में जोरन परल बा जहर के।
पियल आजु मुश्किल भइल आदिमी के।।

सगरो बहलि बाटे जुलुमी बयरिया।
हँसल आजु मुश्किल भइल आदिमी के।।

काँटन से कुल्हिए भरलि बा डहरिया।
चलल आजु मुश्किल भइल आदिमी के।।

आपन बनल जब कि दुश्मन के दादा।
बचल आजु मुश्किल भइल आदिमी के।।

बली के बनल हर जगह बोलबाला।
रहल आजु मुश्किल भइल आदिमी के।।

आदमीयत से खाली भइल आदिमी बा।
भरल आजु मुश्किल भइल आदिमी के।।

कहां के बा? भींजल नयन पोंछेवाला।
सुनल आजु मुश्किल भइल आदिमी के।।

केकरा से कहबऽ? तू आपन कहानी।
कहल आजु मुश्किल भइल आदिमी के।।

कहाँ केहू? आपन बा 'मुफलिस' जहाँ में।
गुनल आजु मुश्किल भइल आदिमी के।।

– चौधरी टोला, डुमराँव (बक्सर), पिन – 802119, बिहार

भोजपुरी बोलीं! भोजपुरी लिखीं!
भोजपुरी पढ़ीं! अउर दोसरा के पढ़े के कहीं।
भोजपुरी साहित्य के भण्डार मजबूत करीं।

भारत में चाहे भोजपुरी के कौनो स्थान होय मगर मोरिशस में भोजपुरी बहुत बड़ा काम करले बा

❑ दिमलाला मोहित

आदरनीय प्रबंध सम्पादक जी, जयरामजी के।

'भोजपुरी माटी' के मार्च अंक मिलल। लेखवन बड़ा चौकस बा। 'फागुन के उत्पात', 'सास पतोह के करकरहट', 'मुँह चिन्नी लागल', फिर से 'मोरिशस के धरती पर भोजपुरी गीतन के धूम' बड़ा नीक लागल। विशेष करके कनक वर्मा के 'सास पतोह के करकरहट' त बड़ा अच्छा लागल। परिवार अउर दोस्त लोग बड़ा पसन्द करलन जा। मारिशस में भी सास-पतोह के उहे खीसा बा। कनक बर्मा जी के बार-बार बधाई।

भोजपुरी के बारे में हम बहुत खोज करले बानी। पुस्तक भी लिखले हैंय जौना के नाम हऽ "A Collection of Mauritian Bhojpuri's Idioms, Expression, Songs, Riddles and Stories" मोरिशस के भोजपुरी में...। जौन कि हिन्दी अउर अंग्रेजी में अनूदित बा। एकर महत्व जान के शिक्षा विभाग के लोग सब सरकारी पाठशालावन खातिर एक गो कॉपी खरीदलन जा।

फिर मोरिशस के कालेज में भोजपुरी पढ़ावे खातिर "मारिशस के भोजपुरी के हीरा मोती" पुस्तक माला लिखनी जौन में भाग एक से छह तक बा औरू एगो "शब्द कोश" भी निकालत हैंय जा, जौना में भोजपुरी के शब्दन के हिन्दी में तथा अंग्रेजी में समझावल गइल बा।

कालेज में भोजपुरी के पढ़ाई फोर्म एक से पांच तक में होखऽता औरू बहुत जल्दी H.S. Certificate में भी पढ़ाई होय। Mauritius Examination Section से मांग करल जाय कि S.C. औरू H.SC. में भोजपुरी के एगो विषय के रूप में गने के।

अध्यापक औरू अध्यापिका लोग से हम जाके कार्यशाला (Workshop) चलैली और बतवनी कि कैसे पढ़ावे के। व्याकरण पर भी प्रकाश डलली। पढ़ाई के अलावा ई माला में लगभग पैंतिस, चालीस गो भोजपुरी के झूमर, ललना, सोहर, विरहा, जनेऊ, हरदी, तिलक, इमली घोंटाई, परछावन, बरियात जाय के परछावन, हरपरौरी, जंतसार, मजाकिया आदि... गीत भरल परल बा। एकर साथे साथे भोजपुरी के मुहावरा, लोकोक्ति औरू बुझौवल क संग्रह बा। लगभग 300 (तीन सौ) बुझौवल बा। भोजपुरी हमनी के परदादा, परदादी हीयां अनले रहलन जा। उही भोजपुरी से उनलोग में संगठन रहल। धर्म, संस्कृति के बचौलन जा। गोरा के अत्याचार सहके, परिश्रम करके देसवा के हरा भरा करके हीयां के प्रधानमंत्री, मंत्री, राष्ट्रपति बनलन जा। भारत में चाहे भोजपुरी के कौनो स्थान होय मगर मोरिशस में भोजपुरी बहुत बड़ा काम करले बा। हमनी के हिन्दू (तमिल, तेलगू, मराठी...) औरू मुसलमान भाई लोग के ईसाई बने से बचैयलक। धरम-संस्कृति के जियअलक आपन पहचान बचैयलक। हीयां तमिल, तेलगू, मराठी सब एगो सभा में रहल औरू भोजपुरी बतिआत रहलन जा।

अभी नया पीढ़ी के लोग इ भोजपुरी के कम परयोग करत हवन जा। भोजपुरी के फिर से ओकर महत्व बतावे के चाहीं। हैये से भोजपुरी के पढ़ाई जारी करल जाता। 'भोजपुरी बहार' (भोजपुरी गीतवन के प्रतियोगिता) M.B. C/T.V. द्वारा होइल। जेकर में हम जूरी (Jury) के एगो सदस्य रहनी। तीन सौ आवेदन मिलल रहल। ऊ में से नब्बे गो चुननी जा। नौ-नौ गो के दस गो ग्रुप बनयनीं जा। दस गो प्रथम चरण (Preliminary) रहल। ऊ में से चौबिस गो चुननी जा। जेके दूगो अर्ध चरण (Semi-final) में औरू बारह गो के अंतिम चरण (Final) खातिर चुननी जा। फाइनल में पहला गायक के Rs. 75,000/- (पचहत्तर हजार), दूसरा गायक के Rs. 50,000/- (पचास हजार), औरू तीसरा गायक के Rs. 25,000/- (पच्चीस हजार) फिर बाकी ९ गो के दस-दस हजार नगद पुरस्कार देवल गइल। मौरिशस में भोजपुरी के अनेक गायक लोग बा। अनेक कैसेट निकलले हवन जा।

तिलक, शादी, हरदी, पूजा आदि सब संस्कार, उत्सव में अनेक प्रकार के भोजपुरी गीत चलेला। हीयां तक कि ओझा औरू डाइन लोग भी भोजपुरी में गीत गाके देवता, पीत्तर के बोलावेलन जा।

भोजपुरी के "हीरा मोती" पुस्तक माला के देखे व पढ़े के इच्छा होय त हमनी के भाई श्री रामनाथ जीता के लिखीं।

'भोजपुरी माटी' पत्रिका के बहुत प्रति अपन कालेज के विद्यार्थी/विद्यार्थिनी खातिर सकिहन लेवे। उहवां लगभग 3000 (तीन हजार) से जस्ती लयका Form I से VI तक में पढ़ेलन जा। अध्यापकवे त लगभग दू सौ हवन जा उनकरे प्रोत्साहन से हम ई पुस्तकवन लिखले हैंय औरू हमनी के भाई जीता जी अपन कालेज में भोजपुरी के पठन पाठन करावत हवन। उनकर कालेज में संस्कृत, हिन्दी, हिन्दुत्व के अलावा भोजपुरी के पढ़ाई होवेला।

भोजपुरी भाइयन के स्थिति अच्छी बा मगर इनकर लयका लोग यानी नया पीढ़ी के लोग अधिक चमक दमक के कारण भोजपुरी तनी कमती जाने लगल हवन जा। ऊ लोग के चाहीं भोजपुरी के ओर झुकावे के। मोरिशस में कुछ भोजपुरी के लेखक बा मगर उ लोग एकाध गो छोटा मोटा रचना करले हवन जा या एकाध गो कविता लिखले हवन जा या गायक लोग खातिर गीत तैयार करले हवन जा। एगो राष्ट्रकवि और लेखक श्री बजेन्द्र कुमार भगत रहलन त उनकर भी गत साल देहान्त हो गइल। महात्मा गांधी संस्थान और सरिता बुद्धु के द्वारा भोजपुरी के काम होवेला। Ministery of Art & Culture के ओर से "भोजपुरी नाटक प्रतियोगता" हर साल होवत बा।

हम बहुत जल्दीए एगो पुस्तक निकाले के हैंय शीर्षक हऽ "भोजपुरी के महासागर"। एकरे में भोजपुरी के बहुत खोजपूर्ण चीज रही। ई एगो भोजपुरी के महासागरवे रही। हम हमेशा पत्रिका खातिर कोई न कोई लेख खीसा, कहावत, बुझौवल, गीत आदि भेजत रहब। मंगल कामना के साथ।

– Deputy Head Teacher
Caroline, Bel-Air, Mauritius

व्यंग्य

मेहरारू के बात

❑ परमानन्द गोस्वामी

ए मुन्ना के पापा सुनऽ हम आजुओ पिक्चर जाइब।
देर होई त मत घबरइहऽ, लेट-सेट कुछु आइब।।

सखी अइहें, जब चलि जइहें, दूगो थाली धरिहऽ।
कुछु रसगुल्ला ले-ले आइब, जियरा खूब जुड़इहऽ।।

मुन्ना रोइहें त दूध पियइहऽ, तू मारे-डांटे मत लगिहऽ।
गोदी लेके खूब घुमइहऽ, उनुका के खुश रखिहऽ।।

खाली बरतन जे मिलि जाई, ओमें पानी भरिहऽ।
भींजल कपड़ा जे पा जइहऽ, ओके खूब कचरिहऽ।।

छोटका घर में आटा बाटे, रोटी छोट पकइहऽ।
आलू-परवर के तरकारी, खूबे तींत बनइहऽ।।

भोरहीं हम त ऑफिस जाइब, घर-आँगन तू करिहऽ।
धीरे-धीरे सब कुछु करिह, थाकि-थाकि मत मरिहऽ।।

शायद एगो सखियो आवसु, कुछु हलुआ भी करिहऽ।
उनुका स्वागत में तनिको तू कोर-कसर मत रखिहऽ।।

मउगी करी खूबे मनमानी, मरदा मउगा बाटे।
'परमानन्द' कबो ना सुधरी जे कि बिगड़ल बाटे।।

– डुमरेजिन रोड, डुमराँव (बक्सर)

भास्कर लोक रामायण के लोकार्पण

अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन के तत्वावधान में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के महामंत्री अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन के बिहार इकाई के उपाध्यक्ष भगवान सिंह 'भास्कर' के 17 वीं पुस्तक 'भास्कर लोक रामायण' के लोकार्पण दि. 6-2-05 के भारतीय व्यापार प्रबंधन संस्थान पटना के सभागार में आयोजित भइल। समारोह के अध्यक्षता संस्था के बिहार इकाई के अध्यक्ष नृपेन्द्र नाथ गुप्त जी कइलीं आ संचालन संयुक्त महामंत्री डा. नरेश पाण्डेय चकोर। भारतीय प्रशासनिक सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी डा. राम उपदेश सिंह 'विदेह' एह आयोजन के विशिष्ट अतिथि रहलीं। प्रारम्भ में दीप जला के समारोह के उद्घाटन कइल गइल। राजकुमार प्रेमी मंगलाचरण प्रस्तुत कइले। संचालक डा. नरेश पाण्डेय चकोर अतिथि लोग के स्वागत करत लोक रामायण के संक्षिप्त परिचय दीहलीं।

मुख्य अतिथि राम उपदेश सिंह 'विदेह' पुस्तक के विमोचन करत लोक रामायण के भूरि-भूरि प्रशंसा कइलीं। हिन्दी के प्रख्यात समीक्षक डा. शिववंश पाण्डेय समीक्षात्मक आलेख पाठ कइलीं। उहां के 'भास्कर लोक रामायण' के अनमोल शोध ग्रंथ बतवली आ कहलीं कि भास्कर जी के एह ग्रंथ खातिर उच्च के उच्चतर शोधोपधि दीहल जा सकता। सिन्हा लाइब्रेरी के पुस्तकालाध्यक्ष डा. राम शोभित प्र. सिंह एह पुस्तक के गीतन के नाट्य प्रस्तुति पर जोर दीहलीं। उहां के कहलीं कि एह पुस्तक के प्रचार जन-जन तक होखे के चाही। पत्रकार हृदय नारायण झा लोक रामायण के गीतन के मैथिली आ भोजपुरी में सस्वर पाठ करिके दर्शक लोग के भरपूर मनोरंजन कइले। अनेक वक्ता लोग रामायण के मंगलाचरण में राष्ट्रीयता आ सर्वधर्म समभाव के भास्कर जी के उत्तम विचार–

जाति धर्म का भेद भुला, हम भारत का उत्थान करें।
नित पावन तेरा नाम जपें, सब धर्मों का सम्मान करें।।

खातिर उहां के हार्दिक अभिनन्दन कइल एकरा अलावा आपन-आपन विचार व्यक्त करेवाला लोगन में डा. सच्चिदानंद सिंह 'साथी', सिद्धेश्वर जी, बलभद्र कल्याण, डा. मिथिलेश कुमारी मिश्रा, योगेन्द्र प्रसाद मिश्र, चौधरी कन्हैया प्र. सिंह आदि प्रमुख रहे लोग। पुस्तक के लेखक भगवान सिंह 'भास्कर' जी अपना भाषण में कहलीं कि एह पुस्तक के माध्यम से हम भगवान राम के आदर्श जन-जन तक पहुंचावे के भरपूर प्रयास कइले बानीं। अन्त में संस्था के सचिव विपिन विप्लवी जी धन्यवाद ज्ञापन कइलीं।

साहित्य साधना संस्थान, दिघार, बलिया

दिनांक 3-4-05 रात्रि 8 बजे से साहित्य साधना संस्थान, दिघार, बलिया, उत्तर प्रदेश के वार्षिक समारोह डा. रघुवंश मणी पाठक के अध्यक्षता आ डा. शत्रुघन पांडेय के संचालन में भइल। उक्त अवसर पर श्री ईश्वर शरण श्रीवास्तव 'निर्मोही', चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, शुभ चिंतक 'कलंकी', सुरेन्द्र सुमन, हरिवंश पाठक गुमनाम आ कुमार निर्मलेन्दु के सम्मानित कइल गइल। कवि सम्मेलन आ मुसायरा में भोजपुरी में कविता पाठ करे वालन कवियन के संख्या तीन चौथाइयो से अधिका रहे। जवना में हीरा, रसराज, कलंकी, आरोही, निर्मोही, सुरेन्द्र सुमन, उमा कांत शास्त्री, कन्हैया पाण्डेय, रामभरोसे, शम्भू उपाध्याय, प्रीतम, भगवती प्रसाद द्विवेदी आदि बिहार आ उत्तर प्रदेश के कवि रहन। संस्थान के निदेशक दयानन्द मिश्र नंदन, जे भोजपुरी–हिन्दी के साहित्यकार हईं, के आवास पर भोजन के व्यवस्था भइल रहे।

– चौ.क. प्र. सिंह
– नोनार भाया पीरो
भोजपुर–802207

तनी हँसलीं

❖ एक जने अपने शादी के एक सप्ताह बाद ड्राइंगरूम में बइठ के बटन टांकत रहलन। तबै उनकर एक साथी उहां पहुंचलन। ऊ अपने साथी से कहलन– 'अरे भइया, शादी के बादो अपने कमीज के बटन खुदे लगा रहल बाड़ऽ?'

शादीशुदा साथी झेंपत कहलन– 'भइया, ई हमार कमीज ना हऽ, ई हमरे मेहरारू क ब्लाउज हऽ।'

❖ एगो पड़ोसिन अपना बगल के पड़ोसिन से पूछलसि– 'मालूम पड़त बा कि तोहरे मरद के तबियत खराब बाटे एही से तूं रात भर जागेलू अउर तोहार चेहरा सुस्त लउकत बाटे।'

बगल के पड़ोसिन कहली– 'नाहीं बहिन, इनकर तबियत खराब रहले के कारण हम नाहीं जागिले। ई जवन नर्स उनका सेवा खातिर रखाइल बा ओकरा खातिर हम जागिले।'

❖ सबेरे उठते ही शिप्रा एक्सप्रेस से जात एगो रेल यात्री टिकट चेकर से झगड़ा करे लगल– 'हम तोहसे कहले रहलीं कि अगर हम रात के ३ बजे ना जाग पायीं त तूं हमके विस्तरा समेत उठाके मुगलसराय स्टेशन पर फेक दीहऽ। हम कहले रहलीं कि जगलो पर हमार आंख नहीं खुलेले अउर हमके मुगलसराय स्टेशन पर उतरे के हऽ।'

बगल में खाड़ एगो दूसर यात्री टिकट चेकर से पूछलस– 'का बात बाटे टी.टी. बाबू, ई कबे से आपके डांटते जात बाड़न अउर आप चुपचाप लगवले हईं?'

टिकट चेकर बाबू कहलन– 'ई त खाली डांटिए रहल बाड़न, मगर ओह यात्री के का होई जेके हम इनका बदले उठाय के मुगल सराय स्टेशन पर विस्तरा समेत फेंक देहलीं।'

❖ 'हमार पति देव हमार बहुत कहना मानेलन। कबो बहस तक नाहीं करेलन।'

'लेकिन काल्हुए त तोहार मरद जोर जोर से चिचियात रहन कि तोहार ई बात हमके अच्छा नाहीं लगेले।'

'हँ, बात अइसन हऽ कि हम उनसे कहत रहली हऽ कि रहे दऽ, आज हम बरतन मांज लेब।'

❖ राशन के लाइन में एगो मोट मेहरारू के आगे एगो दुबर-पातर आदिमी खड़ा रहे, जवन बार बार पीछे खाड़ मोट मेहरारू से बोलत जात रहे– 'बहिनजी, धक्का मत देईं, बहिन जी, धक्का मत देईं।'

चार पांच बार सुनले के बाद मोट मेहरारू से जब नाहीं रह गयल त ऊ झल्लाइल– 'का सांसो लेहल गुनाह हऽ?'

❖ जज (मुजरिम से)– 'तोहार वकील कहवां बाड़न?'

मुजरिम (हाथ जोड़ के)– 'हजुर, हम बहुत गरीब आदमी हईं, वकील ना रख सकिले।'

जज (मुजरिम से)– 'देखऽ! इजलास के बाहर ढेर वकील होइहन, जवन पांच पांच रुपया में पेश हो जइहन।'

मुजरिम बाहर जाके थोड़के देर में वापस आके जज से कहलस– 'हजुर, बाहर वाले वकील कहत बाड़न कि पांच पांच रुपया में पेश होवे वाला कुल्ह वकील जज बन गइल बाड़न।'

❖ एगो कंजूस सेठ के लइका के शादी रहल। शादी के कुछे दिन पहिले बैंड बाजा वाले के दुकान पर गइलन अउर मैनेजर से कहलन– 'भइया! हमरे लइका क शादी ह। एह खातिर हमें बैंड बाजा के जरूरत बाटे।'

मैनेजर– 'सेठ जी ठहरीं। हम अंदर से एगो एलबम ले के आवत हईं।' अन्दर से आके सेठजी के एलबम दिखा के मैनेजर कहलस– 'अगर एह ड्रेस में आइब, त तीन सौ रुपया लेब।' (दोसर फोटो देखा के) 'एह ड्रेस में आइब, त डेढ़ सौ रुपया लेब। त बताईं कवन सा ड्रेस पहिन के आइब?'

कंजूस सेठ कहलन– 'भइया, ल ई पचास रुपया अउर पन्द्रह तारीख के जांघिया पहिन के अइहऽ।'

गइल भंइसिया पानी में...

❑ आलोक मिश्र 'कपूत'

रेल गाड़ी के दुर्घटना में,
केतना जान गवांए लोग।
महटियाय के बइठे नेता,
अइसन देश के बा दुर्योग।
लोगन के जान के कदर नाही बा,
नेतन के नादानी में।
गइल भंइसिया पानी में... ।।

सौरभ के त दिने खराब बा,
गरदन पे लटकल तलवार।
केतनो जोर लगवले पर ऊ,
आऊट होवत बार-बार।
छः गो मैच के बैन लगल बा,
ओभर से छेड़खानी में।
गइल भंइसिया पानी में... ।।

चारो ओर बेचैनी बढ़ल बा,
गरमी से बा हाल बेहाल।
बड़े लोग घूमत एसी में,
रोवत-बिलखत बा कंगाल।
जलन अउर तपन भरल बा,
गरमी के कहानी में।
गइल भंइसिया पानी में... ।।

जनता बइठल भूखे पेट,
नेता खाए भर भर पेट।
पुलिस बइठल गोड़ पसार,
चोर बदमाश करें अनेत।
देश पड़ल बा गड़हा में,
कपूत के जुबानी में।
गइल भंइसिया पानी में... ।।

विज्ञप्ति

पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद

24 सी, रवीन्द्र सरणी, कोलकाता- 700 073

सम्पर्क-सूत्र

विवाह सामाजिक-पारिवारिक बंधन है। प्रत्येक परिवार चाहता है कि पारिवारिक संबंध के लिए अच्छा परिवार मिले तथा लड़कों एवं लड़कियों के लिए अच्छा जीवन साथी मिले। जिसके लिए अभिभावक चिन्तित रहते हैं। लड़कियों के अभिभावक तो लड़कों के लिए पूछते रहते हैं, परन्तु सामाजिक स्वाभिमान को लेकर लड़कों के अभिभावक लड़कियों के लिए नहीं पूछते। ऐसे में देखा जाता है कि सम्पर्क एवं जानकारी के अभाव में लड़के एवं लड़कियों को अच्छे जीवन साथी नहीं मिलते तथा परिवार के लोगों को अच्छे सम्बन्ध नहीं मिलते। ऐसी स्थिति में परिषद ने सम्पर्क सूत्र विभाग बनाया है। जो एक-दूसरे से सम्पर्क कराने एवं जानकारी देने में सहयोग करेगा।

अत: अभिभावकों से अनुरोध है कि विवाह योग्य अपने लड़कों एवं लड़कियों का बायोडाटा परिवार के परिचय के साथ परिषद कार्यालय में लड़के एवं लड़कियों के फोटो के साथ भेजने की कृपा करें। समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों से अनुरोध है कि लड़के एवं लड़कियों का **वैवाहिक विज्ञापन** 'भोजपुरी माटी' पत्रिका में आप नि:शुल्क कर सकते हैं। परिषद अपेक्षा अनुसार लड़के-लड़की की योग्यतानुसार एक-दूसरे से सम्पर्क कराने का प्रयास करेगी।

धन्यवाद!

निवेदक
शिव कुमार मिश्र
मंत्री

दीवाने जौहर बनाम रंग महल

(भोजपुरी गजलन के पहिला दीवान)

मूल्य – १७५ रु.
प्रकाशक – विश्व भोजपुरी सम्मेलन, नई दिल्ली
प्राप्ति स्थान –
१. विश्व भोजपुरी सम्मेलन
२१ए, केनींग लेन, नई दिल्ली
२. डॉ. जौहर शफियावादी
मेंहदी हसन रोड, ब्रह्मपुरा
मुजफ्फरपुर (बिहार)

१. "डॉ. जौहर शफियावादी का गजल में गालिब के रंगदारी, तहदारी आ सलीप मिलेला। इहांके भोजपुरी गजल पर गालिब के पकड़ बा।"

– (भोजपुरी के हस्ताक्षर गजलकार) प्रो. सतीश्वर सहाय 'सतीश' एल. एस. कालेज मुजफ्फरपुर।

२. "जौहर जी आपकी गजलों में जो साहित्यिक एवं वैचारिक ऊचाइयां हैं उनके कारण मैंने कई बार आपकी गजलों को खूब सोचसमझकर पढ़ा है। निश्चित रूप से भोजपुरी गजल साहित्य को आपने सांकेतिक एवं प्रतीकात्मक शैली से अवगत कराकर एक नई दिशा प्रदान की है। जिसके कारण यदि आपको बधाइयों के साथ मैं भोजपुरी का महानतम गजलकार कहूं तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है।"

(हिन्दी-भोजपुरी के प्रख्यात लेखक साहित्यकार) – डा. विवेकी राय, बड़ीबाग, गाजीपुर।

३. जौहरजी भोजपुरी गजल में वैचारिक ऊर्जा आ सांकेतिक श्रृंगार रचावे-बसावे के कला राउरे हिस्सा बा। रउवा गजल के ई शेर हमार करेज काढ़ लेलस – *देके संतोख हमरा के रो देलें ऊ, बारे कबहूं के ऊहो निशाना भइल।*

(–भोजपुरी के वरिष्ठ गीतकार गजलकार) – मोती बी.ए., बरहज, देवरिया

४. सूफी संत मौलाना डॉ. जौहर शफियाबादी एगो विचित्र प्राणी के नांव ह। जे हिन्दु-मुसलमान से ऊपर इन्सान बनके आह्वान का संगे जिनगी में सधुक्कड़ी आ फकीरी के मजा ले रहल बा। इहां के एगो भोजपुरी गजलकार के रूप में ना कई आयाम से जानल-परखल जा सकत बा। भोजपुरी गजल जौहर जी तक आवत आवत अपना पराकाष्ठा पर पहुंच गइल बा। सांचो, कवनो भाषा के गजल से भोजपुरी गजल कवनो माने में पीछे नइखे, जौहर जी के ई दावा गलत नइखे। गजल के मार्मिकता आ ठेठ भोजपुरी शब्दन के कलात्मक प्रयोग का संघे वैचारिक ऊर्जा पहिला बेर कंगना, पछुआ आ चुम्मा चाटी से ऊपर उठके इहां के गजलन में जीवन का रूप में मणिकांचन बन के जगमगा रहल बा।

(अ.भा.भो.साहित्य सम्मेलन क पूर्व महासचिव एवं भोजपुरी गजल के हस्ताक्षर)– डॉ. ब्रजभूषण मिश्र, कांटीथर्मल, मुजफ्फरपुर

५. मौलाना जौहर शफियाबादी के गजलों को पढ़कर मेरे मन का यह शुबहा निकल गया कि ऊर्दू के अलावा दूसरी जबानों में गजल अपनी पूरी ताबानाकियों के साथ नहीं हो सकती लेकिन मौलाना ने भोजपुरी जबान में जो फनी और फिकरी सच्चाइयों के साथ गजल के फन को पेश किया है, वह जदीद और कदीम दोनों रंग के साथ अपने कमाल को दावते नजारा दे रही है। यूं तो मैंने और लोगों के गजलों को पढ़ा था जिनकी वजह से इस सिलसिले में मेरा ख्याल कुछ और ही था मगर अब मैं भोजपुरी गजल का कायल हूं।

(– उर्दू के प्रख्यात समीक्षक) – डॉ. अब्दुल वासे, पूर्व ऊर्दू विभागाध्यक्ष, बिहार विश्वविद्यालय

बुद्ध-पूर्णिमा

बुद्धं शरणं गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि।

सखि! वे मुझसे कहकर जाते
तो क्या अपनी भवबाधा ही पाते?

– मैथिली शरण गुप्त

Postal Regn. No.
SSRM/KOL RMS/WB/RNP-004/2003-05
SSRM/KOL RMS/WB/RNP-004/FGN-25/2004-06

भोजपुरी माटी, मई - 2005

Regn. No. 2729/77

चारो ओर बेचैनी बढ़ल बा,
गरमी से बा हाल बेहाल।
बड़े लोग घूमत एसी में,
रोवत-बिलखत बा कंगाल।
जलन अउर तपन भरल बा,
गरमी के कहानी में।
गईल भइसिया पानी में...।।

- आलोक मिश्र 'कपूत'

प्रकाशक: परिषद बंग भोजपुरी परिषद्, 24सी, रवीन्द्र सरणी, कोलकाता-700 073, e-mail: bhojpurimati@sify.com, bhojpurimati@epatra.com
मुद्रक: मिश्रा आर्ट प्रेस, 24सी, रवीन्द्र सरणी, कोलकाता-700 073, (फो) (033) 2225 1801 (मो) 09339747126